फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 75 संख्याः 161 प्रभात जयपुर, शनिवार 11 जनवरी, 2025 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.75 रु.

ARBiT

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

epaper.rashtradoot.com

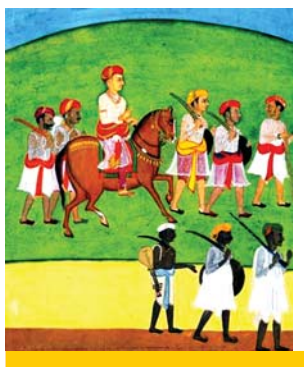

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

"Ere we came back from Paniput..."

The battle is considered to have been one of the largest and most eventful, fought in the 18th century, and it had, perhaps, the largest number of fatalities in a single day reported in a classic formation battle between two armies.

Humans will soon be able to Mine on the Moon. But should we?

वेणुगोपाल हरियाणा में नई जाट ''लीडरशिप'' पनपाना चाहते हैं

भूपेन्द्र सिंह हुड्डा की जगह रणदीप सिंह सुरजेवाला को प्रदेशाध्यक्ष नियुक्त कर, इस पीढ़ी परिवर्तन की शुरुआत करना चाहते हैं

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 जनवरी। हरियाणा कांग्रेस टकराव की ओर बढ़ रही है। पुराने जाट नेतृत्व की जगह नया नेतृत्व लाने की लड़ाई शुरु हो गई है। राज्य में हाल ही में हुये विधानसभा चुनावों में जीतकर आये 37 विधायकों में से 30 विधायक हरियाणा के सी.एल.पी. नेता भूपिन्दर सिंह हूडा के नियंत्रण में हैं। इसके साथ ही, पार्टी के 5 निर्वाचित लोकसभा सांसदों में से 4 सांसद हूडा के साथ हैं। इनमें हूडा के पुत्र दीपेन्द्र सिंह हूडा भी शामिल हैं।

समझा जाता है कि के.सी. वेणुगोपाल नये जाट नेता रणदीप सिंह सुरजेवाला को पी.सी.सी. अध्यक्ष बनाना चाह रहे हैं। इसका अर्थ यह होगा कि सी.एल.पी. नेता का पद किसी गैर-जाट नेता को मिलेगा।

इस बदलाव के पीछे वेणुगोपाल के दो उद्देश्य हैं। पहली बात तो यह है कि वे हरियाणा में नया नेतृत्व चाहते हैं तथा

- स्वाभाविक ही है, भूपेन्द्र सिंह हुड्डा, इस पीढ़ी परिवर्तन के खिलाफ हैं और कांग्रेस के 37 विधायकों में से तीस पर हुड्डा का नियंत्रण है और यह ही स्थिति लोकसभा सदस्यों की है। हरियाणा के पाँच सांसदों में से चार हुड्डा कैम्प के हैं और इस कारण वेणुगोपाल की पीढ़ी परिवर्तन की योजना आसानी से क्रियान्वित होती नज़र नहीं आ रही है।
- पर, वेणुगोपाल भी हार नहीं मान रहे हैं तथा सुरजेवाला को हरियाणा का प्रदेशाध्यक्ष बनाने के प्रयास उन्होंने छोड़े नहीं हैं।
- पीढ़ी परिवर्तन के अलावा वे सुरजेवाला को कर्नाटक से हरियाणा इसलिए भी लाना चाहते हैं कि कर्नाटक एक धनाढ्य प्रदेश है, सुरजेवाला को वहाँ से हटाकर, वे अपने आदमी को कर्नाटक में प्रभारी नियुक्त करना चाहते हैं। जैसा कि विदित ही है, सुरजेवाला कर्नाटक के प्रभारी हैं।
- हुड्डा ने भी परोक्ष रूप से धमकी दे रखी है कि उन पर ज्यादा दबाव डाला गया, हरियाणा का प्रदेशाध्यक्ष का पद छोड़ने के लिये, तो वे पार्टी में विभाजन करा देंगे।

दूसरी और ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह है कि वे उन्हें कर्नाटक से हटाना चाहते हैं, जो देश के सर्वाधिक सम्पन्न राज्यों में से एक है तथा उस पद पर वे अपने किसी खास व्यक्ति को लाना चाहते हैं।

सुरजेवाला ए.आई.सी.सी. महासचिव तथा कर्नाटक प्रभारी हैं।

हूडा, परिवर्तन की इस माँग पर विचार करने के राजी नहीं हैं।

सूत्रों का कहना है कि हूडा ने यह संकेत दे दिया है कि अगर उन पर ज्यादा दबाव डाला गया तो वे पार्टी तोड़ने पर विचार करेंगे। यही कारण है कि विधानसभा चुनावों के बाद, कांग्रेस हरियाणा में पार्टी पदाधिकारी तथा पी.सी.सी. अध्यक्ष नियुक्त नहीं कर पाई है। ज्ञातव्य है कि कांग्रेस विधानसभा चुनावों में भाजपा से हार गई थी।

पुणे कोर्ट ने राहुल गांधी को मानहानि केस में जमानत दी

पुणे, 10 जनवरी। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी के को बड़ी राहत मिली है। पुणे की विशेष अदालत ने वीर सावरकर पर दिए गए बयान के मामले में उन्हें जमानत दे दी है। राहुल गांधी पुणे की विशेष अदालत में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए पेश हुए थे। वीर सावरकर के ग्रैंड

- राहुल गांधी ने, ब्रिटेन में सावरकर के हिंदुत्व पर जो बयान दिया था उस पर सावरकर के पोते ने उन पर मानहानि का केस लगाया था।

नेफ्यू ने साल 2023 में राहुल गांधी के खिलाफ सावरकर पर दिए एक बयान को लेकर मामला दर्ज कराया था। राहुल गांधी ने ब्रिटेन में वीर सावरकर के हिंदुत्व को लेकर एक बयान दिया था। इस बयान में, उन्होने सावरकर के हिंदुत्व पर टिप्पणी की थी और कहा था कि के बारे में सावरकर ने किताब में भी लिखा है। लेकिन सावरकर के परिवार के मुताबिक, जो बात राहुल गांधी ने कही थी, गलत थी। इसके बाद सावरकर के ग्रैंड नेफ्यू सात्यकि सावरकर ने पुणे की एक

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

केजरीवाल के खिलाफ दिल्ली भाजपा ने विरोध प्रदर्शन किया

भाजपा का कहना है कि केजरीवाल ने भाजपा पर फर्जी वोटर लाने का झूठा आरोप लगाया है

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 जनवरी। भाजपा की दिल्ली इकाई ने आज आम आदमी पार्टी (आप) के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया और आरोप लगाया कि वह विधानसभा चुनावों से पहले कथित रूप से उत्तर प्रदेश और बिहार के मतदाताओं के रजिस्ट्रेशन से संबंधित झूठे दावे कर रही है।

विरोध प्रदर्शन करने वाले सैकड़ों लोग आप प्रमुख केजरीवाल के खिलाफ नारों वाली तख्तियाँ लिये हुये थे। इनमें से कुछ लोग केजरीवाल के आवास के पास सुरक्षा बैरिकेडिंग का अतिक्रमण करने की कोशिश करते हुये दिखाई दिये।

प्रदर्शनकारियों को सुरक्षा व्यवस्था का अतिक्रमण करने से रोकने के लिये पुलिस ने वॉटर कैनन का प्रयोग किया।

- प्रदर्शनकारियों ने केजरीवाल के आवास के पास लगे बैरिकेड्स तोड़ने की भी कोशिश की, पुलिस ने वॉटर कैनन से उन्हें रोका।
- केजरीवाल ने चुनाव आयोग के समक्ष शिकायत दर्ज की है कि 15 दिसम्बर से 8 जनवरी के बीच तेरह हजार नए वोटर जुड़े हैं। भाजपा यू.पी. और बिहार से लोगों को लाकर फर्जी तरीके से वोटर लिस्ट में नाम जुड़वा रही है।

चुनाव आयोग को की गई विधिवत् शिकायत में, केजरीवाल ने 15 दिसम्बर से 8 जनवरी के बीच 13,000 नये मतदाता के आवेदनों को लेकर चिंता व्यक्त की है।

चुनाव आयोग में शिकायत करने के बाद, मीडिया को संबोधित करते हुये, केजरीवाल ने कहा, ''इनमें से बहुत सारे वोटर उत्तर प्रदेश, बिहार तथा अन्य पड़ोसी राज्यों से लाये गये हैं, ताकि नकली वोटर रजिस्ट्रेशन किये जायें। यह गड़बड़ी चुनाव प्रक्रिया को क्षति पहुँचाने वाली है। 70 सदस्यों वाली दिल्ली विधानसभा के लिये चुनाव 5 फरवरी को होगा तथा 8 फरवरी को मतगणना के बाद, परिणामों की घोषणा की जायेगी।

'गलतियां होती हैं, मैं इंसान हूं, भगवान नहीं'

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने पहले पॉडकास्ट इन्टरव्यू में गुजरात कार्यकाल को याद करते हुए कहा

नयी दिल्ली, 10 जनवरी। गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में अपने कार्यकाल को याद करते हुये प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को कहा, गलतियां होती हैं, मैं इंसान हूं, भगवान नहीं। मोदी ने अपने पहले पॉडकास्ट में प्रधानमंत्री के रूप में अपने अलग-अलग कार्यकाल के बारे में पूछे जाने पर, जीरोधा के सह-संस्थापक निखिल कामत के साथ एक पॉडकास्ट में कहा, गलतियां होती हैं, मैं इंसान हूं, भगवान नहीं।

उन्होंने कहा, पहले कार्यकाल में, लोग मुझे समझने की कोशिश कर रहे थे और मैं दिल्ली को समझने की कोशिश कर रहा था। दूसरे कार्यकाल में, मैं अतीत के दृष्टिकोण से सोचता था। तीसरे कार्यकाल में, मेरी सोच बदल गयी है, मेरा मनोबल ऊंचा है और मेरे सपने बड़े हो गये हैं।

प्रधानमंत्री ने आज यह टिप्पणी कामथ की पॉडकास्ट श्रृंखला 'पीपल बाय डब्ल्यूटीएफ' में अतिथि के रूप में उपस्थित होने के दौरान की। जब उनसे

- प्रधानमंत्री ने जीरोधा के संस्थापक निखिल कामथ के साथ हुई बातचीत में अपने लम्बे राजनीतिक जीवन के अनुभव को भी साझा किया।
- प्रधानमंत्री ने युवाओं से राजनीति में आने की अपील की और कहा कि वे इस मिशन के तौर पर लें।

गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में उनके पुराने भाषणों के बारे में पूछा गया, तो प्रधानमंत्री ने जवाब दिया, मैंने कुछ असंवेदनशील तरीके से कहा था। गलतियां होती हैं। मैं इंसान हूं, भगवान नहीं।

पॉडकास्ट में मोदी ने युवा लोगों के राजनीति में आने की वकालत की, इस बात पर जोर दिया कि उन्हें महत्वाकांक्षा के साथ नहीं, बल्कि एक मिशन के साथ राजनीति में आना चाहिये।

उन्होंने जोर देकर कहा कि उनका ध्यान सरकारी योजनाओं का जनता तक शत-प्रतिशत पहुंचना सुनिश्चित करने के लिये समाधान खोजने पर रहेगा। प्रधानमंत्री ने आगे कहा, मैं 2047 तक विकसित भारत के लिये सभी समस्याओं का समाधान चाहता हूं। सरकारी योजनाओं की शत-प्रतिशत डिलीवरी होनी चाहिये। यही वास्तविक सामाजिक न्याय और धर्मनिरपेक्षता है। इसके पीछे प्रेरक शक्ति एआई आकांक्षी भारत है।

सार्वजनिक जीवन की व्यापक चुनौतियों की चर्चा करते हुये मोदी ने स्वीकार किया कि असहमति हर क्षेत्र में आम है, चाहे वह परिवार हो, कार्यस्थल हो या राजनीति। उन्होंने सार्वजनिक सेवा में संवेदनशीलता के महत्व पर जोर देते हुये कहा कि सहानुभूति के बिना कोई वास्तव में दूसरों के कल्याण के लिये काम नहीं कर सकता।

सुप्रीम कोर्ट ने राजस्थानी भाषा में शिक्षा पर नोटिस जारी किये

नयी दिल्ली, 10 जनवरी। राजस्थान के प्राथमिक विद्यालयों में बच्चों को राजस्थानी भाषा में देने के मामले में शिक्षा सुप्रीम कोर्ट ने राजस्थान सरकार को नोटिस जारी किया हैं। पद्म मेहता नाम के व्यक्ति ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल की है, जिसमें मेहता ने राजस्थान हाई कोर्ट के फैसले को चुनौती दी है। याचिकाकर्ता ने कहा कि राजस्थानी भाषा राजस्थान में 4 करोड़

- अदालत में पेश याचिका में बच्चों को मातृभाषा में शिक्षा दिलवाने की माँग की है।

से अधिक लोग बोलते हैं, लेकिन प्राथमिक विद्यालयों में बच्चों को शिक्षा राजस्थानी भाषा में नहीं दी जा रही है

याचिकाकर्ता ने कहा कि बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 में यह प्रावधान है कि बच्चों को, जहां तक संभव हो, मातृभाषा में शिक्षा उपलब्ध करवाई जानी चाहिए। वहीं नई शिक्षा नीति 2020 में भी यह प्रावधान किया गया है कि बच्चों को मातृभाषा में शिक्षा दी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'ई-सिगरेट की बिक्री रोकने के लिये क्या कर रही है पुलिस?'

हाईकोर्ट ने अगली तारीख पर इन मामलों की जाँच कर रहे अधिकारी को उपस्थित रहने के आदेश दिये

जयपुर, 10 जनवरी (का.सं.)। राजस्थान हाईकोर्ट ने प्रदेश में ई-सिगरेट की ऑनलाइन बिक्री रोकने के उपायों पर असंतोष जाहिर किया है। इसके साथ ही, अदालत ने पुलिस मुख्यालय को दो सप्ताह में शपथ पत्र पेश कर बताने को कहा है कि ई-सिगरेट की बिक्री से संबंधित ऑन लाइन प्लेटफॉर्म के खिलाफ अब तक क्या कार्रवाई की गई है। चीफ जस्टिस (सी.जे.) एम.एम. श्रीवास्तव और जस्टिस उमाशंकर व्यास की खंडपीठ ने ये आदेश प्रियांशा गुप्ता की जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

याचिकाकर्ताकर्ता प्रियांशा गुप्ता ने 2022 में यह मामला दर्ज किया था, तब वे खुद लॉ के चौथे वर्ष की छात्रा थीं, अब वे अधिवक्ता हैं। उन्होंने अपनी याचिका में कहा है कि केन्द्र सरकार ने साल 2019 में कानून लाकर ई-सिगरेट के निर्माण, आयात, बेचान और वितरण पर रोक लगाई थी। इसके बावजूद, प्रदेश में ई-सिगरेट आसानी से मिल रही है। कई जगह नाबालिग खुले आम इसका

- याचिकाकर्ता प्रियांशा गुप्ता, जिसने 2022 में यह मामला दर्ज किया था और जब वो खुद वकालत पढ़ रही थीं और चौथे वर्ष की छात्रा थीं, ने कम-से-कम 13 वैबसाइटों का ब्यौरा दिया है, जहां ऑनलाइन ई-सिगरेट बिक रही हैं।
- इसके अलावा याचिकाकर्ता ने कई आर.टी.आई. लगाईं, यह जानने के लिये कि कितने लोगों को गिरफ्तार किया है, कितनी शिकायतें व एफ.आई.आर. दर्ज की हैं, कितने चालान पेश किये हैं इत्यादि। परंतु पुलिस प्रशासन ने इसका कोई भी ब्यौरा नहीं दिया और कहा कि वे इसका कोई रिकॉर्ड नहीं रखते हैं। इससे जाहिर होता है पुलिस ने कभी कोई कार्यवाही नहीं की है।

सेवन करते नजर आते हैं, जिससे साबित है कि राज्य सरकार कानून के क्रियान्वयन में फेल हो गई है। याचिका में गुहार की गई कि कानून के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए राज्य सरकार को निर्देश दिए जाएं।

याचिका में कहा गया है कि फूड सेफ्टी एंड स्टैण्डर्ड्स एक्ट-2006 के नियम कायदों के अनुसार भी, किसी भी वस्तु या खाद्य पदार्थ में तम्बाकू या निकोटिन का प्रयोग वर्जित है। पर ऑनलाइन ई- सिगरेट की बिक्री हो रही है और राज्य और पुलिस प्रशासन इसे रोकने में विफल हैं। याचिकाकर्ता का कहना है कि यह व्यापार इतना व्यवस्थित है कि गूगल पर ई-सिगरेट टाइप करते ही ऐसे कई वेबसाइट सामने आ जाती हैं, जो ऑनलाइन सिगरेट बेच रही होती हैं।

याचिकाकर्ता ने अपनी याचिका में ऐसी 13 वेबसाइटों का ब्यौरा भी दिया है, जो वर्तमान में कार्यरत हैं और ई-सिगरेट बेच रही हैं। याचिकाकर्ता का कहना है कि कई पान की दुकानों पर भी ई-सिगरेट मिलती हैं।

याचिकाकर्ता ने अपनी याचिका में यह भी बताया कि 2019 में ई-सिगरेट की बिक्री पर बैन लगने के बाद, आर.टी.आई. के तहत यह जानकारी इकट्ठी करनी चाही कि, पहला : 2019 के बाद अभी तक राजस्थान में इस मामले पर कितने मुकदमें दर्ज किये हैं, दूसरा : इस मामले पर कितनी शिकायतें और एफ.आई.आर. और कितने चालान पेश हुए हैं, तीसरा : इस अपराध जुड़े मामलों में कितने लोगों पर मामले अदालतों में चल रहे हैं, कितने लोग दोषी करार दिये जा चुके है और कितने लोग बरी कर दिये गये हैं, चौथा : 2019 के कानून को लागू करने के लिये प्रदेश में क्या नियम कायदे और नोटिफिकेशन जारी किये गये हैं। याचिकाकर्ता ने अदालत को बताया कि

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

ट्रम्प पहले अमरीकी राष्ट्रपति जिन्हें औपचारिक सजा सुनाई गई

नई दिल्ली, 10 जनवरी। अमेरिका की मैनहट्टन कोर्ट ने डोनाल्ड ट्रंप को हश मनी केस में बड़ी राहत दी है। न्यायालय ने उन्हें बिना शर्त छोड़ दिया। दोषी होने के बाद भी, डोनाल्ड ट्रंप जेल और जुर्माना दोनों से बच गए।

नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप

- पॉर्न स्टार को चुप कराने के लिए पैसे देने के मामले में अदालत ने ट्रम्प को दोषी माना, किन्तु कोई सजा नहीं दी और बिना शर्त रिहा कर दिया।

को हश मनी मामले में शुक्रवार को औपचारिक रूप से सजा सुनाई गई, हालांकि न्यायाधीश ने कोई भी सजा देने से इनकार कर दिया। इसकी वजह से ट्रंप अब जेल की सजा या जुर्माने के डर से

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अश्विन अब अपना क्रिकेटिंग करियर खत्म होने पर, तमिलनाडु की राजनीतिक पिच पर ''बोलिंग'' करेंगे?

चेन्नई में एक जाने-माने प्राइवेट कॉलेज के दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए ''हिन्दी भाषा'' पर सारगर्भित टिप्पणी कर राजनीतिक हल्कों में तहलका मचा दिया

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 जनवरी। क्रिकेटर आर. अश्विन, जिन्होंने हाल ही में टैस्ट क्रिकेट से सन्यास की घोषणा की है, ने राजनैतिक पिच पर एक अलग ही गुगली फेंकी और हिंदी भाषा की स्थिति पर अपना निजी तथ्यात्मक ऑब्ज़र्वेशन रखा।

सवाल यह है कि क्या अश्विन राज्य में राजनैतिक भविष्य तलाश रहे हैं। शायद नहीं, क्योंकि उनके करीबी लोगों ने इससे इन्कार किया है, पर हिंदी पर उनकी अप्रत्याशित टिप्पणी ने राजनैतिक हलकों का ध्यान खींचा है।

अश्विन की इस टिप्पणी ने कई हिंदी समर्थकों को भी आकर्षित किया है, जो हिंदी को राष्ट्र भाषा मानते हैं, पर सच्चाई यह है कि भारत में कोई राष्ट्र भाषा है ही नहीं, स्वतंत्रता आंदोलन

- उन्होंने अपने भाषण से पहले श्रोताओं से पूछा, क्या आप मुझसे हिन्दी में सवाल पूछना चाहते हो?
- श्रोताओं की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं आई। पुनः अश्विन ने फिर पूछा, ''तो क्या आप मुझसे अंग्रेजी में प्रश्नों का उत्तर चाहेंगे।'' फिर भी श्रोताओं की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं आई। अश्विन ने फिर पूछा, ''क्या आप तमिल में मुझसे अपने प्रश्नों का जवाब चाहेंगे'', श्रोता, यह सुनकर झूम उठे।
- जनता का मूड भांपकर अश्विन ने तमिल में अपना भाषण दिया।
- भाषण के बाद, अश्विन ने सारगर्भित टिप्पणी की, ''हिन्दी राष्ट्रीय भाषा नहीं, केवल ऑफिशियल भाषा है, कुछ सरकारी काम करने की भाषा है।''
- जैसा कि विदित ही है, ''हिन्दी भाषा'' दक्षिण भारत में एक भारी उत्तेजना व राजनीति का मुद्दा है।
- 1960 के हिन्दी विरोधी आंदोलनों के कारण, कांग्रेस पर आरोप लगा कि कांग्रेस हिन्दी थोपने का प्रयास कर रही है, अंततोगत्वा कांग्रेस सरकार गिरी और उसके बाद आज तक तमिलनाडु में सत्ता में नहीं आ पाई है।

के दौरान भी भाषा के मुद्दे पर विवाद हुआ था। पर जो लोग हिंदी को राष्ट्र भाषा बनाना चाहते थे, उन्हें अंततः गैर हिंदी भाषी राज्यों, खासकर दक्षिणी राज्यों, के दबाव के आगे झुकना पड़ा।

क्रिकेटर अश्विन ने शुक्रवार को चेन्नई के एक प्राइवेट कॉलेज में विद्यार्थियों को संबोधित करते समय यह पूछा कि क्या कोई स्टूडेंट उनसे हिंदी में सवाल पूछना चाहता है, फिर उन्होंने यही सवाल अंग्रेजी के लिए पूछा। दोनों बार पूरे कक्ष में शांति रही, फिर उन्होंने तमिल के लिए पूछा तो सभी ने एक साथ हाँ में जवाब दिया।

अपना भाषण शुरु करने से पहले अश्विन ने जानबूझकर यह चाल खेली। उन्होंने घोषणा की कि हिंदी राष्ट्र भाषा नहीं है। हिंदी के उल्लेख पर छात्रों की प्रतिक्रिया देखकर वे बोले, मुझे लगता है कि मुझे यह कहना चाहिए कि हिंदी हमारी राष्ट्र भाषा नहीं है, यह सरकारी भाषा है। हिंदी पर अश्विन की टिप्पणी से बहस छिड़ गई है।

तमिलनाडु, जहां 60 के दशक में भाषा विवाद ने उस समय तूल पकड़ा था, जब कांग्रेस नेतृत्व वाली केन्द्र सरकार ने स्कूलों में हिंदी अनिवार्य कर दी थी, तब भारी आंदोलन शुरु हुआ

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कड़ाके की ठंड से धूजा उत्तर भारत

नई दिल्ली, 10 जनवरी। दिल्ली और एनसीआर के इलाकों में कोल्डवेव चलने से आम जनजीवन प्रभावित है। इसी बीच शुक्रवार को कोहरे की वजह से विज़िबिलिटी पर असर पड़ा। दिल्ली-एनसीआर के साथ-साथ यूपी, बिहार, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान समेत कई राज्यों में कोहरे का असर नज़र आया। मौसम विभाग के मुताबिक, शनिवार को कुछ जगहों पर हल्की बारिश के आसार

- दिल्ली एन.सी.आर. यूपी, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, भारी कोहरे से भी जूझ रहे हैं।

हैं। ऐसे में ठंड के और बढ़ ने से इनकार नहीं किया जा सकता।

कड़ाके की सर्दी में कोहरे की दोहरी मार ने लोगों की मुसीबत बढ़ा दी। दिल्ली में शुक्रवार सुबह घना कोहरा छाए रहने के कारण विजिबिलिटी शून्य हो गई, जिससे हवाई और रेल परिचालन प्रभावित हुआ। इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर 100 से अधिक उड़ानें

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

निरंतर विकास जीवन का एक नियम है। और जो भी व्यक्ति खुद को सही दिखाने के लिए अपनी रूढ़िवादिता को बरकरार रखने की कोशिश करता है वो खुद को एक गलत स्थिति में पंहुचा देता है। –महात्मा गांधी

हरित महाकुम्भ के लिए 21 लाख लोगों को एक थाली-एक थैला

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर से उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में 13 जनवरी से शुरू हो रहे महाकुंभ को गंदगी मुक्त और प्लास्टिक फ्री बनाने के लिए एक थाली-एक थैला अभियान शुरू किया है। संघ का मानना है इससे देश भर में स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण का सन्देश प्रवाहित हुआ है। यह अभिनव अभियान मां गंगा को किसी भी तरह के कचरे से बचाकर पवित्रता बनाए रखने का प्रयास है। 45 दिन के महाकुंभ में 40 करोड़ श्रद्धालुओं के शामिल होने की संभावना है। ऐसे में वहां भोजन आदि से 40 हजार टन प्लास्टिक कचरा निकलने की भी संभावना है। संघ का कहना है कि तीर्थयात्रियों के पास तक एक थाली और थैला पहुंचाया जाएगा तो महाकुंभ में कचरे को कम किया जा सकता है। एक थाली एक थैला अभियान चलाने के पीछे संघ की सोच है कि श्रद्धालुओं को डिस्पोजल बर्तनों में भोजन ना करना पड़े। महाकुंभ में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सहयोगी संस्था अखिल भारतीय पर्यावरण संरक्षण गतिविधि की तरफ से आस्था के इस मेले में एक थाली एक थैला अभियान की देशभर में सराहना की जा रही है। महाकुंभ क्षेत्र में श्रद्धालुओं और संस्थाओं को स्टील की थाली व कपड़े से बने हुए थैले बांटे जा रहे हैं। संघ से जुड़े संगठन की तरफ से पूरे मेला क्षेत्र में अभियान चला कर 21 लाख से ज्यादा थालियां और करीब इतने ही थैले बांटे जाने हैं। इनमें से अधिकांश सामग्री महाकुम्भ में पहुँच गई है। संघ 13 जनवरी को महाकुंभ का शुभारंभ होने से पूर्व विभिन्न समाजसेवी संस्थाओं, संतों-महंतों तक पर्याप्त थाली और थैले पहुंचाने के अपने प्रयास में जुटा है ताकि श्रद्धालुओं को डिस्पोजल बर्तनों में भोजन नहीं करना पड़े। इससे गंदगी नहीं फैलेगी। यह थालियां और थैले देश भर से इकट्ठे किए गए हैं। पर्यावरण संरक्षण गतिविधि ने थैले और थाली का यह अभियान इसलिए चलाया ताकि स्वच्छ और प्लास्टिक फ्री कुंभ की परिकल्पना साकार हो सके। गतिविधि से जुड़े हुए पदाधिकारियों के मुताबिक यूपी की योगी सरकार ने महाकुंभ को प्लास्टिक फ्री के तौर पर आयोजित करने का फैसला किया है। इसी के तहत महाकुंभ क्षेत्र में कपड़े के थैले बांटे जा रहे हैं। कपड़े के थैले होने पर लोग प्लास्टिक के इस्तेमाल से बचेंगे साथ ही थाली साथ होने पर लोग उसे ही धोकर इस्तेमाल करेंगे। इसका एक बड़ा लाभ यह होगा कि कचरा इधर-उधर लोग नहीं फेंकेंगे। प्रयागराज महाकुंभ में पर्यावरण संरक्षण गतिविधि कि यह मुहिम खासी चर्चा में है। लोग इस मुहिम की जमकर तारीफ कर रहे हैं और इसे सफल बनाने में अपना योगदान देने का संकल्प ले रहे हैं। एक मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक देश के विभिन्न प्रांतों से एकत्र की गईं थालियों को महाकुंभ तक लाने का दायित्व देख रहे डॉ. अमित कहते हैं कि मेले या सार्वजनिक स्थल पर ऐसा सेवाकार्य कभी नहीं हुआ। हम 21 लाख थालियां और थैले वितरित करके इस अभियान को लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज कराएंगे।

कचरा पूरी दुनिया के लिए एक वैश्विक समस्या है। भारत की बात करें तो आज घर घर में प्लास्टिक ने अपना कब्ज़ा जमा लिया है। कचरा में प्लास्टिक सबसे खतरनाक माना जाता है। प्लास्टिक कचरा से हर देश परेशान है। सरकार के लाख प्रयासों के बावजूद हमारा फ्री प्लास्टिक का सपना पूरा नहीं हो रहा है और इसका एक मात्र कारण इसका सस्ता, टिकाऊ और हल्का होना है। पॉलीथिन के उपयोग पर प्रतिबंध के बाद भी इसका असर दिखाई नहीं दे रहा है। हर जगह पॉलीथिन का उपयोग हो रहा है।

महाकुंभ 2025 को स्वच्छ और पर्यावरण के अनुकूल बनाने के लिए सरकारी और स्वैच्छिक संस्थाएं अपने अपने प्रयासों में जुटी है। पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल करते हुए संतों के सर्वोच्च संगठन अखाड़ा परिषद ने भी महाकुंभ 2025 को प्लास्टिक मुक्त बनाने का संकल्प लिया है। इस वर्ष स्नान के लिए निर्धारित प्रमुख दिनों पर महाकुंभ मेला क्षेत्र में पांच करोड़ श्रद्धालुओं एवं स्थायी रूप से 50 लाख कल्पवासियों के ठहरने का अनुमान है। प्लास्टिक मुक्त महाकुंभ की तैयारियों के साथ ही स्वच्छता के पुख्ता इंतजाम सुनिश्चित करने के लिए मेला क्षेत्र में लाखों की संख्या में टॉयलेट और डस्टबिन भी लगाए जा रहे हैं। इस महत्वाकांक्षी लक्ष्य को साधने और सफल बनाने की दिशा में विशेष कार्य योजना तैयार कर उसके दिशा-निर्देशों को सख्ती से लागू किया गया है। सभी कार्य मिशन मोड पर शुरू किए जा चुके हैं, ताकि महाकुंभ 2025 का आयोजन न केवल धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण से ऐतिहासिक हो, बल्कि वैश्विक स्तर पर स्वच्छता की दृष्टि से भी एक प्रेरक बन सके।

महाकुंभ में सिंगल यूज प्लास्टिक को बैन करने के साथ ही उसके विकल्प के रूप में दोने-पत्तल, कुल्हड़, जूट एवं कपड़े के थैले आदि जैसे प्राकृतिक उत्पाद बड़े स्तर पर तैयार किए जा रहे हैं। इस कार्य के लिए उत्तर प्रदेश के 28 जिलों सहित बिहार, मध्य प्रदेश, ओडिशा, झारखंड, छत्तीसगढ़ और उत्तराखंड की महिलाओं को जिम्मेदारी दी गई है। प्रयागराज मेला प्राधिकरण की ओर से महाकुंभ के दौरान मेला क्षेत्र में ही इन प्राकृतिक उत्पादों के स्टॉल लगाकर पूरे क्षेत्र में सप्लाई की जाएगी। प्रयागराज नगर निगम ने मेला क्षेत्र के दुकानदारों को भी प्राकृतिक उत्पादों का ही प्रयोग करने का निर्देश जारी किया गया है। सिंगल यूज प्लास्टिक के उत्पादों के प्रयोग की रोकथाम के लिए 250-250 के बैच में करीब 1800 गंगा सेवादूतों को प्रशिक्षित किया जा रहा है। ये गंगा सेवादूत महाकुंभ में स्वच्छता के साथ ही मेला क्षेत्र को प्लास्टिक मुक्त बनाने में बेहद अहम भूमिका निभाएंगे। विशेष तौर पर ये सेवादूत शौचालय, सड़कों की सफाई व्यवस्था, टेंट सिटी का निरीक्षण करेंगे और किसी तरह की गंदगी या गड़बड़ी पाए जाने पर इन्फॉर्मेशन, कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी (आईसीटी) सिस्टम के माध्यम से शिकायत दर्ज करा सकते हैं। साथ ही शहर में सभी पॉलिथीन बैग के थोक विक्रेताओं को भी पूरे शहर में पॉलिथीन की सप्लाई रोकने के निर्देश जारी किए गए हैं। इसके अलावा प्रमुख स्नान अवधि के दौरान स्थानीय उद्योग अस्थायी रूप से बंद रहेंगे, ताकि गंगा घाटों की स्वच्छता एवं पवित्रता बनी रहे और लाखों भक्तों के लिए एक स्वच्छ, सुरक्षित वातावरण तैयार हो सके।

कचरा पूरी दुनिया के लिए एक वैश्विक समस्या है। भारत की बात करें तो आज घर-घर में प्लास्टिक ने अपना कब्जा जमा लिया है। कचरा में प्लास्टिक सबसे खतरनाक माना जाता है। प्लास्टिक कचरा से हर देश परेशान है। सरकार के लाख प्रयासों के बावजूद हमारा फ्री प्लास्टिक का सपना पूरा नहीं हो रहा है और इसका एक मात्र कारण इसका सस्ता, टिकाऊ और हल्का होना है। पॉलीथिन के उपयोग पर प्रतिबंध के बाद भी इसका असर दिखाई नहीं दे रहा है। हर जगह पॉलीथिन का उपयोग हो रहा है। किराना सामान खरीदना हो या फिर सब्जी, फल हों या अन्य सामग्री, हर जगह अमानक स्तर की पॉलीथिन उपयोग की जा रही है। पर्यावरण को सबसे अधिक नुकसान प्लास्टिक कचरा से पहुंचता है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का महाकुम्भ को प्लास्टिक फ्री करने का अभियान निश्चय ही देशवासियों के समक्ष एक प्रेरणादायी उदाहरण है। देश में लाखों की संख्या में सामाजिक संस्थाएं है जिन्हें संघ से प्रेरणा लेकर देश को प्लास्टिक मुक्त बनाने के लिए मिलजुलकर प्रयास करने चाहिए।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

लोगों का दिल जीत लेते हैं देवनानी

राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी 77 वर्ष की आयु में भी निरन्तर सक्रिय रहते हैं

लगातार कार्य में व्यस्त होने के बाद भी राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष वासुदेव देवनानी के चेहरे पर कभी थकान की शिकन तक नहीं आती है बल्कि वे प्रत्येक यात्रा के बाद ऊर्जावान दिखाई देते हैं। विधानसभा अध्यक्ष निर्वाचित होने के बाद कार्य दिवसों पर यदि वे जयपुर में हैं तो विधानसभा प्रात: 10:15 बजे पहुँचेंगे और सांय 6:15 बजे ही विधानसभा के कार्यालय से अपने निवास पर लौटते हैं। अजमेर विधानसभा क्षेत्र में उनके कार्यक्रमों, समारोह, मुलाकातें, बैठकों की श्रंखला वाकई देखने लायक होती है।

उनके द्वारा प्रत्येक शनिवार व रविवार को अपने विधानसभा क्षेत्र में किये जाने वाले अपार कार्यक्रम तो शायद कोई अन्य चुनाव आने के समय भी इतने कार्यक्रम नहीं करते होंगे। गरीब, दलित, असहाय, जरूरतमंद जो भी उनके पास पहुँच जाता है, उसकी मदद वे अवश्य करते हैं। यही कारण है कि उनसे मिलकर आने वाला आमजन कभी निराश होकर नहीं लौटता है और वे बहुत जल्द ही लोगों के दिल में अपना स्थान बना लेते है। अपने सरकारी निवास पर हो या विधानसभा उनसे मिलने वालों का तांता लगा ही रहता है। लोगों की आत्मीयता से मदद करके उन्हें बहुत अच्छा लगता है। प्रात: 4 बजे से रात्रि 11 बजे तक प्रतिदिन सक्रिय रहने वाले देवनानी बताते है कि एकादशी के दिन उनका जन्म होने के कारण उनकी जन्म तिथि 11 जनवरी की गई।

11 जनवरी, 1948 को राजस्थान की हृदयस्थली अजमेर में जन्मे, 1958 से राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ एवं 1972 से अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से सक्रिय रूप से जुड़े वासुदेव देवनानी ने अपने राजनैतिक जीवन में निरन्तर पांच बार विधानसभा चुनाव जीतकर विधायक, मंत्री और विधानसभा अध्यक्ष रहकर प्रदेश की उल्लेखनीय सेवा कर रहे हैं। वर्तमान में विधानसभा अध्यक्ष के रूप में वे लोकतन्त्र के सुदृढीकरण के लिए अनेक नवाचार कर रहे हैं। पेशे से शिक्षक रहे देवनानी स्वयं अनुशासन में रहते हैं और लोगों से भी वे अनुशासन की अपेक्षा रखते है। कई बार ये समारोह में निर्धारित समय पर आयोजकों से पहले पहुंच जाते हैं।

एम.बी.एम इंजीनियरिंग कॉलेज जोधपुर से इलेक्ट्रिकल विषय में बी.ई. की उपाधि प्राप्त करने वाले देवनानी ने विद्याभवन पॉलिटेक्निक कॉलेज, उदयपुर में प्राचार्य के रूप में सेवाएं प्रदान की है और 2023 में प्रथम बार 12वी विधानसभा (2003 से 2008) में अजमेर पश्चिम से विधायक निर्वाचित हुए। उसके पश्चात 2008 से 2013, 2013 से 2018 और 2018 से 2023 और दिसम्बर, 2023 में पुन: अजमेर उत्तर से देवनानी विधायक निर्वाचित हुए हैं।

देवनानी ने मई 2004 से दिसम्बर, 2008 तक राज्य के प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा, संस्कृत शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, भाषा, भाषायी अल्पसंख्यक चिकित्सा एवं कृषि जैसे महवपूर्ण विभागों के राज्यमंत्री के रूप में उल्लेखनीय सेवाएं प्रदान की है। चौदहवी विधानसभा के कार्यकाल के दौरान पुन:

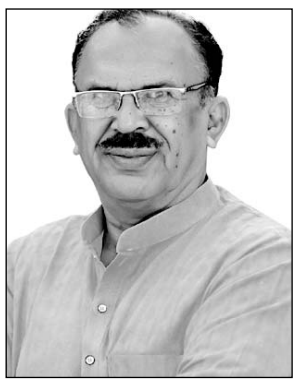

वासुदेव देवनानी

दिसम्बर, 2014 से दिसम्बर, 2018 तक प्राथमिक शिक्षा एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग के स्वतंत्र प्रभार एवं ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज के राज्यमंत्री के रूप में भी सेवाएं दी है।

तीन दशकों तक अध्यापन के क्षेत्र में सकारात्मक और सार्थक भूमिका में रहे वासुदेव देवनानी ने प्रकाशन और लेखन के क्षेत्र में भी अपनी अमिट छाप छोड़ी है। देवनानी ने अनन्य एवं अनेक पत्र-पत्रिकाओं के साथ-साथ विभिन्न समाचार पत्रों में सारगर्भित आलेख लिखे हैं। शिक्षाविद् के रूप में पहचान रखने वाले देवनानी शिक्षा क्षेत्र की विशेषताओं व खामियों से भली-भांति परीचित है। देवनानी ने शिक्षा क्षेत्र की खामियों का निदान करने के साथ-साथ शिक्षा व्यवस्था में काउन्सिलिंग द्वारा पदस्थापन शाला दर्पण अपडेशन और स्टाफिंग पैटर्न जैसे महत्वपूर्ण सुधार किए।

सुदीर्घ संसदीय अनुभव रखने वाले देवनानी विधानसभा के कार्यकाल के दौरान प्राक्कलन समिति क प्राक्कलन समिति ख, विशेषाधिकार समिति, अधीनस्थ विधान संबंधी समिति, स्थानीय निकायों और पंचायतीराज संस्थाओं संबंधी समितियों के सदस्य एवं सभापति भी रहे हैं। देवनानी ने इन समितियों के माध्यम से कार्यपालिका को विधायिका के प्रति उत्तरदायित्व बनाने के सिद्धान्त को परिपुष्ट किया है। 13वीं और 15वीं विधानसभा में प्रतिपक्ष के दायित्व का भी देवनानी ने बखूबी निर्वहन किया। क्षेत्रीय कार्य समिति, कपार्ट के सदस्य और रूरल डेवलपमेंट एवं रिकंस्ट्रक्शन एक्टिविटीज के देवनानी अध्यक्ष भी रहे।

सोलहवीं विधानसभा के गठन के उपरांत देवनानी 21 दिसम्बर, 2023 को राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष पद पर सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए है। अध्यक्ष पद पर निर्वाचन के बाद देवनानी ने विधानसभा कार्यप्रणाली के सुदृढ़ीकरण के प्रयास प्रारम्भ कर विधानसभा को पेपरलैस बनाने, नेवा प्रोजेक्ट को लागू करने, पर्ची व्यवस्था पुन: आरम्भ करने, कार्यवाही के दौरान भोजनावकाश देने का और सत्र से पूर्व सर्वदलीय बैठक जैसे नवाचार करते हुए अनेक सुधारात्मक कदम उठाये है। विधानसभा में वाट्सअप चैनल, ई-बुलेटिन सहित कई नवीन सुविधायें भी देवनानी ने शुरू की है। विधानसभा में बने डिजिटल म्यूजियम का प्रसारित करने, इसकी विषयवस्तु को और अधिक प्रासंगिक बनाने के लिये परिवर्तन एवं परिवर्धन जैसे कदम उठाने के साथ-साथ विधानसभा जनदर्शन कार्यक्रम की शुरुआत देवनानी ने की है। वर्तमान में अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारियों की कार्यकारिणी समिति के सदस्य पद पर देवनानी को लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने मनोनित किया है।

जनवरी, 2024 में मुम्बई में आयोजित 64वें अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारी सम्मेलन में देवनानी ने भाग लिया। राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष देवनानी 3 से 8 नवम्बर, 2024 तक न्यू साउथवेल्स ऑस्ट्रेलिया में 674 राष्ट्रमण्डल संसदीय सम्मेलन में राजस्थान का प्रतिनिधित्य करते हुए सम्मिलित हुए तथा पोस्ट स्टडी ट्यूयर के तहत इण्डोनेशिया, सिंगापुर और जापान की बाजारों की।

सनातन और राष्ट्र भावना से ओतप्रोत देवनानी लगभग 10 वर्ष की आयु में ही राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के स्वयं सेवक बन गये तथा वर्ष 2000 में संघ के प्रान्त प्रचार प्रमुख बने। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के प्रदेश मंत्री, प्रदेश उपाध्यक्ष एवं प्रदेश अध्यक्ष भी रहे है। समाजसेवी देवनानी राजस्थान सिंधी साहित्य समिति के अध्यक्ष, आरतीय सिंधु सभा के केन्द्रीय कार्यकारिणी के सदस्य तथा सिंधी संगीत समिति के संरक्षक एवं सिंधी भाषा विकास समिति के मुख्य संरक्षक भी रह चुके है। देवनानी को वर्ष 2003 में सर्वोत्तम पॉलिटेक्निक अवार्ड, सिंधु गौरव अवार्ड तथा सिंधु रन अवार्ड से भी सम्मानित हुए है।

–डॉ. लोकेश चन्द्र शर्मा,
उप निदेशक, राजस्थान विधानसभा, जयपुर

बोर्ड परीक्षा से पहले राज्य के पांच हजार उच्च माध्यमिक स्कूलों को प्रिंसिपल मिलने की उम्मीद

माध्यमिक शिक्षा निदेशालय ने वाइस प्रिंसिपल से प्रिंसिपल पदों की डीपीसी की तैयारी शुरू की

बीकानेर, (निसं)। 12वीं बोर्ड परीक्षा से पहले राज्य के पांच हजार उच्च माध्यमिक स्कूलों को प्रिंसिपल मिलने की उम्मीद है। माध्यमिक शिक्षा निदेशालय ने वाइस प्रिंसिपल से प्रिंसिपल पदों की डीपीसी की तैयारी शुरू कर दी है। शिक्षा निदेशालय ने प्रिंसिपल पदों पर वर्ष 2023-24 की डीपीसी के लिए 5551 वाइस प्रिंसिपल की पात्रता सूची जारी कर दी है। अब शिक्षा निदेशालय से जल्द ही डीपीसी के प्रस्ताव आरपीएससी को भिजवाए जाएंगे।

आरपीएससी से डीपीसी की तिथि निर्धारित होने के बाद पात्र वाइस प्रिंसिपल का प्राचार्य पदों पर प्रमोशन होगा। प्रमोशन के बाद चयनित प्रधानाचार्य को काउंसलिंग के जरिए स्कूलों में पोस्टिंग दी जाएगी। संभावना जताई जा रही है कि यह प्रक्रिया जनवरी, फरवरी में पूरा हो सकती है। जानकारी के अनुसार वर्तमान में राज्य के उच्च माध्यमिक स्कूलों में प्रिंसिपल के करीब सात हजार पद रिक्त चल रहे हैं। वर्ष 2023-24 की डीपीसी में करीब पांच हजार पद भरने की संभावना जताई जा रही है।

■ वर्तमान में राज्य के उच्च माध्यमिक स्कूलों में प्रिंसिपल के करीब सात हजार पद रिक्त चल रहे हैं

उधर डीपीसी में विलंब को लेकर राजस्थान शिक्षा सेवा परिषद उप प्राचार्य के पदाधिकारी संघर्षरत है। समय पर डीपीसी नहीं होने से नाराज रेसा, वीपी संगठन के पदाधिकारियों ने 13 जनवरी को शिक्षा निदेशालय पर एक दिवसीय धरने की चेतावनी दी है। वर्ष 2023-24 की डीपीसी से स्कूलों में प्रिंसिपल के 70 प्रतिशत भरने की संभावना है। प्रमोशन के बाद भी स्कूलों में 30 प्रतिशत पद खाली रहेंगे। शिक्षा विभाग में प्रिंसिपल के करीब 17900 पद स्वीकृत हैं, जिसमें से सात हजार के लगभग रिक्त चल रहे हैं। डीईओ डीपीसी की भी तैयारी शिक्षा विभाग ने डीईओ डीपीसी की भी तैयारी शुरू कर दी है। माध्यमिक शिक्षा निदेशालय की ओर से 1261 प्रिंसिपल की सूची जारी कर इनमें से एक जून 2002 को या इसके बाद दो से अधिक संतान होने वालों की सूचना ई मेल आईडी पर मांगी गई है। आदेश के अनुसार दो से अधिक संतान वालों की सूचना संकलित कर शासन को जिला शिक्षा अधिकारी तथा समकक्ष पदों पर 2023-24 व 2024-25 दो चयन वर्ष की डीपीसी के प्रस्ताव भिजवाए जाने हैं।

भीलवाड़ा में ''हरित संगम मेला'' शुरु

शहर में हजारों खिलाड़ियों ने ''खेल की रेल'' निकाली जो लोगों के आकर्षण का केंद्र रही

भीलवाड़ा, (निसं)। अपना संस्थान एवं नगर निगम, भीलवाड़ा के संयुक्त तत्वावधान में 10 जनवरी से 14 जनवरी तक स्थानीय चित्रकूट धाम अवधपुरी में आयोजित हरित संगम-2025 स्वच्छता पर्यावरण मेले का उद्घाटन शुक्रवार को वन एवं पर्यावरण मंत्री संजय शर्मा ने भगवान श्रीराम की मूर्ति पर पुष्प अर्पित कर एवं तुलसी माता को जल अर्पण कर किया। इसके बाद उन्होंने खेल की रेल को झंडी दिखाकर रवाना किया। रेल का नेतृत्व अर्जुन अवॉर्डी एवं पद्मश्री देवेंद्र झांझड़िया ने किया। इस अवसर पर जिला कलेक्टर नमित मेहता, नगर निगम महापौर राकेश पाठक, पूर्व सांसद सुभाष बहेड़िया, भाजपा जिलाध्यक्ष प्रशांत मेवाड़ा, अपना संस्थान प्रांत सचिव विनोद मेलाना, मेला संयोजक राधेश्याम सोमानी, अपना संस्थान अध्यक्ष श्यामसिंह राठौड़ सहित अनेक जनप्रतिनिधि, अधिकारी, समाजसेवी, उद्योगपति, नागरिकगण उपस्थित रहे।

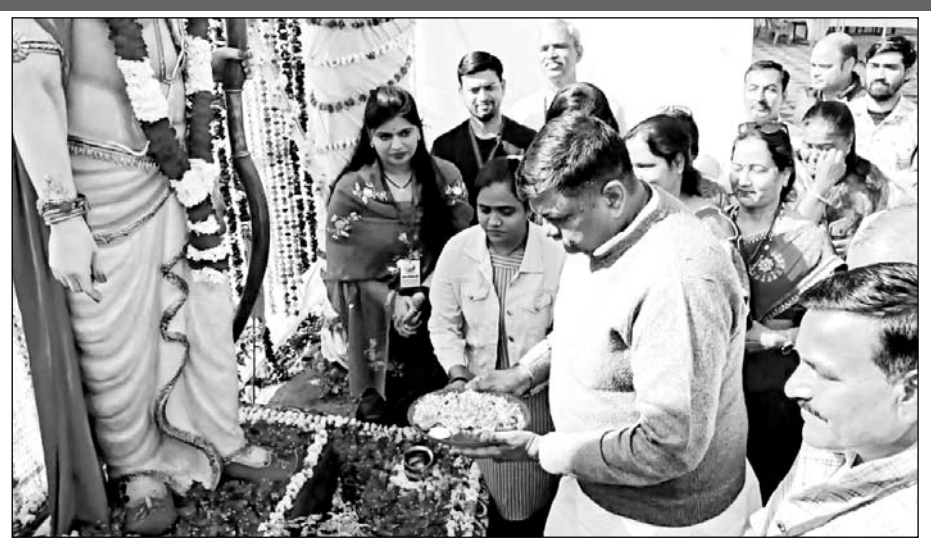

वन एवं पर्यावरण मंत्री संजय शर्मा ने भीलवाड़ा में हरित संगम मेले का उद्घाटन किया।

अपना संस्थान के अंकुर बोरदिया ने बताया कि वन एवं पर्यावरण मंत्री संजय शर्मा ने हरित संगम मेले के उद्घाटन के बाद मेले में लगी विभिन्न स्टॉल्स का अवलोकन किया। उन्होंने मुंबई से विशेष रूप से आई प्लास्टिक कचरा रीसाइकिल मशीन को देख उससे हाथोंहाथ निर्मित होने वाले उत्पादों की सराहना की। इसके बाद वे मेले में लगी स्टॉल्स का अवलोकन करते हुए वे दस हजार पुष्पों से अधिक से सजे फ्लावर शो में पहुंचे और फूलों और प्लांट का कलेक्शन देख आयोजकों को बधाई दी। वन मंत्री इसके बाद शहर में निकली खेल की रेल में स्वयं ओपन जीप में सवार होकर शामिल हुए। हरित संगम मेले से पूर्व आयोजित खेलकूद प्रतियोगिताओं के विजेताओं, उप विजेताओं, टीम सदस्यों सहित 22 से अधिक खेलों से जुड़े भीलवाड़ा के हजारों खिलाड़ी खेल की रेल बनाकर अपने खेल का प्रदर्शन करते हुए शहर के विभिन्न मार्गों से गुजरे। यह रेल पुन: चित्रकूट धाम अवधपुरी पहुंच संपन्न हुई, जहां पारितोषिक वितरण समारोह आयोजित हुआ। इस अवसर पर मेला सहसंयोजक साधना मेलाना, राघव आचार्य आदि कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

खेल की रेल के प्रारंभ से लेकर अंत तक 4 घोष दल कदमताल करते हुए बैंड वादन से सभी का मन मोह रहे थे। इसके अलावा रेल के प्रारंभ में 11 बैलगाड़ियों सहित 3 अश्व, एक कच्छी घोड़ी भी आकर्षण का केंद्र रही। शहर में पहली बार निकली इस अनूठी खेल को रेल को देखने की शहरवासियों में उत्सुकता रही। बैलगाड़ी यात्रा में भेरूलाल गुर्जर का विशेष योगदान रहा। खेल की रेल में भीलवाड़ा के 22 से अधिक खेलों से जुड़े खिलाड़ी शामिल हुए। क्रीड़ा भारती के राजेंद्र काबरा, रोशन देवपुरा, गोविंद स्वरूप पाठक, विश्वजीत सिंह आदि का खेल की रेल के आयोजन में विशेष योगदान रहा।

पर्यावरण एवं स्वच्छता जागरूकता का संदेश देने हेतु राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,सुभाषनगर एवं राजकीय महात्मा गांधी स्कूल, पुलिस लाइन के छात्र-छात्राओं ने शहर के मुख्य मार्गों से होकर एक विशाल पर्यावरण एवं स्वच्छता साइकिल रैली निकाली। इस अवसर पर साइकिल गतिविधि प्रभारी अरुण मुछाल, सुभाष नगर स्कूल प्रधानाचार्या उर्मिला जोशी, प्रदीप सांखला, सुरेश बम्ब, राजकुमार अजमेरा, राकेश सक्सेना आदि का सहयोग रहा।

हरित संगम मेले के आयोजित मांडना प्रतियोगिता में प्रथम सुमित गुर्जर, द्वितीय यशस्वी बाहेती रहे। निर्णायक ज्योति सोनी, विद्या सोनी रहे। विजेताओं को खंडेलवाल महिला मंडल के सहयोग से पारितोषिक प्रदान किए। चेयर रेस में प्रथम ज्योति खंडेलवाल, द्वितीय नमिता खंडेलवाल, प्रीति खंडेलवाल तृतीय रहे। सुई धागा प्रतियोगिता में युवकों में प्रथम अभिषेक खटीक, द्वितीय हर्षित साई, महिलाओं में प्रथम दीपाली नकवाल, द्वितीय खुशाली नकवाल रहे। इस अवसर पर खेल संगम प्रभारी मधु लोढ़ा एवं दिव्या बोरदिया, जिम्मी बाग़चार, नीलम कोठारी, पूनम जैन, रीना सिसोदिया, अरुणा पोखरना, आशा रामावत सहित अनेक सदस्याएं उपस्थित रही। हरित संगम मेले के प्रथम दिन के अंतिम सत्र में सांस्कृतिक कार्यक्रम गणेश वंदना के साथ प्रारंभ हुए।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शनिवार 11 जनवरी, 2025

पौष मास, शुक्ल पक्ष, द्वादशी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2081, रोहिणी नक्षत्र दिन 12:24 तक, शुक्ल योग दिन 11:48 तक, बालव करण प्रात: 8:22 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 11:55 से मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-धनु, चन्द्रमा-वृष, मंगल-कर्क, बुध-धनु, गुरू-वृष, शुक्र-कुम्भ, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग और अमृत सिद्धि योग सूर्योदय से दिन 12:29 तक है। आज शनि प्रदोष व्रत, रोहिणी व्रत है। आज त्रयोदशी तिथि का क्षय हुआ है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 8:40 से 9:58 तक, चर 12:35 से 1:53 तक, लाभ-अमृत 1:53 से 4:29 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:48

मेष

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

वृष

व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी।

मिथुन

आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन हानि का भय है। व्यावसायिक खर्चों में वृद्धि होगी। पारिवारिक कार्यों के लिए भागदौड़ बनी रहेगी।

कर्क

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों पर नियंत्रण बना रहेगा। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

सिंह

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। नवीन कारोबारी योजना का क्रियान्वयन होगा। कारोबारी अनुबंध प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आज शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

तुला

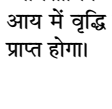

व्यावसायिक परेशानी अभी यथावत बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा।

वृश्चिक

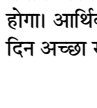

परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

धनु

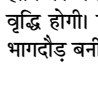

विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर

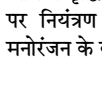

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा।

कुंभ

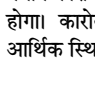

घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन

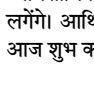

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

'राजस्थान पुलिस की एस.आई.टी. ने बीते एक साल में पेपरलीक के 244 आरोपी दबोचे'

डी.जी.पी. उत्कल रंजन साहू ने पेपर लीक माफिया पर गत एक साल में की गई कार्रवाई पर एस.आई.टी. की सराहना की

- **राजस्थान में भर्ती परीक्षाओं के पेपरलीक करने वाले सरगना, सहयोगी और गलत तरीकों से लाभान्वित परीक्षार्थी समेत 176 लोग आज सलाखों के पीछे हैं। इनमें डमी कैंडिडेट्स के सहारे चयनित हुए लोग भी शामिल है।''**
- **डी.जी.पी. उत्कल रंजन साहू का कहना है ''एस.आई.टी. की कार्रवाई का नतीजा है कि पिछले 1 साल में आर.पी.एस.सी. की 145 तथा आर.एस.एस.बी. की 25 परीक्षाएं बिना पेपर लीक के संपन्न हो सकी।''**

जयपुर (कासं)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राजस्थान पुलिस की स्पेशल इंवेस्टिगेशन टीम (एस.आई.टी.) ने पिछले एक साल में ''पेपरलीक माफिया'' पर शिकंजा कसा है। इसी का नतीजा है कि राजस्थान पुलिस की एसआईटी ने पिछले एक साल में पेपर लीक के अनेकानेक अपराधियों और इसमें शामिल गैंग के सरगनाओं की गिरफ्तारी की है। पेपरलीक गिरोह के सरगना, सहयोगी और गलत तरीकों से लाभान्वित परीक्षार्थी आज सलाखों के पीछे है। डमी कैंडिडेट्स के सहारे चयन के आरोपी भी पकड़े गए है। यहां तक कि ईओ-आरओ परीक्षा में पेपर लीक व अनुचित साधनों के उपयोग का पर्दाफाश भी इस टीम ने किया है।

पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) उत्कल रंजन साहू ने बताया कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने राजस्थान में नई सरकार का नेतृत्व संभालने के तुरंत बाद 16 दिसम्बर 2023 को पेपर लीक से सम्बंधित प्रकरणों की गहन जांच और नकल गिरोह से जुड़े आरोपियों की धरपकड़ करते हुए हताश युवाओं के विश्वास को लौटाने के लिए अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस, एटीएस एवं एसओजी के नेतृत्व में एसआईटी के गठन का निर्णय लिया था। एसआईटी ने प्रदेश में पेपर लीक की रोकथाम के लिए इस सम्बन्ध में दर्ज मामलों में न केवल जाँच को त्वरित तरीके से आगे बढ़ाया है, बल्कि दोषियों के विरूद्ध सख्त एक्शन लिया।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की मंशा के अनुरूप एस.आई.टी. की इस ताबड़तोड़ कार्रवाई का नतीजा है कि, प्रदेश में बीते एक साल में राजस्थान लोक सेवा आयोग (आर.पी.एस.सी.) की 145 तथा राजस्थान अधीनस्थ सेवा बोर्ड (आरएसएसबी) की 25 परीक्षाएं बिना पेपरलीक संपन्न हो पायी है।

डी.जी.पी. ने बताया कि राजस्थान में जेईएन, उप निरीक्षक पुलिस तथा प्लाटून कमान्डर भर्ती परीक्षा-2021 के पेपर लीक में सम्मिलित मुख्य गैंग सरगनाओं, उनके सहयोगी तथा गलत तरीके से लाभान्वित हुए परीक्षार्थियों को भी गिरफ्तार किया है, जिनमें से अधिकांश आरोपी वर्तमान में भी सलाखों के पीछे हैं।

एसआईटी द्वारा परीक्षाओं में गड़बड़ी और अनियमितताओं के बारे में अलग-अलग स्त्रोतों से प्राप्त शिकायतों के आधार पर 2300 से अधिक परिवादों की जांच की जा रही है। अब तक 94 एफआईआर दर्ज की गई है, वहीं पेपर लीक मामलों में 244 आरोपियों की गिरफ्तारी हुई है, इनमें से 176 आरोपी मौजूदा समय में जेल में है।

अतिरिक्त महानिदेशक (एडीजी) पुलिस, एटीएस और एसओजी तथा एसआईटी के प्रमुख वीके सिंह ने बताया कि प्रदेश में कैलेंडर वर्ष 2024 के दौरान एसओजी के थाने पर पेपर लीक, डमी अभ्यर्थियों के सहारे चयन तथा प्राइवेट विश्वविद्यालयों द्वारा फर्जी डिग्री सर्टिफिकेट थोक में जारी करने और इनका बड़े स्तर पर इस्तेमाल करते हुए सरकारी नौकरियां प्राप्त करने से जुड़ी 91 एफआईआर रजिस्टर की गई।

एसआईटी की जांच में विभिन्न भर्ती परीक्षाओं में डमी अभ्यर्थी बैठाकर अनुचित साधनों के प्रयोग से चयनित होने वालों की संख्या बहुत अधिक होने का खुलासा हुआ। यह भी एक पेपर लीक जैसी गम्भीर समस्या थी, जो कि अब तक दबी हुई थी। एसआईटी ने इसे उजागर कर परीक्षा प्रणाली में सुधार करवाए हैं।

एडीजी वी.के.सिंह ने बताया कि एसआईटी ने आरपीएससी द्वारा आयोजित अधिशाषी अधिकारी एवं राजस्व अधिकारी(ईओ/आरओ) भर्ती परीक्षा-2023 की जांच कर 20 आरोपियों को गिरफ्तार करते हुए इनमें पेपर लीक एवं अनुचित साधनों के उपयोग का पर्दाफाश भी किया है, राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा इस परीक्षा को निरस्त कर पुन: आयोजन की घोषणा की गई है। इसके साथ ही बेकरिया पेपरलीक प्रकरण में दिसम्बर 2022 में राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित द्वितीय श्रेणी शिक्षक भर्ती परीक्षा-2022 के सिलसिले में थाना बेकरिया जिला उदयपुर में गिरफ्तारशुदा 6 मुल्जिमों की जमानत याचिका राजस्थान उच्च न्यायालय, जोधपुर पीठ द्वारा सुनवाई के बाद अगस्त 2024 में खारिज की गई। ये मुल्जिम वर्ष 2023 से न्यायिक अभिरक्षा में है।

फर्जी डिग्री देने-लेने वालों पर कसा शिकंजा

सिंह ने बताया कि एसआईटी की जांच में ज्ञात हुआ कि पेपर लीक करने एवं डमी अभ्यर्थी की सहायता से चयन कराने वाले गैंग द्वारा बिना योग्यता वाले अभ्यर्थियों का अनुचित साधनों से चयन करवा दिया जाता था। परीक्षा का फार्म भरते समय उनके द्वारा यह घोषणा की जाती थी कि कि वे अमुक विश्वविद्यालय से अंतिम वर्ष के विद्यार्थी हैं किन्तु वे वास्तव में विद्यार्थी नहीं हो कर चयनित होने पर किसी प्राईवेट यूनिवर्सिटी से फर्जी डिग्री लाकर एवं अनुचित तरीकों से बड़ी संख्या में सरकारी नौकरी प्राप्त कर लेते थे। एसआईटी द्वारा ऐसे विश्वविद्यालयों के खिलाफ गहनता से छानबीन बाद मुकदमा दर्ज किया गया है एवं जाँच प्रगति पर है। ऐसे प्राईवेट विश्वविद्यालय के पदाधिकारियों, दलालों एवं कई लाभार्थियों को गिरफ्तार किया गया है और वे अभी भी जेल में बन्द है। साथ ही एसओजी ने खेलों में फर्जी प्रमाण पत्र का गोरखधंधा उजागर कर इसमें संलिप्त आरोपितों को भी गिरफ्तार किया है।

हैल्पलाइन पर आमजन से मिल रही सटीक सूचनाएं

एडीजी एसओजी एवं एटीएस सिंह ने बताया कि एसआईटी की टीम ने गत एक साल में जिस प्रकार रात दिन एक करते हुए पेपर लीक के मामलों में लगातार तत्परता से ठोस कार्रवाई की है, उससे युवाओं के साथ-साथ आमजन में भी सिस्टम के प्रति भरोसा कायम हुआ है। एसआईटी द्वारा जारी हेल्पलाइन पर आमजन सजग प्रहरी के रूप में लगातार परीक्षाओं में अनुचित साधनों का प्रयोग कर चयनित लाभार्थियों के बारे में सटीक सूचना बढ़-चढ़कर साझा कर रहे है। एक तरह से एसआईटी हैल्पलाइन ने जनता को पुलिस की भूमिका में लाकर खड़ा कर दिया है।

शांति एवं अहिंसा विभाग ने सुबोध महाविद्यालय में कराया सेमिनार

जयपुर। भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर विभिन्न आयोजनो के क्रम में शांति एवं अहिंसा विभाग, राजस्थान सरकार एवं एस.एस. जैन सुबोध पी. जी. महाविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में आज एक सेमिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। सेमिनार में बड़ी संख्या में महाविद्यालय के छात्र छात्राओं ने युवा दिवस के अवसर पर अपने विचारो को अभिव्यक्त किया ।

इस सेमिनार के मुख्य अतिथि सामाजिक न्याय एवं अधिकारित मंत्री अविनाश गहलोत रहे। उन्होंने कहा कि युवा देश का भविष्य है।

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

एक वर्ष
परिणाम उत्कर्ष

श्री भजनलाल शर्मा
माननीय मुख्यमंत्री, राजस्थान

मुख्यमंत्री रोजगार उत्सव

13 हजार से अधिक युवाओं को सरकारी नौकरी के नियुक्ति पत्र का वितरण

एवं

31 हजार करोड़ रुपए के 76 हजार से अधिक विकास कार्यों का लोकार्पण एवं शिलान्यास

राज्य स्तरीय समारोह

मुख्य अतिथि
श्री भजनलाल शर्मा
माननीय मुख्यमंत्री

विशिष्ट अतिथि
सुश्री दिया कुमारी
माननीया उप मुख्यमंत्री

श्री जोगाराम पटेल
माननीय संसदीय कार्यमंत्री

12 जनवरी, 2025 | प्रात: 11:00 बजे | बिड़ला ऑडिटोरियम, जयपुर

निभाई जिम्मेदारी - हर घर खुशहाली
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

राजस्थान संवाद

1.05 करोड़ की ठगी के तार बीकानेर से जुड़े, दो गिरफ्तार

श्रीगंगानगर, (निसं)। जिले के चूनावढ़ थाना क्षेत्र के गांव 22 एमएल में एक व्यक्ति से 1 करोड़ 5 लाख 59 हजार 960 रुपए की सायबर ठगी के तार अब बीकानेर से भी जुड़ गए हैं। अब तक इस मामले में फ्रॉड राशि के जयपुर, सोनीपत और मध्यप्रदेश में बैंक खातों में ट्रांसफर होने की बात सामने आई थी और पुलिस ने इन तीनों जगह से 7 आरोपी भी गिरफ्तार कर लिए हैं।

जांच में इस मामले में बीकानेर के भी दो युवकों के शामिल होने की बात सामने आई है। दोनों युवकों ने फ्रॉड राशि के 4 लाख 33 हजार रुपए अपने खाते में जमा करवाए और बाद में इन्हें चेक के जरिए निकलवा लिया। इस फ्रॉड राशि के कई खातों में ट्रांसफर होने की बात सामने आ रही है। जांच के दौरान पुलिस को बीकानेर के दो युवकों के इस मामले से जुड़े होने का पता लगा तो बैंक डिटेल जुटाई गई। जांच में सामने आया कि बीकानेर के बंगलानगर के रहने वाले मोहम्मद तहरीर अली उर्फ फराहान पुत्र मोहम्मद बशीर अली और उसके साथी इमरान शेख पुत्र जबार अली ने अपने नाम से खाता खुलवाया और इसमें फ्रॉड की गई राशि के 4 लाख 33 हजार रुपए जमा करवा लिए। बाद में यह राशि चेक के जरिए निकलवा ली गई। पुष्टि होने पर दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया।

चूनावढ़ थाना क्षेत्र के गांव 22 एमएल की जसविंद्र कौर ने पिछले साल 16 नवंबर को साइबर थाने में मामला दर्ज करवाया कि उसके पति सोहन सिंह के फोन पर अज्ञात ने सीबीआई अधिकारी बनकर वीडियो कॉल पर बात की। कॉल करने वाले ने कहा कि सोहनसिंह के खाते में गलत तरीके से पैसा जमा हुआ है और उसके खिलाफ दिल्ली में मुकदमा दर्ज हुआ है। कॉल करने वाले ने कहा कि इस मामले में सोहनसिंह को सात साल की जेल होगी। इस पर दोनों पति-पत्नी घबरा गए। आरोपी ने पीड़ित को एक खाता नंबर दिया और उसमें रुपए जमा करवाने को कहा। आरोपी के कहने पर डर के कारण पीड़ित 1 करोड़ 5 लाख 59 हजार 960 रुपए आरोपी के खाते में जमा करवा दिए। इस मामले में इससे पुलिस ने सात आरोपी पकड़े थे। उन्हें जुडिशियल कस्टडी में भिजवा दिया गया है। पकड़े गए आरोपियों की संख्या अब नौ हो गई है।

ग्लोबल स्टोन टैक्नोलॉजी फोरम का इंटरनेशनल सेमिनार संपन्न

केंद्रीय किसान कल्याण राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने उद्योगों की समस्याओं को दूर करने का आश्वासन दिया

किशनगढ़। ग्लोबल स्टोन टैक्नोलॉजी फोरम के 10वें संस्करण का शुक्रवार को किशनगढ़ मार्बल एसोसिएशन सभागार में संपन्न हुआ। समापन सत्र में भारत सरकार के कृषि व किसान कल्याण राज्य मंत्री भगीरथ चौधरी, राजस्थान सरकार के वन, पर्यावरण व जलवायु परिवर्तन मंत्री संजय शर्मा, किशनगढ नगर निगम के चेयरमैन दिनेश सिंह, सीडोस के उपाध्यक्ष राकेश गुप्ता और सीईओ मुकुल रस्तोगी, किशनगढ़ मार्बल एसोसिएशन के संरक्षक अशोक पाटनी, राष्ट्रीय सचिव लघु उद्योग भारती, नरेश पारीक व प्रदेश उपाध्यक्ष नटवरलाल अजमेरा, प्रदेश उपाध्यक्ष मुकेश अग्रवाल और सुधीर जैन, अध्यक्ष किशनगढ़ मार्बल एसोसिएशन शामिल थे।

- **विशेषज्ञों ने खनन स्वीकृति प्रक्रिया और पर्यावरणीय सुधारों पर जानकारी प्रदान की**

समापन सत्र को क्रेंद्रीय कृषि व किसान कल्याण राज्य मंत्री भगीरथ चौधरी ने संबोधित किया।

वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री संजय शर्मा ने अपने संबोधन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा चलाए गए "एक पेड़ माँ के नाम" मिशन का जिक्र किया और इसे प्रेरणादायक बताया। उन्होंने राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के 7 करोड़ वृक्षारोपण की पहल की सराहना की। साथ ही, उन्होंने किशनगढ़ औद्योगिक क्षेत्र की स्वच्छता को सराहा और इसे उद्यमियों की सामूहिक जिम्मेदारी का प्रतीक बताया। उन्होंने डंपिंग यार्ड के लिए अतिरिक्त भूमि के आवंटन की घोषणा भी की। केंद्रीय किसान कल्याण राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने उद्योगों की समस्याओं को दूर करने का आश्वासन दिया। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 2047 तक भारत को विकसित देश बनाने के संकल्प को दोहराया। केंद्रीय राज्य मंत्री ने जानकारी दी कि किशनगढ हवाई अड्डे के विस्तार का कार्य जल्द ही पूरा होगा और इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विकसित किया जाएगा। अजमेर में 498 करोड़ की लागत से नए रेलवे स्टेशन के निर्माण का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि यह क्षेत्र के लिए बड़ी उपलब्धि है। उन्होंने ग्रेनाइट और मार्बल उद्योग पर जीएसटी दर को घटाने का आश्वासन भी दिया। इस अवसर पर लघु उद्योग भारती की राष्ट्रीय पत्रिका उद्योग टाइम्स के कौशल अंक का अतिथियों ने विमोचन किया।

दूसरे दिन के तकनीकी सत्रों में विशेषज्ञों ने महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की :- प्रथम सत्र में "टेक्नोलॉजी एंड इनोवेशन-पायनियरिंग द फ्यूचर ऑफ स्टोन्स" थीम पर आधारित इस सत्र में विल्बर इंपैक्स के एमडी अरुण शेट्टी, सम्राट केमिकल्स के हैरी सिदवानी और टेनेक्स इटली के तकनीकी विशेषज्ञ मेटियो वानी ने अपने प्रेजेंटेशन दिए। अरुण शेट्टी ने "रिकवरी एंड एडवांटेजेज ऑफ इपोक्सी सिस्टम ऑन नेचुरल स्टोन्स" पर चर्चा की। हैरी सिदवानी ने "अनलॉकिंग हिडन वैल्यू - कॉस्ट रिडक्शन एंड इनोवेशन थ्रू एडवांस स्टोन टेक्नोलॉजी" पर विचार रखे। माटियो वानी ने "प्रोसेसिंग ऑफ मार्बल एंड क्वार्टजाइट फ्रॉम क्वेरी टू स्लैब" विषय पर महत्वपूर्ण जानकारी साझा की। सत्र की अध्यक्षता लघु उद्योग भारती चित्तौड़ प्रांत के संयुक्त सचिव दीपक शर्मा ने की और संचालन सीडोज़ के मुकुल रस्तोगी ने किया।

दूसरे सत्र में इस सत्र में दिल्ली के प्रोफेसर डॉ. विश्नोई ने "स्टोन इंडस्ट्री में मानकीकरण" पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने भारतीय मानक ब्यूरो और मानकीकरण की प्रक्रिया की जानकारी प्रदान की। सत्र के स्पीकर्स का परिचय लघु उद्योग भारती की प्रदेश उपाध्यक्ष अंजू सिंह ने दिया और संचालन दीपक अजमेरा ने किया। इस सत्र में किशनगढ़ इकाई के अध्यक्ष उमेश गोयल और जयपुर अंचल के सदस्य उद्यमी संजय मोर भी उपस्थित थे।

अंतिम सत्र में खनन नीतियों और खनन क्षेत्र में पर्यावरणीय मुद्दों पर चर्चा की गई। विशेषज्ञों ने खनन स्वीकृति प्रक्रिया और पर्यावरणीय सुधारों पर जानकारी प्रदान की। डायरेक्टर जनरल माइंस एंड सेफ़्टी के डॉक्टर आयी नारायणन ने माइंस सेफ़्टी के ऊपर जानकारी उपलब्ध कराई। दिनभर प्रतिनिधियों ने 24 स्टॉल का दौरा किया, जहां उन्नत मशीनरी, तकनीक और सरकारी योजनाओं की जानकारी प्रदर्शित की गई।

इस कार्यक्रम में भारत और विदेशों के 500 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। आयोजन को सफल बनाने में सीडोस, रीको, किशनगढ़ मार्बल एसोसिएशन, और लघु उद्योग भारती का योगदान सराहनीय रहा। जीएसटीएफ 2025 ने स्टोन उद्योग को नवाचार, तकनीकी विकास और निर्यात प्रोत्साहन के लिए एक मजबूत मंच प्रदान किया। इसने किशनगढ़ को स्टोन उद्योग के लिए एक वैश्विक केंद्र के रूप में स्थापित करने की दिशा में ठोस कदम उठाए।

डेढ़ किलो सोना, 22.49 लाख की नकदी पकड़ी

डूंगरपुर, (निसं)। राजस्थान-गुजरात बॉर्डर पर पुलिस ने डेढ किलो सोना और साढे 22 लाख की नकदी के साथ तीन लोगों को गिरफ्तार किया है। तीनों बॉर्डर से पहले एक निजी बस से उतरे और पैदल बॉर्डर क्रॉस कर रहे थे। फिलहाल पुलिस युवकों से सोना और नकदी को लेकर पूछताछ कर रही है। मामला डूंगरपुर जिले के रतनपुर बॉर्डर का है।

- **उदयपुर से बस में आए तीन व्यक्ति बॉर्डर पर उतरकर पैदल गुजरात जा रहे थे, पुलिस ने की कार्रवाई**

बिछीवाड़ा थानाधिकारी ने बताया कि गुरुवार देर रात को मुखबिर से सूचना मिली कि एक ट्रैवल्स बस के जरिए तीन युवक अवैध रूप से सोना और नकदी लेकर जा रहे हैं। इस पर पुलिस ने रतनपुर बॉर्डर पर नाकाबंदी की। इस दौरान एक ट्रैवल्स बस से 3 युवक उतरकर पैदल जाने लगे। युवकों के पास एक थैला था। पुलिस ने तीनों युवकों की हरकतें संदिग्ध लगने पर रुकवाकर पूछताछ की। इस पर वे घबरा गए। पुलिस ने उनकी तलाशी ली। इस दौरान भारी मात्रा में सोना और ज्वेलरी के साथ नकदी मिली। थानाधिकारी ने बताया कि तीनों सोना और नकदी के बारे में कोई सही सवाब नहीं दे पाए।

इस पर पुलिस ने सोने और नकदी जब्त कर गिनती करवाई। करीब 1 किलो 478 ग्राम सोना और ज्वेलरी मिली है, जिसकी कीमत करीब 1 करोड 30 लाख रुपए बताई जा रही है। वहीं 22 लाख 49 हजार 817 रुपए का नकद भी मिला है। थानाधिकारी ने बताया कि बॉर्डर पर 3 युवकों से मिले सोना और ज्वेलरी के साथ नकदी को किसी ज्वेलर्स कारोबारी से जोड़कर देखा जा रहा है।

पुलिस ने ज्वेलरी और कैश को लेकर डॉक्युमेंट मांगे, लेकिन तीनों के पास कोई डॉक्युमेंट नहीं मिले। पूरे मामले की जांच के बाद ही आगे का पता लग सकेगा। थानाधिकारी ने बताया कि पुलिस ने सिरोही निवासी चंदूलाल पुत्र जैसा सैन, तेजराम पुत्र बाबाजी देवासी और अशोक पुत्र होबाराम मेघवाल को गिरफ्तार कर लिया है। उनसे नकदी और सोने के बारे में पूछताछ की जा रही है। तीनों उदयपुर से बस से आए थे और बॉर्डर से पहले उतरकर पैदल गुजरात के लिए जा रहे थे।

दो करोड़ की स्मैक सहित तस्कर गिरफ्तार, कार जब्त

कोटा, (निसं)। रानपुर पुलिस टीम ने ऑपरेशन नश्वर अभियान के तहत नाकाबंदी के दौरान बड़ी कार्रवाई करते हुए एक कार से 400 ग्राम स्मैक सहित तस्कर को गिरफ्तार किया है। पकड़ी गई स्मैक की अन्तर्राष्ट्रीय मार्केट में कीमत दो करोड़ रूपये बताई गई है।

- **पुलिस चौकी जगपुरा के समीप नाकाबंदी में कार में से 400 ग्राम अफीम जब्त की**
- **पकड़े गये आरोपी से स्मैक की खरीद-फरोख्त के बारे में पूछताछ की जा रही है**

शहर पुलिस अधीक्षक डॉ. अमृता दुहन ने बताया कि जिले में अवैध मादक पदार्थ की तस्करी की रोकथाम के लिये शहर पुलिस द्वारा ऑपरेशन नश्वर अभियान चलाया जा रहा है, जिसके तहत समस्त थानाधिकारियों को अवैध मादक पदार्थ तस्करों के विरूद्ध कार्रवाई करने के निर्देश दिये गये हैं। शहर एसपी ने बताया कि पुलिस उपअधीक्षक मनीष शर्मा के सुपरविजन में रानपुर थानाधिकारी मांगेलाल के नेतृत्व में टीम का गठन किया गया। शहर एसपी ने बताया कि गठित टीम ने अवैध मादक पदार्थ के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान में पुलिस चौकी जगपुरा के समीप नाकाबंदी कर झालावाड़ की ओर से आने वाले वाहनों की चैकिंग कर रहे थे। वाहन चैकिंग के दौरान एक काले रंग की कार को रोककर चैक किया गया तो कार में चैकिंग के दौरान अवैध मादक पदार्थ 400 ग्राम स्मैक बरामद हुई।

शहर एसपी ने बताया कि बरामद की गई स्मैक की आन्तर्राष्ट्रीय बाजार में कीमत 2 करोड़ रूपये है। शहर एसपी ने बताया कि कार में से स्मैक बरामद होने पर पुलिस टीम ने मौके पर ही कार्रवाई करते हुए महुआ खो, थाना अकलेरा जिला झालावाड़ हाल रामनगर कॉलोनी जिला झालावाड़ निवासी रामलाल (33) को एनडीपीएस एक्ट में गिरफ्तार किया। शहर एसपी ने बताया कि पकड़े गये आरोपी से स्मैक की खरीद-फरोख्त के बारे में अनुसंधान किया जा रहा है।

हेरिटेज वॉक के साथ ऊंट उत्सव का आगाज

बीकानेर। हेरिटेज वॉक के साथ शुक्रवार को अंतर्राष्ट्रीय ऊंट उत्सव का आगाज हुआ। लक्ष्मीनाथ जी मंदिर से रामपुरिया हवेली तक आयोजित हुई हैरिटेज वाक में बीकानेर की स्थापत्य कला, व्यंजन और ललित कलाओं के विविध आकर्षक रंग देखने को मिले। हैरिटेज वॉक में देशी-विदेशी सैलानी, स्थानीय निवासियों सहित प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी भी बीकानेरी रंगों में सरोबार नजर आए।

इस दौरान जिला कलेक्टर नम्रता वृष्णि, पुलिस अधीक्षक कावेन्द्र सिंह सागर, निगम आयुक्त मयंक मनीष, बीडीए सचिव अपर्णा गुप्ता, सीईओ सोइनलाल, पर्यटन विभाग के उपनिदेशक अनिल राठौड़, सहायक निदेशक किशन कुमार, जिला पर्यटन अधिकारी पवन शर्मा सहित अन्य पुलिस प्रशासन अधिकारियों ने इस वॉक में शिरकत की। इस अवसर पर कलेक्टर नम्रता वृष्णि ने कहा कि बीकानेर की ऐतिहासिक विरासत हमारी साझी धरोहर है। इसके रंग पूरी दुनिया में पर्यटन मानचित्र पर बिखेरे हैं। इस

बीकानेर में उत्सव में हेरिटेज वॉक में विदेशी सैलानी शामिल हुए।

उत्सव में आए सभी सैलानियों और स्थानीय प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कलेक्टर ने उनसे इस संस्कृति का हिस्सा बन कर इसे जीने का आव्हान किया। वॉक के दौरान लोक कलाकार पवन व्यास ने 2 हजार 25 फीट लंबी पगड़ी बांधकर वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया। इस दौरान नगाड़ा, मश्क, चंग और बांसुरी वादन एवं भजन गायन की प्रस्तुतियां दी गई। देशी और विदेशी सैलानियों ने मथेरण, बंधेज, पोट्री, सुनहरी कलम और साफा बांधने की कला को करीब से देखा। इस दौरान लोक कलाकार, रोबीले और सजे-धजे ऊंट भी साथ रहे। भांडाशाह जैन मंदिर के पास हरियाणवी रागड़ी की प्रस्तुति दी गई। चूड़ी बाजार में लाख की चूड़ी बनाने, जूती बनाने, चाक पर मिट्टी के बर्तन बनाने की कला को दर्शाया गया।

प्रतिभागियों ने भुजिया, घेवर और जलेबी बनाने की कला को करीब से देखा और बीकानेरी स्वाद का लुत्फ उठाया। मरूनायक चौक में ब्लॉक और स्क्रीन प्रिंटिंग का प्रदर्शित की गई। मोहता चौक के बड़े पाटे पर पारम्परिक भोजन बनाने का प्रदर्शन किया गया, जहां प्रतिभागियों को कचौड़ी और रबड़ी खिलाई गई। भपंग वादन का प्रदर्शन भी किया गया। लोक कलाकारों द्वारा गणगौर के गीत, कठपुतली का खेल दिखाया गया। हैरिटेज के रंगों को करीब से देख कर देशी-विदेशी पर्यटक रोमांचित नजरर आए।

ऐतिहासिक रामपुरिया हवेलियों के पास वॉक का समापन हुआ, जहां उस्ता कला, हवेली संगीत और कच्छी घोड़ी नृत्य नाटिका का मनमोहक प्रदर्शन ने प्रतिभागियों को झूमने पर मजबूर कर दिया। अन्तर्राष्ट्रीय ऊंट उत्सव की हैरिटेज वाक में सजे धजे रास्ते और सांस्कृतिक और स्थापत्य विरासत के रंगों के बीच सैलानी सेल्फी लेते दिखे। कई स्थानों पर स्थानीय निवासियों ने उत्सव में आए सैलानियों का फूल बरसा कर और माला पहनकर स्वागत किया। बीकानेर की इस अपनायत से सैलानी भाव विभोर नजर आए।

कार्यालय अधिशाषी अभियंता, सानिवि नगर खण्ड बीकानेर

क्रमांक : 5366 दिनांक : 03.01.2025

Notice Inviting Bid : 42/2024-25

Bid for the "Construction of RUB at 321/9-10 Lalgarh Bikaner, Repair of Damaged CD Work Package No. RJ-08-01/East/CD Work/2023-24, Construction of new Room and Renovation work in District Statistical Office, Bikaner are invited from interested bidders from 03.01.2025 (9.30 AM) to 13.01.2025 (06.00 PM) & open date 14.01.2025 (11.00 A.M.), other particulars of the bid may be visited on the procurement portal http://pwd.rajasthan.gov.in & eproc.rajasthan.gov.in & http://sppp. rajasthan.gov.in of the state and departmental website. The approximate value of the procument is Rs. 222.80 Lakh.

Excutive Engineer
PWD City Division, Bikaner

UBN.No.PWD 2425WSOB 13464

DIPR/C/472/2025

कार्यालय विद्युत नगर निगम कोटा दक्षिण (राज0)

क्रमांकः–ननिको द./वि0/2025/1115–1120 दिनांक 09.01.2025

–: ई – निविदा सूचना :–

नगर निगम, कोटा दक्षिण द्वारा किसी भी सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों में निम्न कार्य को करनें वाले अनुभवी संवेदको से ई–निविदा पद्धती से ऑन लाईन निविदा आमंत्रित की जाती है। कार्यो की अनुमानित राशि, निविदा बेचे जाने, प्राप्त करने, अन्य शर्तें एवं जानकारी निगम वेबसाईट urban.rajasthan.gov.in/nnks, www.sppp.rajasthan.gov.in & https://eproc.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है।
(अनुमानित राशि 49.84 लाख रूपये)
NIB Code – DLB2425A4809
UBN – DLB2425WSRC14737
अधिशाषी अभियंता (वि0)
नगर निगम कोटा दक्षिण
राज.संवाद/सी/24/10163

बीकानेर नगर निगम

नगर निगम मार्ग, बीकानेर (राजस्थान) फैक्स :– 0151–2226906, फोन :– 0151–2226902, 0151–2226905
E-Mail Address :- nagarnigambikaner@gmail.com, Web Site :- www.bikanermc.org

क्रमांक/निर्माण/2024–25/610 दिनांक 09.01.2025

ई– निविदा–सूचना सं0 79/2024–25

नगर निगम बीकानेर की ओर से विभिन्न कार्यो (कुल 01 कार्य) के लिये केन्द्र व राज्य सरकार के अभियांत्रिकी विभागों में "ऐऐ", "ऐ" श्रेणी में पंजीकृत संवेदको एवं नगर निगम में उपर्युक्त श्रेणी में पंजीकृत निविदादाताओं से निर्धारित प्रपत्र में ई–प्रोक्यूमेंट प्रक्रिया से ऑन लाईन निविदाएं आमंत्रित की जाती है। निविदा से सम्बन्धित विवरण वेब साईट www.bikanermc.org Web site www.SPPP.raj.nic.in से व http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।
निविदा की कुल लागत 28.96 लाख
UBN Number :- DLB2425WSOB14762
आयुक्त
नगर निगम, बीकानेर
राज.संवाद/सी/24/10171

बीकानेर नगर निगम

नगर निगम मार्ग, बीकानेर (राजस्थान) फोन :– 0151–2226902, 0151–2226905
E-Mail Address :- nagarnigambikaner@gmail.com, Web Site :- www.bikanermc.org

क्रमांक/यंत्रालय/2025/374 दिनांकः– 07.01.2025

ई-बोली सूचना –12

बीकानेर नगर निगम के नगरीय क्षेत्र में सीवर लाईन एवं मशीनहॉल के ब्लॉकेज को खोलना एवं सीवर लाईन की प्लगिंग कर डी–सिल्टिंग कार्य हेतु नगर निगम की हाईपॉवर जेटिंग कम सुपर सकर मशीन एवं जेटिंग कम सक्सन मशीनों का बोली शर्तों अनुसाररख–रखाव एवं संचालन कार्य हेतु पंजीकृत फर्मों से ई–प्रोक्योरमेंट प्रक्रिया से ई–बोली आमंत्रित की जाती हैं। बोली से सम्बन्धित समस्त विवरण www.eproc.rajasthan.gov.in, www.sppp.rajasthan.gov.in एवं नगर निगम की वेबवाईट www.bikanermc.org पर देखी जा सकती हैं।
कार्य की अनुमानित लागत – रूपये 330.00 लाख
UBN Number : DLB2425GLOB14763
आयुक्त
बीकानेर नगर निगम
राज.संवाद/सी/24/10167

जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड

कार्यालय संभागीय मुख्य अभियंता (जयपुर संभाग)
पुराना पॉवर हाऊस, बनीपार्क, जयपुर टेलीफैक्स : 0141 – 2201489, इमेल: zcejz@jvvnl.org

ई– निविदा सूचना

ई–निविदा दो भागों में (तकनीकी–वाणिजियक), पंचोली, जिला दौसा में 33/11 केवी जीएसएस का निर्माण और 33 केवी और 11 केवी इंटरकनेक्शन का निर्माण का कार्य सहायक अभियंता (प. व. स.), जेपीडी, सिकराय, जयपुर डिस्कॉम के दौसा सर्कल के अधिकार क्षेत्र में टीएन – 92 के तहत एआरसी पर योग्य निविदादाताओं से श्रम दर पर आमंत्रित किये जाते है। योग्य निविदादाता सम्पूर्ण निविदा संबंधित दस्तावेज ई – प्रोक्योरमेन्ट पोर्टल http://www.eproc.rajasthan.gov.in पर दिनांक 15.01.2025 से डाउनलोड कर सकते है। निविदायें ऑनलाईन ई– पोर्टल पर दिनांक 27.01.2025 को सांय 05:00 बजे तक ही स्वीकार की जावेगी । निविदा संबंधी जानकारी कार्य का विवरण इत्यादि जयपुर विद्युत वितरण निगम की वेब साईट www.energy.rajasthan.gov.in/jvvnl, http://www.sppp.rajasthan.gov.in & http://eproc.rajasthan.gov.in से प्राप्त की जा सकती है।
UBN: VVN2425WSOB01032
जेपीआर–2936 (2025)
संभागीय मुख्य अभियंता (जयपुर संभाग)
बिजली शिकायतों के लिए टोल फ्री नम्बर 1800 180 6507
राज.संवाद/सी/24/10185

उदयपुर विकास प्राधिकरण, राजस्थान

No.:F-2(01)Acct/Contract/2024-25/231-233 Date: 09-01-2025

अल्पकालिन ई-निविदा सूचना संख्या: 62/2024-25

उदयपुर विकास प्राधिकरण, उदयपुर द्वारा निम्नलिखित कार्यो मय डिफेक्ट लाईबिलिटी अवधि के लिये जो कि निविदा प्रपत्र में अंकित है के लिये उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदको से निर्धारित प्रपत्र में ई–टेण्डरिंग के माध्यम से ऑनलाईन निविदा आमंत्रित की जाती है :–

निविदा कार्यो की कुल लागत	:	रूपये 112.81 लाख (03 कार्य)
ऑनलाईन निविदा प्रपत्र डाउनलोड/अपलोड करने की अवधि	:	10–01–2025 को प्रातः 10.00 बजे से 13–01–2025 को सांयः 6.00 बजे तक
Online EMD, Tender Fee & Processing Fee जमा कराने की तिथी	:	10–01–2025 को प्रातः 10.00 बजे से 13–01–2025 को सांयः 6.00 बजे तक
ऑनलाईन निविदा खोलने की तिथी	:	14–01–2025 को प्रातः 11.00 बजे

विस्तृत विवरण वेबसाईट urban.rajasthan.gov.in/uitudaipur, www.eproc.rajasthan.gov.in व www.sppp.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।
UBN : ITU2425WSOB00428, ITU2425WSOB00429, ITU2425WSOB00430
अधिशाषी अभियन्ता–चतुर्थ
उदयपुर विकास प्राधिकरण
राज.संवाद/सी/24/10176

राजस्थान सरकार
कार्यालय उपवन संरक्षक, सवाई माधोपुर
नर्सरी आलनपुर, सामान्य चिकित्सालय के पास, सवाई माधोपुर
E-mail : dcf.swmdpr.forest@rajasthan.gov.in
क्रमांक : 63 दिनांक : 3.1.2025

निविदा सूचना

राजस्थान राज्य के राज्यपाल की ओर से वित्तीय वर्ष 2024–25 में इस कार्यालय के अधीन वनक्षेत्र में विकास कार्य करवाया जाना है। उक्त कार्य हेतु उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत सार्वजनिक निर्माण विभाग व राज्य सरकार के अधिकृत विभाग/संगठनों जो राज्य सरकार के सक्षम श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष एवं इस तरह के निर्माण कार्यों के अनुभवी संवेदकों से ऑनलाईन निविदाएं आमत्रिंत की जाती है। निविदा से संबंधित विवरण DIPR की वेबसाईट www.dipronline.org,http://eproc.rajasthan.gov.in&www.sppp.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।

क्र.सं.	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (लाखों में)	UBN
1.	Advance Work at Range Gangapur City	197.73	FOR2425WSOB03541
2.	Construction of Boundary Wall 1000 Meter at Range Bonli	30.50	FOR2425WSOB03543
3.	Advance Work at Range Bonli	93.13	FOR2425WSOB03542
4.	Polythene Bags NIT 22/2024-25	9.00	FOR2425WSOB03633

(श्रवण कुमार रेड्डी) I.F.S.
उप वन संरक्षक, सवाई माधोपुर
DIPR/C/388/2025

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, खण्ड जोबनेर

क्रमांक : अ.अ./खण्ड/जोबनेर/2024-25/1855/67 दिनांक : 02.1.2025

निविदा सूचना संख्या : 56-63/2024-25

राजस्थान के राज्यपाल की ओर से खण्ड जोबनेर के अधीन उपखण्ड सांभर एवं उपखण्ड किशनगढ़-रेनवाल के अधीन विभिन्न कार्यों की निविदा संख्या 56-63/2024-25 के द्वारा आमत्रिंत की जाती है। निविदा संख्या 56-63/2024-25 दिनांक 13.01.2025 तक अपरान्ह 1.00 बजे तक डाउनलोड की जाकर दिनांक 13.1.2025 तक अपरान्ह 1 बजे तक अपलोड की जा सकेगी। निविदा की तकनीकी बिड दिनांक 13.1.2025 को अपरान्ह 2.00 बजे ऑनलाईन खोली जावेगी। निविदा प्रपत्र व इससे संबंधित नियम व शर्तें विस्तुत विवरण निम्नलिखित वेबसाईट पर देखें जा सकते है।
1. www.eproc.rajasthan.gov.in 2. www.dipronline.org
3. SPPP Portal 4. Office ID : 41829

UBN	
NIT-56/2024-25	PHE2425WSRC07970
NIT-57/2024-25	PHE2425WSRC07971
NIT-58/2024-25	PHE2425WSRC07972
NIT-59/2024-25	PHE2425WSRC07973
NIT-60/2024-25	PHE2425WSRC07974
NIT-61/2024-25	PHE2425WSRC07975
NIT-62/2024-25	PHE2425WSRC07976
NIT-63/2024-25	PHE2425WSRC07977

जल ही जीवन है
अधिशाषी अभियंता
जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, खण्ड जोबनेर
DIPR/C/316/2025

कार्यालय नगर निगम, अजमेर

पृथ्वीराज मार्ग, अजमेर (राजस्थान) फोन नं. 0145–2429971, 2429920

क्रमांक :–MEW/2024-25/3326 दिनांकः– 09.01.2025

:: ई–निविदा सूचना संख्या 45/2024–25 ::

नगर निगम अजमेर की ओर से Interior work के अनुभवी नगर निगम अजमेर एवं राजकीय विभाग में उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदको जो कि केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग, डाक एवं दूरसंचार, रेलवे या अन्य राज्य सरकार, केन्द्रीय सरकार के अधिकृत संगठनो जो राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणी के संवेदको के समकक्ष हो (निविदा पात्रता पंजीकरण के नियमो के अनुसार मान्य) जो निर्धारित प्रपत्र में ई–प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया से (Interior work at New Office Building for Nagar Nigam Ajmer, Opposite Panchsheel Kanji House, Lohagal Road Ajmer) कार्य हेतु ऑनलाईन ईनिविदा आमंत्रित की जाती है।

निविदा कार्यो की कुल लागत	राशि 49.68 लाख (01 कार्य)
ऑनलाईन निविदा प्रपत्र डाउनलोड/अपलोड करने की अवधि	Date 09.01.25 से 20.01.25 को 6.00 PM तक
Technical निविदा खोलने की तिथि व समय	Date 21.01.25 को 10.00AM पर
Financial निविदा खोलने की तिथि	सफलतम निविदादाता को उचित माध्यम के द्वारा सूचित कर दिया जावेगा।

विस्तृत विवरण वेबसाईट http://sppp.rajasthan.gov.in एवं http:/www.eproc.rajasthan.gov.in पर एवं नगर निगम के निर्माण विभाग के कार्यालय में भी देखी जा सकती है।
Nib Code :-ANN2425A0173
UBN No. :-ANN2425WSOB00278
अधिशाषी अभियन्ता
नगर निगम अजमेर
राज.संवाद/सी/24/10165

कार्यालय अधीक्षण अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, वृत्त-धौलपुर

क्रमांक : 2484-2504 दिनांक : 01.01.2025

अल्पकालीन निविदा सूचना संख्या : 06/2024-25

राजस्थान में राज्यपाल महोदय की ओर से जिला धौलपुर में वर्षा से क्षतिग्रस्त विभिन्न सड़कों एवं पुलियाओं का स्थाई पुनः उद्धार कार्य एवं जिला जोधपुर में नगर परिषद/नगर पालिका के अर्न्तगत विभिन्न सडकों पर बी.टी./सी.सी निर्माण कार्य (दोष निवारण अवधि 5 वर्ष सहित) उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग में पंजीकृत संवेदकों एवं राज्य सरकार/केन्द्रीय सरकार के अधिकृत संगठनों के समकक्ष हो, से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेंट प्रक्रिया हेतु ऑन लाईन निविदा आमत्रिंत की जाती है। निविदा से संबंधित विवरण वेबसाईट www.eproc.rajasthan.gov.in एवं www.sppp.raj.nic.in पर देखा जा सकता है। इच्छुक संवेदकों को अपने डिजिटल हस्ताक्षर के माध्यम से वेबसाईट www.eproc.rajasthan.gov.in पर रजिस्टर करवाना आवश्यक है।

Package No.	NIB No.	UBN No.
RJ-13-04/SDRF/2024-25 Under Dn. Dholpur	PWD2425A3565	PWD2425WSOB12962
RJ-13-05/SDRF/2024-25 Under Dn. Bari	PWD2425A3565	PWD2425WSOB12963
Major Road Repair Work in Nagar Parishad Dholpur Pkg. No. RJ-13-01/CDIII-8443/LSGD/2024-25 Under DN Dholpur	PWD2425A3565	PWD2425WSOB12965

अधीक्षण अभियंता, सा.नि.वि. वृत धौलपुर
DIPR/C/180/2025

राजस्थान सरकार
कार्यालय आबकारी आयुक्त, राजस्थान,
आबकारी भवन, 2-गुनियावाला, पंचवटी, उदयपुर-313001
क्रमांक F.32(B)(1)(AP)EX/L/2024-25-03000part(6)/1424 दिनांकः 10.01.2025

पडत मदिरा की रिटेल ऑफ कम्पोजिट दुकानों के अनुज्ञापत्र हेतु ई-निविदा आमंत्रण सूचनाः-

सर्वसाधरण को सूचित कियाजाता है कि आबकारी एवं मद्य-संयम नीति वर्ष 2024-25 के अनुसार पड रही कम्पोजिट मदिरा दुकानों के लिए ई-निवदिा प्रक्रिया से बन्दोबस्त करने हेतु निम्नानुसार ई-निविदाऐं आमंत्रित की जाती है :-

1	निविदा दस्तावेज ऑनलाईन डाउनलोड करने की दिनांक व समय	दिनांक 11.01.2025 दोपहर 3.00 बजे से
2	निविदा दस्तावेज ऑनलाईन अपलोड करने की अन्तिम दिनांक व समय	दिनांक 15.01.2025 दोपहर 3.00 बजे तक
3	वित्तीय निविदा खोलने की दिनांक, समय व स्थान	दिनांक 15.01.2025 को दोपहर 4.00 बजे से संबंधित जिला आबकारी अधिकारी कार्यालय।

ई-निविदा में भाग लेने की शर्त-

1. यह निविदा वेबसाईट www.sppp.rajasthan.gov.in तथा विभागीय वेबसाईट https://excise.rajasthan.gov.in पर देखी/डाउनलोड की जा सकती है। उक्त निविदाएं वेबसाईट https://www.eproc.rajasthan.gov.in पर प्रस्तुत की जानी है। ई-निविदा में भाग लेने के लिए डिज

फर्जी-कॉल सेंटर के माध्यम से लोगों को ठगने वाले चार बदमाश गिरफ्तार

शिप्रापथ क्षेत्र में था कॉल सेंटर, ई-मित्र की आईडी से मुनाफे व कैशबैक का झांसा देकर करते थे ठगी

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर। राजधानी जयपुर की शिप्रापथ थाना पुलिस ने ठगी के एक कॉल सेंटर का शुक्रवार शाम पर्दाफाश किया है। जहां पुलिस ने ई-मित्र के नाम से खोले गए फेक कॉल सेंटर पर दबिश देकर चार आरोपियों को गिरफ्तार किया। पुलिस जानकारी में सामने आया है कि कॉल सेंटर के जरिए ई-मित्र की आईडी से प्रॉफिट के साथ कैश बैक का झांसा देकर रकम ठगी जाती थी। जो पिछले 6 महीने में 500 लोगों से फेक कॉल सेंटर गैंग 15 लाख रुपए कमाई कर चुकी है। पुलिस ने कॉल सेंटर से बडी संख्या में कम्प्यूटर, मोबाइल व अन्य सामान के साथ 78 हजार कैश बरामद किया है। मामले में फरार कॉल सेंटर ऑनर और वर्कर्स की तलाश में पुलिस टीमें दबिश दे रही है।

शिप्रापथ थाना पुलिस फर्जी कॉल सेंटर संचालित कर लोगों को ठगने वाले गिरोह को दबोचा।

- पुलिस के मुताबिक इस गैंग पिछले 6 महीने में 500 लोगों से फेक कॉल करके 15 लाख रुपए से ज्यादा रकम ठग चुकी है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर दक्षिण दिगंत आनंद ने बताया कि शिप्रापथ थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए कॉल सेंटर में साइबर फ्रॉड मामले में आरोपी दीपक (23) निवासी अशोक पुरा गली नंबर-1 सोडाला, संजय मेघवाल (22) निवासी काली पलटन मोहल्ला टोंक, नन्दवीर सैनी (22) निवासी रीको इंडस्ट्रियल एरिया मानसरोवर और विनोद बैरवा (23) निवासी मालपुरा जिला टोंक को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने कॉल सेंटर से 9 मोबाइल, 13 कम्प्यूटर, 1 लैपटॉप, वाईफाई, बायोमेट्रिक फिंगर प्रिंट मशीन, इंटरनेट कनेक्टर, बिजली के दो बोर्ड व ठगी के 78 हजार रुपए जब्त किए है। पुलिस दबिश के दौरान कॉल सेंटर पर ऑनर व अन्य वर्कर नहीं होने के चलते पकडे नहीं जा सके। पुलिस जांच में सामने आया है कि ई-मित्र की आईडी बनाकर देने का कॉल सेंटर के जरिए झांसा दिया जाता था। आईडी से प्रॉफिट से लेकर कैश बैक का लालच देते थे।

रजिस्ट्रेशन फीस के जरिए फ्रॉड की पहली किस्त 5-10 हजार रुपए ली जाती थी। जिसके बाद रुपए और खर्च करने की लगने पर एक-दो बार सुविधा देकर कैश बैक का लालच देकर मोटी रकम बैंक अकाउंट में जमा करवा लेते थे। रुपए वसूली के बाद कस्टमर का मोबाइल नंबर ब्लॉक कर देते थे। कुछ दिनों बाद पहले मोबाइल नंबर को बंद कर दूसरे मोबाइल नंबर का यूज शुरू कर देते थे। साइबर फ्रॉड कर गैंग के अभी तक करीब 500 लोगों से 15 लाख रुपए से अधिक की कमाई होने का पता चला है। पुलिस फरार आरोपियों की तलाश में दबिश दे रही है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर दक्षिण ने बताया कि पिछले काफी समय से साइबर हेल्पलाइन नंबर-1930 पर ई-मित्र सेवा के नाम पर साइबर फ्रॉड की सूचना मिल रही थी। जिस पर एसीपी मानसरोवर आदित्य काकड़े के सुपरविजन में शिकायतों का एनालासिस करवाया गया। साइबर सैल के हेड कांस्टेबल लोकेश कुमार की सूचना पर कांस्टेबल विजयपाल व प्रहलाद के साथ एसीपी ऑफिस (मानसरोवर) में तैनात हेड कांस्टेबल हंसराज की टीम बनाई गई। साइबर फ्रॉड करने वाले संदिग्धों के मोबाइल नंबरों से लोकेशन निकलवाई गई। साइबर सेल टीम की तरफ से गोपनीय सूचना प्राप्त की गई।

शिप्रापथ इलाके में विक्रमादित्य मार्ग अग्रवाल फार्म पर एक अपार्टमेंट की पहली मंजिल पर समाज सेवा केंद्र के नाम से फ्रॉड करने का पता चला। ई-मित्र के नाम पर फर्जी कॉल सेंटर चलाने पर शिप्रापथ थानाधिकारी अमित शर्मा के नेतृत्व में टीम ने दबिश दी। पुलिस ने साइबर फ्रॉड के लिए कॉल सेंटर पर मिले चारों आरोपियों को गिरफ्तार किया। कॉल सेंटर पर मिले मोबाइल-कंप्यूटर सहित अन्य सामान को जब्त किया गया। पूछताछ में आरोपियों ने ऑनर व अन्य वर्कर के कॉल सेंटर पर नहीं होना बताया। पिछले 6 महीने से इस कॉल सेंटर की संचालन होना बताया।

'यातायात नियमों की पालना करके राष्ट्र व समाज हित में सुरक्षार्थी बने विद्यार्थी'

अतिरिक्त महानिदेशक ट्रैफिक अनिल पालीवाल ने शुक्रवार को मानसरोवर स्थित आईआईएस स्कूल में विद्यार्थियों से सड़क सुरक्षा के बारे में संवाद किया।

- यातायात पुलिसकर्मी प्रेम सिंह ने बच्चों को सड़क सुरक्षा संकेतकों, आदेशात्मक रोड साइनेजेज, सूचनात्मक चेतावनी, गति सीमा, अवरोधकों पर वाहन ठहराव, सड़क मार्ग एवं हाइवे विनियमन, रिफ्लेक्टर उपयोग, पार्किंग नियम और ओवरटेक के बारे में जानकारी दी

जयपुर। राष्ट्र और समाज के तौर पर सुरक्षा को महत्व देना हम सबकी नैतिक जिम्मेदारी है। विद्यार्थी यातायात नियमों नियमों की पूर्ण पालना करते हुए सड़क मार्गों पर सुरक्षित आवाजाही करें, ट्रैफिक में अनुशासित और सतर्क रहकर वे सुरक्षित तरीके से स्वयं भी अपने गंतव्य स्थल पहुंचे और आवागमन में अन्य चालकों और राहगीरों की सुरक्षा का भी पूरा ध्यान रखें, जिससे दूसरों को भी कोई असुविधा न हों और अवांछित दुर्घटनाओं से बचा जा सके।

यह बात पुलिस मुख्यालय में अतिरिक्त महानिदेशक (एडीजी) ट्रैफिक अनिल पालीवाल ने शुक्रवार को जयपुर में मानसरोवर स्थित आईआईएस स्कूल में राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह (1 से 31 जनवरी) के सिलसिले में आयोजित अवेयरनेस कार्यक्रम में विद्यार्थियों और युवाओं को मोटिवेट करते हुए कहीं।

एडीजी (ट्रैफिक) पालीवाल ने कहा कि विद्यार्थी, युवा और आमजन सुरक्षित कार्य करने की आदत डालें, खुद भी सुरक्षित रहे, दूसरों को भी सुरक्षित रखें और यातायात में सभी की सुरक्षा का ख़्याल रखें। स्टूडेंट्स से गलत ड्राइविंग पर दूसरों को टोकने और यातायात नियमों के उल्लंघन पर सही जगह शिकायत करने के साथ ही सोसाइटी को हर तरह से सुरक्षित बनाने में योगदान की अपील करते हुए उन्होंने कहा कि आप जितने जागरूक सिटीजन बनेंगे, उतनी हमारी सेफ्टी बढ़ेगीं। श्री पालीवाल ने इस दौरान इंटरेक्टिव सेशन में स्टूडेंट्स और बालवाहिनी चालकों के समूह से संवाद करते हुए उनकी जिज्ञासाओं का समाधान किया और सुरक्षित यातायात के सम्बंध में उनके सुझावों को सराहा।

कार्यक्रम में एडीजी पालीवाल तथा यातायात पुलिस के अधिकारियों और पुलिसकर्मियों ने छात्र-छात्राओं को यातायात जागरूकता के सम्बंध में प्रचार सामग्री का वितरण किया। प्राचार्य नीति जोधा ने एडीजी पालीवाल और अन्य अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम में एडिशनल डीसीपी यातायात रानू शर्मा, एडिशनल एसपी सुरेन्द्र सिंह, पुलिस निरीक्षक ब्रजेश कुमार सहित स्कूल के टीचर्स, स्टूडेंट्स, अभिभावक और गण्यमान्य नागरिक मौजूद रहे। इस दौरान यातायात पुलिसकर्मी प्रेम सिंह ने बच्चों को सड़क सुरक्षा संकेतकों, आदेशात्मक रोड साइनेजेज, सूचनात्मक चेतावनी, गति सीमा, अवरोधकों पर वाहन ठहराव, सडक मार्ग एवं हाइवे विनियमन, रिफ्लेक्टर उपयोग, पार्किंग नियम, ओवरटेक एवं यातायात पुलिसकर्मी डिप्लोय न होने की दशा में भी यातायात निर्देश की पूर्ण पालना के बारे में विशेष प्रस्तुतीकरण के माध्यम से जागरूक किया।

कृष्ण कुणाल ने किया विद्या समीक्षा केन्द्र की कार्यप्रणाली का मूल्यांकन

जयपुर (कासं)। राजस्थान में शैक्षिणक गतिविधियों की विद्यालय स्तर से ब्लॉक, जिला एवं राज्य स्तर तक मॉनिटरिंग सपोर्ट एवं सूचना के आदान-प्रदान के लिए डॉ.राधाकृष्णन शिक्षा संकुल में स्थापित विद्या समीक्षा केंद्र की स्कूल शिक्षा एवं भाषा विभाग के शासन सचिव कृष्ण कुणाल ने शुक्रवार को समीक्षा की।

उन्होंने वीएसके के संचालन, कार्य प्रणाली और प्रबंधन प्रणाली की समीक्षा की। उन्होंने वीएसके के डेटा डिलिवरी, मैनेजमेंट, वर्गीकृत जानकारी, एआई आधारित इनसाइट और चैट बॉक्स, टूल्स आदि पर विस्तृत जानकारी ली और आवश्यक दिशा निर्देश दिए। वीएसके सेटअप के लिए कृष्ण कुणाल ने टीम को बधाई देते हुए अब तक किए गए कार्यों की सराहना की।

उन्होंने कुछ आवश्यक टूल जोड़ने और डेटा एनालिसिस को बेहतर करने की सलाह भी दी। उन्होंने आधुनिक शिक्षा प्रणाली के दौर में वीएसके की आवश्यकताओं पर जोर देते हुए कहा कि भारत सरकार के निर्देशों के अनुसार राजस्थान में भी वीएसके के माध्यम से शिक्षक एवं शिक्षार्थी की ऑनलाइन मॉनिटरिंग जरूरी है। इससे शिक्षण पद्धित में सुधार के साथ पारदर्शिता भी लाई जा सकेगी।

स्कूल शिक्षा एवं भाषा विभाग के शासन सचिव कृष्ण कुणाल और राज्य परियोजना निदेशक एवं आयुक्त राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद अविचल चतुर्वेदी ने विद्या समीक्षा केंद्र परिसर का निरीक्षण किया।

कृष्ण कुणाल ने वीएसके परिसर में नोडल अधिकारी नियुक्त करने के निर्देश भी दिए। इससे पहले शासन सचिव सहित राज्य परियोजना निदेशक एवं आयुक्त राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद अविचल चतुर्वेदी ने विद्या समीक्षा केंद्र परिसर का निरीक्षण भी किया। इस मौके पर आयुक्त मिड डे मील विश्व मोहन शर्मा , निदेशक माध्यमिक शिक्षा आशीष मोदी, निदेशक प्रारंभिक शिक्षा श्री सीताराम जाट, निदेशक साक्षरता मेघराज सिंह रतनू, सचिव पाठ्य पुस्तक मंडल मूलचंद वर्मा, अतिरिक्त राज्य परियोजना निदेशक डॉ.रौनक बैरागी सहित अन्य उपस्थित रहे।

दूध के 70 प्रतिशत सैंपल में मिली पानी की मिलावट

जयपुर। राजस्थान कोऑपरेटिव डेयरी फैडरेशन (आरसीडीएफ) की प्रशासक एवं प्रबंध निदेशक श्रुति भारद्वाज की पहल पर पूरे राजस्थान में चल रहे "दूध का दूध, पानी का पानी" अभियान की जयपुर में उत्साहजनक शुरुआत हुई।

जयपुर डेयरी द्वारा शुक्रवार सुबह पांच प्रमुख स्थानों- करधनी शॉपिंग सेंटर मालवीय नगर, एनआरआई सर्किल प्रताप नगर, वीटी रोड मानसरोवर, प्रेम नगर पुलिया आगरा रोड, और जवाहर नगर डेयरी बूथ नंबर 8116 पर अभियान की शुरुआत की गई। अभियान को लेकर जनता में भारी उत्साह देखा गया, और बड़ी संख्या में नागरिकों ने अपने दूध की जांच करवाई।

अभियान के दौरान लिए गए सैंपलों की जांच में यह पाया गया कि शहर के विभिन्न स्थानों पर 70 प्रतिशत दूध में पानी की मिलावट थी। इन सैंपलों में से अधिकांश में 35 से 40 प्रतिशत तक पानी की मिलावट पाई गई। यह आंकड़े चिंताजनक हैं और यह दर्शाते हैं कि दूध में पानी की मिलावट कर उपभोक्ताओं को ठगा जा रहा है। गौरतलब है कि यह अभियान 30 जनवरी तक लगातार जारी रहेगा।

महाकुंभ में जा रहे श्रद्धालु होटल, गेस्ट हाऊस बुकिंग के फर्जी लिंक और वेबसाइट से रहें सावधान

जयपुर। आगामी दिनों में संगम नगरी प्रयागराज में होने जा रहे महाकुंभ में जा रहे श्रद्धालुओं को ठगने के लिए जालसाजो ने जाल बिछा दिया है। फर्जी लिंक एवं वेबसाइट के द्वारा होटल, धर्मशाला, गेस्ट हाउस की बुकिंग के नाम पर धोखाधड़ी की जा सकती है। राजस्थान पुलिस की साइबर शाखा द्वारा इस संबंध में एडवाइजरी जारी की गई है कि ऐसी वेबसाइट एवं लिंक से सतर्क रहने की आवश्यकता है। प्रशासन द्वारा जारी किए गए कांटेक्ट नम्बरों एवं ऑफिशल वेबसाइट से ही बुकिंग करावे।

महानिदेशक पुलिस, साइबर क्राईम हेमंत प्रियदर्शी ने बताया कि आगामी दिनों में संगम नगरी प्रयागराज में महाकुंभ 2025 का शुभारंभ 13 जनवरी से होने जा रहा है। करीब 45 दिन तक चलने वाले इस महाकुंभ मे करोंडो श्रद्वालुओं के आने की सम्भावना है। डी.जी.पी. प्रियदर्शी ने बताया कि महाकुंभ में आने वाले श्रद्वालुओं के ठहरने के लिए होटल, धर्मशाला एवं कुंभ क्षेत्र में बने होटल, धर्मशाला, गेस्ट हाउस व टेंट सीटी के कॉटेज की ऑनलाईन बुकिंग शुरू हो गयी है, इसके

- राजस्थान पुलिस ने आमजन को साइबर सुरक्षा के लिए जागरूक करते हुए एडवाइजरी जारी की

चलते ऑनलाईन बुकिंग को लेकर साइबर अपराधी भी सक्रिय हो गये है। साइबर ठगों द्वारा सस्ते दामों पर होटल, धर्मशाला, टैंट सीटी व कॉटेज की बुकिंग कराने के नाम पर महाकुंभ जाने वाले श्रद्वालुओं को फर्जी लिंक व वेबसाइट के जरिये ठगी का शिकार बनाकर लोगो से एडवांस के नाम पर धनराशि प्राप्त कर साइबर धोखाधडी कर रहे है। प्रियदर्शी ने बताया कि आमजन की सुविधा के लिए उत्तर प्रदेश पुलिस प्रशासन द्वारा जारी लिंक में उल्लेखित होटल, धर्मशाला, कॉटेज, एवं गेस्ट हाउस से ही एडवास बुकिंग करावें। प्रशासन द्वारा जारी सूची में इनके नाम, पता एवं कॉन्टैक्ट नंबर दिये है जो ऑफिशियल वेबसाइट पर भी मौजूद है। यदि कोई व्यक्ति साइबर क्राइम का शिकार हो जाता है तो 1930 पर शिकायत करें।

सार-समाचार

वायुसेना विद्यालय में नाटक का मंचन

जयपुर। आमेर रोड स्थित वायुसेना विद्यालय में शुक्रवार को "आवाज" नाटक का मंचन किया गया। स्कूल के मीडिया प्रभारी घनश्याम शर्मा ने बताया कि विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में हिंदी सदन की ओर से आयोजित इस नाटक में दहेज प्रथा, बेटे और बेटियों में अंतर मानने वालों पर करारा व्यंग्य किया गया। नाटक में कक्षा नवमीं की छात्राओं के जीवंत अभिनय ने सभी दर्शकों को तालियां बजाने पर मजबूर कर दिया। नाटक के संदेश - "इस अभिनय का है यह संदेश, लड़का-लडकी में करो न भेद, तभी तो उन्नत होगा भारत देश।" कार्यक्रम के अंत में प्राचार्या सीमा भाटी ने सभी प्रतिभागियों के अभिनय की सराहना कर इस तरह के अधिकाधिक कार्यक्रम करवाने पर जोर दिया।

केंद्रीय जेल का निरीक्षण किया

जयपुर। नालसा व रालसा के निर्देश पर बोर्ड ऑफ विजिटर्स के अध्यक्ष एवं सदस्यगण चन्द्र प्रकाश श्रीमाली, अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, जयपुर महानगर द्वितीय, पल्लवी शर्मा, सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, जयपुर महानगर द्वितीय, डॉ. इन्द्रा गुप्ता, डिप्टी सीएमएचओ, सुमित तिवाड़ी, ई.ई., पीडब्ल्यूडी, बी.पी.चन्देल, संयुक्त सचिव, समाज कल्याण विभाग, बिहारी लाल, एडीईओ, शिक्षा विभाग, आसिफ शेख, जे.एल.सी, आशाराम चौधरी, अति.डी.सी.पी., जयपुर पूर्व, मुकेश मूंड, अति. जिला कलेक्टर, दक्षिण, भवानी सिंह शेखावत, जिला औद्योगिक अधिकारी, जयपुर आदि द्वारा केन्द्रीय कारागृह एवं महिला बंदी सुधार गृह, जयपुर में जातिगत भेदभाव नहीं करने एवं सर्वोच्च न्यायालय द्वारा जारी निर्णय की पालना में निरीक्षण किया गया एवं कारागृह स्टाफ को आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए गए। इसी क्रम में अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, जयपुर महानगर द्वितीय और सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, जयपुर महानगर द्वितीय द्वारा जिला कारागृह का मासिक निरीक्षण किया गया। केंद्रीय कारागृह जयपुर का निरीक्षण कर बंदियो को दी जा रही आवश्यक सुविधाओं की जानकारी प्राप्त की। निरीक्षण के दौरान अध्यक्ष व सचिव द्वारा बंदीगण से वार्तालाप किया गया तथा उन्हें कारागृह में दी जा रही मूलभूत सुविधाएं जैसे की चिकित्सकीय सुविधा एवं साफ सफाई व्यवस्था आदि के बारे में पूछताछ की एवं कारागृह स्टाफ को इनमें और सुधार करने के लिए आवश्यक दिशा निर्देश प्रदान किए।

लक्ष्मीनारायणजी मंदिर में पौषबड़ा आज

जयपुर। सी-स्कीम में भगत सिंह मार्ग स्थित मंदिर श्री लक्ष्मी नारायणजी में शनिवार को पौषबड़ा प्रसादी का कार्यक्रम आयोजित होगा। पंडित प्रमोद कुमार शर्मा ने बताया कि मंदिर पसिसर में भव्य सजावट की जायेगी और शाम को भगवान को भोग लगाने के बाद 6 बजे से प्रसादी आमजन में वितरित की जायेगी।

सुंदरकांड व पौषबड़ा महोत्सव 12 को

जयपुर। श्री हरि नारायण महादेव मंदिर सेवा समिति एवं श्री हरि नगर विकास समिति जयपुर के अध्यक्ष राम गुलाम सिंह ने बताया कि भक्तजनों के सामूहिक समर्पण भाव से 11 जनवरी को सुंदरकांड पाठ का आयोजन किया जाएगा। साथ ही दूसरे दिन 12 जनवरी को विशाल पौषबड़ा प्रसादी का आयोजन किया जाएगा।

वाहन की टक्कर से अधेड़ की मौत

जयपुर। टोंक फाटक पर अज्ञात वाहन ने एक राहगीर को टक्कर मार दी। इससे उसकी मौत हो गई। पुलिस के अनुसार वार्ड 42 हीरापथ मानसरोवर निवासी 56 वर्षीय जीवित राम तहलवानी 9 जनवरी को किसी काम से टोंक फाटक गया था। वहां पर किसी अज्ञात वाहन ने उसे टक्कर मार दी। गंभीर घायल जीवितराम ने अस्पताल में इलाज के दौरान दम तोड़ दिया।

एल.आई.सी. बीमा सखी योजना से जुड़ी 50 हजार से अधिक महिलाएं

जयपुर (कासं)। भारतीय जीवन बीमा निगम की "बीमा सखी" योजना से 50 हजार से अधिक महिलाएं जुड़ चुकी हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गत 9 दिसंबर को पानीपत में इस योजना का शुभारंभ किया था। बीमा सखी योजना महिला सशक्तिकरण के माध्यम से विकसित भारत की ओर एक कदम हैं, जो परिवारों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करेगी।

भारतीय जीवन बीमा निगम के सीईओ और एम.डी. सिद्धार्थ महांति ने बताया कि एल.आई.सी. की इस योजना को लॉन्च हुए एक माह का समय बीत चुका है, इस अवधि में 52 हजार 511 पंजीकरण हुए है। इनमें से 27695 बीमा सखियों को पॉलिसी विक्रय के लिए नियुक्ति पत्र भी जारी किए जा चुके हैं। करीब 14583 बीमा सखियों ने पॉलिसी विक्रय भी शुरू कर दिया है।

उन्होंने बताया कि एक वर्ष के भीतर देश की प्रत्येक पंचायत को कम से कम एक बीमा सखी से कवर करने का लक्ष्य रखा है। एलआईसी बीमा सखियों को उचित कौशल प्रदान करके तथा डिजिटल उपकरणों से सशक्त बनाकर मजबूत बना रही है। इस योजना में किए गए बीमा व्यवसाय पर अर्जित कमीशन के अलावा तीन वर्षों तक मासिक स्टायपेंड का लाभ भी मिलेगा।

गहलोत का बयान हास्यास्पद : राठौड़

जयपुर। पूर्व नेता प्रतिपक्ष एवं भाजपा नेता राजेन्द्र राठौड ने कहा कि रिफाइनरी पर पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत का दिया गया बयान न केवल हास्यास्पद है बल्कि 'उल्टे बांस बरेली को' वाली कहावत को सार्थक करता है। उन्होंने कहा कि पूर्ववर्ती भाजपा सरकार के समय वर्ष 2017 में रिफाइनरी का शिलान्यास हुआ था जो कि अक्टूबर 2022 में पूर्ण होनी थी। कांग्रेस ने जानबूझकर रिफाइनरी परियोजना को लटकाया-भटकाया और इसकी लागत 36 हजार करोड़ रूपये से बढ़कर 72 हजार करोड़ हो गई। अशोक गहलोत ने विधानसभा में 3 बार परियोजना शुरू करने की तारीख तय की, अब हमारी सरकार जल्द इसकी सौगात देगी।

रास बिहारी शर्मा तीसरी बार निर्विरोध प्रदेशाध्यक्ष

जयपुर। राजस्थान टैंट डीलर्स किराया व्यवसायी समिति जयपुर के त्रैवार्षिक चुनाव शुक्रवार को विद्याधर नगर स्थित शकुन मैरिज बैंक्वेट में संपन्न हुए। इनमें रास बिहारी शर्मा तृतीय बार प्रदेशाध्यक्ष निर्विरोध निर्वाचित हुए। राजस्थान के 50 जिलों के पदाधिकारियों द्वारा रास बिहारी शर्मा को निर्विरोध प्रदेशाध्यक्ष चुना। इसके बाद रास बिहारी शर्मा ने नयी कार्यकारिणी की घोषणा की। इसमें रवि जिंदल को चेयरमैन, पर्वत सिंह भाटी को संरक्षक, राजकुमार तालुका व मंजीत सिंह को वरिष्ठ उपाध्यक्ष, रजनीश शर्मा को महामंत्री, मुकेश छीपा को कोषाध्यक्ष, रीमा गर्ग को महिला विंग की अध्यक्ष व 41 सदस्यों की कोर कमेटी भी चुनी गई।

विशेष शिक्षा में डिप्लोमा रखने वालों के आवेदन स्वीकार करने के आदेश

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने तृतीय श्रेणी विशेष शिक्षक लेवल 2 भर्ती के लिए आयोजित रीट-2024 में विशेष शिक्षा में डिप्लोमा रखने वाले अभ्यर्थियों के आवेदन स्वीकार करने के आदेश दिए हैं। अदालत ने मामले में माध्यमिक शिक्षा निदेशक, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, एनसीटीई और राजस्थान पुनर्वास परिषद से जवाब तलब किया है। सीजे एमएम श्रीवास्तव और जस्टिस उमाशंकर व्यास की खंडपीठ ने यह आदेश हितेश शर्मा व अन्य की ओर से दायर याचिका पर प्रारंभिक सुनवाई करते हुए दिए। याचिका में अधिवक्ता रघुनंदन शर्मा ने अदालत को बताया कि पंचायती राज विभाग ने गत 24 सितंबर को साल 1996 के पंचायत नियम के नियम 266 में संशोधन कर तृतीय श्रेणी विशेष शिक्षक लेवल 2 के लिए विशेष शिक्षा में बीएड अनिवार्य कर दी। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने शिक्षक भर्ती के लिए रीट-2024 की है। जिसमें तृतीय श्रेणी विशेष शिक्षक लेवल 2 के लिए स्नातक के साथ बीएड की योग्यता रखी है।

आई.एफ.एस. से मारपीट मामले में राजावत को मिली सजा स्थगित

जयपुर (कासं)। राजस्थान हाईकोर्ट ने 31 मार्च, 2022 को कोटा के नयापुरा में भारतीय वन सेवा के अधिकारी से मारपीट के मामले में भाजपा नेता भवानी सिंह राजावत और एक अन्य महावीर सुमन को मिली तीन साल की सजा को स्थगित कर दिया है। जस्टिस भुवन गोयल ने यह आदेश भवानी सिंह राजावत व महावीर की ओर से दायर अपील में पेश सजा स्थगन प्रार्थना पत्र को स्वीकार करते हुए दिए। कोटा की एससी, एसटी कोर्ट ने गत 19 दिसंबर को अपीलार्थियों को गत 19 दिसंबर को सजा सुनाई थी। अदालत ने कहा कि अपील के निस्तारण में लंबा समय लगने की संभावना है। ऐसे में अपीलार्थियों की सजा को अपील में निर्णय होने तक स्थगित किया जाता है।

अपील के साथ पेश प्रार्थना पत्र में अधिवक्ता दीपक चौहान ने अदालत को बताया कि प्रकरण में उन्हें झूठा फंसाया गया है। उनके दोषसिद्ध करने का कोई साक्ष्य भी पत्रावली पर मौजूद नहीं है। इसके बावजूद भी विशेष न्यायालय ने उन्हें सजा सुनाई है। सजा के आदेश के खिलाफ पेश अपील के निस्तारण में लंबा समय लगने की संभावना है। ऐसे में उनकी सजा को स्थगित किया जाए। वहीं सरकारी वकील ने सजा स्थगन प्रार्थना पत्र को खारिज करने की गुहार की। दोनों पक्षों की बहस सुनने के बाद अदालत ने अपीलार्थियों की सजा को स्थगित कर दिया है।

आईएफएस रवि कुमार मीना ने 31 मार्च, 2022 को कोटा के नयापुरा थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। जिसमें कहा था कि वह अपने कार्यालय में सरकारी काम कर रहा था। इस दौरान भवानी सिंह राजावत अन्य लोगों के साथ आया और उससे मारपीट की व राजकार्य में बाधा पहुंचाई। रिपोर्ट पर कार्रवाई करते हुए पुलिस ने स्थानीय अदालत में राजावत सहित अन्य के खिलाफ आरोप पत्र पेश किया।

वहीं अदालत ने सभी पक्षों को सुनने के बाद गत 19 दिसंबर को राजावत व महावीर को तीन साल की सजा सुनाई थी। इसके साथ ही नियमानुसार आदेश की अपील करने के लिए एक माह के लिए सजा को स्थगित कर दिया था।

पोल गिरने से सी-स्कीम में बिजली गुल

सी-स्कीम इलाके में अशोक नगर स्थित सुभाष मार्ग पर शुक्रवार को बिजली का पोल गिरने से यातायात बाधित रहा। इस दौरान पूरे इलाके की बिजली कई घंटों तक गुल रही। बाद में जब स्थानीय लोगों ने बिजली को सूचना दी तो कर्मचारियों ने नया पोल लगाकर बिजली के तारों को पुनः व्यवस्थित किया।

ARBiT
it happens here...

NATIONAL ROAD SAFETY WEEK

Road Safety Week

Road Safety Week (Sat, Jan 11th, 2025 - Fri, Jan 17th, 2025) in India is a crucial campaign aimed at promoting safe driving and reducing the high number of traffic accidents across the country. This week-long event brings attention to the shared responsibility of drivers, pedestrians, and passengers in creating safer roads. It encourages everyone to adopt safe driving habits such as following speed limits, using seat belts, and avoiding distractions like mobile phones. The staggering statistics underscore the importance of this initiative. India records over 150,000 deaths due to road accidents annually.

राष्ट्रदूत
SATURDAY
11 January 2025
A-B

#DATA PROTECTION

India's New Digital Rules

Social media apps and other platforms tend to keep your data for years but the new personal data rules will look to change that.

Data fiduciaries such as e-commerce, online gaming and social media platforms will have to erase personal data of a user three years after it is no longer required, according to the draft rules of the Digital Personal Data Protection (DPDP) Act.

The draft rules apply to e-commerce entities having not less than 2 crore registered users in India, online gaming intermediary having not less than 50 lakh registered users in India and social media intermediary having not less than 2 crore registered users in the country. These provisions pertain to Section 8 of the draft rules.

These data fiduciaries have to notify users at least 48 hours before erasing their data, allowing them to request for retaining the data if they wish to, like their profiles, email addresses and phone numbers, to access money, goods or services.

"At least forty-eight hours before completion of the time period for erasure of personal data under this rule, the Data Fiduciary shall inform the Data Principal that such personal data shall be erased upon completion of such period, unless she logs into her user account or otherwise initiates contact with the Data Fiduciary for the performance of the specified purpose or exercises her rights in relation to the processing of such personal data," according to draft rules. A data fiduciary will protect personal data in its possession or under its control, including in respect of any processing undertaken by it or on its behalf by a data processor, by taking reasonable security safeguards to prevent personal data breach.

"On becoming aware of any personal data breach, the Data Fiduciary shall, to the best of its knowledge, intimate to each affected Data Principal, in a concise, clear and plain manner and without delay, through her user account or any mode of communication registered by her with the Data Fiduciary," the draft rules read.

They need to inform users about the description of the data breach, including its nature, extent and the timing and location of its occurrence, the consequences relevant to her, that are likely to arise from the breach, the measures implemented and being implemented by the Data Fiduciary, if any, to mitigate risk, the safety measures that she may take to protect her interests, and business contact information of a person who is able to respond on behalf of the Data Fiduciary, to queries, if any, of the Data Principal. The DPDP Act was passed in Parliament in August 2023 and the government is seeking feedback on the draft rules through the MyGov portal till February 18, 2025.

Map of India in 1765.

"Ere we came back from Paniput And left a kingdom there"

PART: 1

The battle lasted for several days and involved over 125,000 troops, protracted skirmishes occurred, with losses and gains on both sides. The Afghan army ultimately emerged victorious from the battle after successfully destroying several Maratha flanks. The extent of the losses on both sides is heavily disputed by historians, but it is believed that between 60,000 and 70,000 troops were killed in the fighting, while the numbers of injured and prisoners taken vary considerably.

Baji Rao's army under the command of cousin, Sadashivrao Bhau.

Rudyard Kipling.

Anjali Sharma
Senior Journalist & Wildlife Enthusiast

#THE BATTLE OF ALL BATTLES

Grant Duff bunglow in Satara.

The valour displayed by the Marathas in the third battle of Panipat was extolled by Ahmad Shah Abdali in his letter to his ally, Madho Singh, the king of Jaipur. He speaks of it.

"The Marathas fought with the greatest valour, which was beyond the capacity of other races. These dauntless blood-shedders did not fall short in fighting and doing glorious deeds. Suddenly, the breeze of victory began to blow, and the wretched Deccanis suffered defeat.

The battle was referred to in Rudyard Kipling's poem 'With Scindia to Delhi.'

"Our hands and scarfs were saffron-dyed for signal of despair,
When we went forth to Paniput to battle with the Mlech,
Ere we came back from Paniput and left a kingdom there."

British (Scots) Colonial Officer and Historian in India, Son of John Grant (d. 1799) and Margaret Duff educated at Marischal College in Aberdeen. Joined the E.I.C.'s military service in Bombay in 1805. He 'was at the storming of Maliah, 1808, became Adjutant and Interpreter of his regiment, was Assistant to Mountstuart Elphinstone' in Poona. 'As captain, he served against the Peshwa, Baji Rao, when the latter was dethroned in 1818, and was then made Resident of Satara, administering the state in the Raja's name till 1822, and making treaties with Satara jagirdars. After five years, he retired to Scotland" in c. 1823 and wrote there his book. He took the additional names, Duff and Cunninghame, on succeeding to landed estates. He knew Marathi, Urdu and Persian. Married, two daughters and one son, Mountstuart Elphinstone Grant-Duff (1829-1906) was M.P. and Governor of Madras. In an interview in his book, he has confirmed the massive numbers of soldiers and civilians that perished in this battle of battles. It is, however, also remembered as a scene of valour on both sides. Atai Khan, the adopted son of the Wazir Shah Wali Khan, was said to have been killed during this time, when Yeshwantrao Pawar climbed atop his elephant and struck him down. Santaji Wagh's corpse was found with over 40 mortal wounds.

> The Marathas, under the command of Sadashivrao Bhau, responded by gathering an army of between 45,000 and 60,000, which was accompanied by roughly 200,000 non-combatants, a number of whom were pilgrims desirous of making pilgrimages to Hindu holy sites in northern India.

The Third Battle of Panipat took place on 14 January, 1761, between the Maratha Confederacy and the invading army of the Durrani Empire. The battle took place in and around the city of Panipat, approximately 97 kilometres (60 mi) north of Delhi. The Afghans were supported by three key allies in India, Najib ad-Dawlah, who persuaded the support of the Rohilla chiefs, elements of the declining Mughal Empire, and most prized, the Oudh State under Shuja-ud-Daula. The Maratha army was led by Sadashivrao Bhau, who was third-highest authority of the Maratha Confederacy after the Chhatrapati and the Peshwa. The bulk of the Maratha army was stationed in the Deccan Plateau with the Peshwa. Militarily, the battle pitted the artillery, musketry, and cavalry of the Marathas against the heavy cavalry, musketry (jezail) and mounted artillery (zamburak) of the Afghans and the Rohillas led by Abdali and Najib ad-Dawlah. The battle is considered to have been one of the largest and most eventful, fought in the 18th century, and it had, perhaps, the largest number of fatalities in a single day reported in a classic formation battle between two armies. The battle lasted for several days and involved over 125,000 troops, protracted skirmishes occurred, with losses and gains on both sides. The Afghan army ultimately emerged victorious from the battle after successfully destroying several Maratha flanks. The extent of the losses on both sides is heavily disputed by historians, but it is believed that between 60,000 and 70,000 troops were killed in the fighting, while the numbers of injured and prisoners taken vary considerably. According to the single-best eyewitness chronicle, *the Bakhar* by Shuja-ud-Daula's Diwan Kashi Raja, about 40,000 Maratha prisoners were collectively slaughtered on the day after the battle. British historian Grant Duff includes an interview of a survivor of these massacres in his *History of the Marathas* and generally corroborates this number. Shejwalkar, whose monograph *Panipat 1761* is often regarded as the single-best secondary source on the battle, says that "not less than 100,000 Marathas (soldiers and non-combatants) perished during and after the battle."

> According to the single-best eyewitness chronicle, *the bakhar* by Shuja-ud-Daula's Diwan Kashi Raja, about 40,000 Maratha prisoners were collectively slaughtered on the day after the battle. British historian Grant Duff includes an interview of a survivor of these massacres in his *History of the Marathas.*

Extent of the Maratha Confederacy, 1760

The 27-year Mughal-Maratha war (1680-1707) led to rapid territorial loss of the Maratha Empire to the Mughal Emperor Aurangzeb. However, after his death in 1707, this process reversed following the Mughal succession war between the sons of Aurangzeb. By 1712, Marathas quickly started retaking their lost lands. Under Peshwa Baji Rao, Gujarat, Malwa and Rajputana came under Maratha control. Finally, in 1737, Baji Rao defeated the Mughals on the outskirts of Delhi and brought much of the former Mughal territories in the south of Agra under Maratha control. Baji Rao's son, Balaji Baji Rao, further increased the territory under Maratha control by invading Punjab in 1758. The changing circumstances of the Maratha forces and the declining position of the Mughal kingdom are clear from this document.

Raghunath Rao's letter to the Peshwa, 4 May, 1758.

Lahore, Multan and other subahs on eastern side of Attock are under our rule for the most part, and places, which have not come under our rule, we shall soon bring under us. Ahmad Shah Durrani's son, Timur Shah Durrani and Jahan Khan, have been pursued by our troops, and their troops completely looted. Both of them have now reached Peshawar with a few broken troops. So, Ahmad Shah Durrani has returned to Kandahar with some 12-14 thousand broken troops. Thus, all have risen against Ahmad who has lost control over the region. We have decided to extend our rule up to Kandahar. This brought the Marathas into direct confrontation with the Durrani empire of Ahmad Shah Abdali (also known as Ahmad Shah Durrani). In 1759, he raised an army, the core of which was from the Qizilbash, and recruited other troops such as the Pashtun tribes, Kurds, and Uzbeks, and made several gains against the smaller Maratha garrisons in Punjab. He then joined his Indian allies, the Rohillas of the Gangetic Doab, the Muslims of Northern India, and Shuja-ud-Daula, forming a broad coalition against the Marathas.

To counter this, Raghunath Rao was supposed to go north to handle the situation. Raghunath Rao asked for large number of soldiers, which was denied by Sadashivrao Bhau, his cousin and Diwan of Peshwa. Therefore, he declined to go. Sadashivrao Bhau was instead made commander-in-chief of the Maratha Army, under whom the Battle of Panipat was fought.

The Marathas, under the command of Sadashivrao Bhau, responded by gathering an army of between 45,000 and 60,000, which was accompanied by roughly 200,000 non-combatants, a number of whom were pilgrims, desirous of making pilgrimages to Hindu holy sites in northern India. The Marathas started their northward journey from Partur on 14 March, 1760. Both sides tried to get the Nawab of Awadh, Shuja-ud-Daulah, into their camp. By late July, Shuja-ud-Daulah made the decision to join the Afghan-Rohilla coalition, preferring to join what was perceived as the 'army of Islam.' This was strategically a major loss for the Marathas, since Shuja provided much-needed finances for the long Afghan stay in North India. It is doubtful whether the Afghan-Rohilla coalition would have the means to continue their conflict with the Marathas without Shuja's support.

To be continued...

rajeshsharma1049@gmail.com

Sadashivrao Bhau.

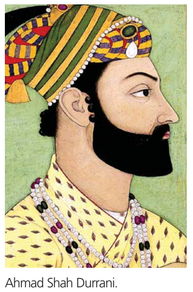

Ahmad Shah Durrani.

#SPACE COMMERCIALISATION

Humans will soon be able to Mine on the Moon. But should we?

Now is the time to create rules and regulations that will protect humanity's shared future in space and ensure that the Moon remains a symbol and inspiration for generations to come.

By the end of this decade, nations and private companies may well be mining the surface of the Moon. But as space becomes accessible to more nations and corporations, we need to stop and ask ourselves what commercial activities we want to allow, including on the Moon. Now is the time to create rules and regulations that will protect humanity's shared future in space and ensure that the Moon remains a symbol and inspiration for generations to come.

1. Why Mine the Moon?

NASA's multibillion dollar 'Artemis program' isn't just about sending astronauts back to the Moon. It's about paving the way for mining operations. China is also on a similar trajectory.

All of this has set in motion a new lunar race, with private companies competing to figure out how to extract the Moon's resources, potentially selling it back to governments in a cosmic supply chain.

Currently, all supplies for space exploration are shipped from Earth, making essentials like water and fuel eye-wateringly expensive. By the time a single litre of water reaches the Moon, its cost beats that of gold. But by converting water ice on the Moon into hydrogen and oxygen, we can refuel spacecraft on-site. This could make deeper space journeys, especially to Mars, far more feasible. The Moon's wealth of rare Earth metals, essential for technologies like smartphones, also means that *lunar mining* could ease the strain on Earth's dwindling reserves.

Private companies might beat space agencies to the punch, a start-up could be mining the Moon before NASA lands its next astronaut.

2. Could Mining change how we see the Moon from Earth?

When material is extracted from the Moon, dust gets kicked up. Without an atmosphere to slow it down, this lunar dust can travel vast distances. That surface material is 'space weathered' and duller than the more reflective material beneath. Disturbing the lunar dust means that some patches of the Moon may appear brighter, where the dust has been kicked up, while other patches may appear more dull, if dust resettles on top. Even small-scale operations might disturb enough dust to create visible changes over time. Managing lunar dust will be a crucial factor in ensuring sustainable and minimally disruptive mining practices.

3. Who Owns the Moon?

The Outer Space Treaty (1967) makes it clear that no nation can claim to 'own' the Moon (or any celestial body). However, it is less clear whether a company extracting resources from the Moon violates this non-appropriation clause. Two later agreements take up this issue.

- The *1979 Moon Treaty* claims the Moon and its natural resources as 'common heritage of mankind.' This is often interpreted as an explicit ban on commercial lunar mining.
- The *2020 Artemis Accords*, however, allow for mining while reaffirming the Outer Space Treaty's rejection of any claims of ownership over the Moon itself.

The Outer Space Treaty also notes that the exploration of space should benefit everyone on Earth, and not just the wealthier nations and corporations be able to get there.

When it comes to resource extraction, some argue that this means all nations should share in the bounty of any future lunar mining endeavour.

4. What would Miners' lives be like on the Moon?

Imagine you've worked 12 hours straight in hot and dirty conditions! You are dehydrated, hungry and overwhelmed. Some of your co-workers have collapsed or been injured due to exhaustion. You all wish you could just get another job with good safety standards, fair pay and reasonable hours. But you can't. You're stuck in space. This dystopian vision highlights the potential dangers of rushing into lunar mining without addressing the risks to workers. Working in low gravity conditions brings health hazards. Lunar miners are more likely to suffer,

- bone and muscle loss
- osteoporosis
- renal and cardiovascular damage, and
- impaired immunity.

Exposure to cosmic radiation not only carries an increased risk of various cancers but can also affect fertility.

Lunar miners will also face prolonged isolation and intense psychological stress. We'll need good laws and guidelines to protect the health and wellbeing of the space workforce.

Regulatory bodies to enforce worker rights and safety standards will be far away on Earth. Miners may be left with little recourse if asked to work unreasonable hours in unsafe conditions. The Moon holds incredible promise as a stepping stone for human exploration and a potential source of resources to sustain life on Earth and beyond. But history has shown us the consequences of unchecked exploitation. Before we mine the Moon, we must establish robust regulations that prioritise fairness, safety and human rights.

THE WALL

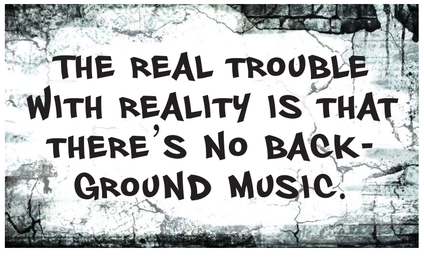

BABY BLUES

By Rick Kirkman & Jerry Scott

ZITS

By Jerry Scott & Jim Borgman

शाहपुरा जिला बचाओ आंदोलन नौ दिन से अनवरत जारी

अभिभाषक संस्था शाहपुरा के अधिवक्ताओं ने न्यायिक कार्यों का बहिष्कार जारी रखा

शाहपुरा, (निसं)। जिला बचाओ संघर्ष के द्वारा उपखंड कार्यालय शाहपुरा के बाहर दूसरे दिन श्री गणेश उत्सव समिति शाहपुरा के सदस्यों ने क्रमिक अनशन धरना दिया। श्री गणेश उत्सव समिति शाहपुरा के सदस्यों एवं संघर्ष समिति के सदस्यों और अधिवक्ताओं ने शाहपुरा जिला को समाप्त करने के विरोध में नारेबाजी कर विरोध प्रदर्शन किया और शाहपुरा को वापस जिला बनाने की मांग की।

संघर्ष समिति के संयोजक रामप्रसाद जाट ने बताया कि शाहपुरा जिला बचाओ संघर्ष समिति के अध्यक्ष दुर्गालाल राजोरा क्रमिक अनशन धरने पर बैठे श्रीगणेश उत्सव समिति के सदस्य अर्पित कसेरा, जयंत जीनगर, अनिल सोनी, ऋषभ सोनी, अभिषेक सोनी, हर्ष चंदेल, मदनलाल, किशन खटीक, विकास, राजेश, प्रवीण कुमार सहित सदस्यों को माला पहनाकर धरने पर बैठाया गया। विरोध प्रदर्शन के दौरान शाहपुरा जिला बचाओ संघर्ष समिति के रामेश्वर लाल सोलंकी, पूर्व शारीरिक शिक्षक रामस्वरूप खटीक, अविनाश शर्मा, अजय मेहता, सुनील मिश्रा, छोटू खान, हाजी उस्मान मोहम्मद छिपा पूर्व पार्षद शंकर खटीक, पूर्व सरपंच कालूराम मीणा, राम प्रसाद गुर्जर एवं अभिभाषक संस्था के अध्यक्ष दुर्गा लाल राजोरा, सचिव वीरेंद्र सह सचिव कमलेश मुंडेतिया, पुस्तकालय अध्यक्ष दीपक मीणा, वरिष्ठ अधिवक्ता गोविंद सिंह हाडा, त्रिलोकचंद नौलखा, अनिल शर्मा, नमन ओझा, पन्नालाल खारोल, चावंड सिंह, अंकित शर्मा, महेंद्र रायका, ताज मोहम्मद, प्रियेश यदुवंशी, सोहेल खान, पीएलवी अभय गुर्जर मौजूद रहे।

जिला समाप्त करने के विरोध में अनशन धरने पर श्री गणेश उत्सव समिति शाहपुरा के सदस्य बैठे।

- श्री दिगंबर जैन जागृति महिला मंडल शाहपुरा की महिलाओं ने धरना स्थल पर पहुंचकर समर्थन दिया

अधिवक्ताओं का न्यायिक कार्यों का बहिष्कार जारी :- अभिभाषक संस्था के सहसचिव कमलेश मुंडेतिया ने बताया कि जिला बचाओ संघर्ष समिति को आमजन का सहयोग लगातार मिल रहा है। शुक्रवार को भी अभिभाषक संस्था शाहपुरा के अधिवक्ताओं ने न्यायिक कार्यों का बहिष्कार जारी रखा और शाहपुरा को यथावत जिला बनाए की मांग की।

आज विप्र सेना शाहपुरा देगी धरना :- जिला बचाओ संघर्ष समिति के अध्यक्ष दुर्गा लाल राजोरा ने कहा कि 11 जनवरी को क्रमिक अनशन धरने पर विप्र सेना शाहपुरा के सदस्य बैठकर धरना देंगे। वहीं अभिभाषण संस्था के सहसचिव कमलेश मुंडेतिया ने बताया कि जिला बचाओ संघर्ष समिति को शाहपुरा को जिला बनाए रखने के लिए लगातार विभिन्न सामाजिक संगठनों का समर्थन मिल रहा है। शुक्रवार को श्री दिगंबर जैन जागृति महिला मण्डल शाहपुरा की महिलाओं ने धरना स्थल पर पहुंचकर जिला बचाओ संघर्ष समिति के अध्यक्ष दुर्गा लाल राजोरा और संयोजक रामप्रसाद जाट को समर्थन पत्र देकर शाहपुरा को वापस जिला बनाए रखना के लिए हर संभव आंदोलन में बराबर भाग लेकर मदद करने की बात कही। महिला मंडल में रेखा जैन, माना देवी जैन पनगाड़िया, निकिता जैन, मधु जैन, कोमल पाटनी, मंजू जैन, अनीता जैन, सुनीता जैन, अलका, कल्पना जैन आदि ने नारेबाजी व प्रदर्शन कर शाहपुरा जिला समाप्त करने का विरोध किया।

कोहरे के कारण दो ट्रकों में टक्कर, एक घायल

घायल चालक को अस्पताल में भर्ती कराया गया

हादसें में ट्रक के आगे का हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया।

भीलवाड़ा, (निसं)। एक बार फिर से कोहरे के कारण कोठारी नदी के पास यूनिक होटल के सामने सुबह चार बजे आगे चल रहे ट्रक से पीछे से ट्रक की टक्कर हो गई, जिसमें ट्रक चालक विनय सिंह पुत्र सुखपाल सिंह गंभीर रुप से घायल हो गया। मांडल चौकी पुलिस सूचना पर मौके पर पहुंची। साथ ही 108 भी पहुंच गई। एंबुलेंस पायलट प्रभु प्रजापत एवं मेल नर्स रवि वर्मा ने घायल को महात्मा गांधी जिला चिकित्सालय भीलवाड़ा पहुंचाया, जहां पर घायल का उपचार शुरू किया गया है। घटना स्थल पर वाहनों का लंबा जाम लग लगा, जिनसे कड़ी मशक्कत के बाद पुलिस ने खुलवाते हुए मार्ग को सुचारू करवाया।

इसी मार्ग पर कोठारी पुलिया के निकट ही गत दिनों कोहरे की चपेट ने आने से एक के बाद एक करीब एक दर्जन वाहनों की भिड़ंत हो गई थी, जिसके बाद जिला कलेक्टर नमित मेहता और एसपी धर्मेंद्र यादव ने मौका मुआयना कर हाइवे प्रशासन को कोहरे में हादसा रोकने को लेकर आवश्यक दिशा निर्देश दिए थे, लेकिन अब तक भी उन निर्देशों की पालना में सख्त कदम नहीं उठाए जाने के कारण फिर से इस मार्ग पर हादसा हुआ। गनीमत रही कि हादसे ने पूर्व की तरह विकराल रूप नहीं लिया।

कोहरे से दो ट्रकों की भिड़ंत, तीन जने घायल

- दुर्घटना में एक ट्रक के केबिन में दो व्यक्ति तथा दूसरे ट्रक में एक व्यक्ति फंस गया

सादुलपुर, (निसं)। अचानक बदला मौसम शुक्रवार को वाहन चालकों पर मुसीबत और आफत बनकर आया। अलसुबह घने कोहरे के कारण राष्ट्रीय राजमार्ग 52 चूरू-राजगढ़ बाइपास पर दो ट्रकों की आमने- सामने हुई जबरदस्त भिड़ंत में तीन व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गए तथा ट्रकों के परखच्चे उड़ गए। कोहरा इतना ज्यादा था कि हाथ से हाथ दिखाई नहीं दे रहा था। दुर्घटना में एक ट्रक के केबिन में दो व्यक्ति तथा दूसरे ट्रक में एक व्यक्ति फंस गया।

घटना के तुरंत बाद स्थानीय लोगों ने पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलते ही थाना अधिकारी पुष्पेंद्र झाझडिया के नेतृत्व में हैड कास्टेबल ओमप्रकाश सहारण मय पुलिस टीम मौके पर पहुंची तथा केबिन में फंसे घायलों को बाहर निकाला तथा राजकीय उप जिला अस्पताल में भर्ती करवाया। पुलिस ने दोनों ट्रकों को सड़क से हटाकर यातायात व्यवस्था बहाल की। थाना अधिकारी पुष्पेंद्र झाझडिया ने बताया कि ट्रक चालक पंकज कुमार सैनी उम्र 35 वर्ष निवासी बरवाला थाना धर्मशाला जिला कांगडा हिमाचल प्रदेश अपने ट्रक में रुई की गांठें भरकर गुलाबपुरा भीलवाड़ा जा रहा था। वहीं दूसरे ट्रक में ट्रक चालक रामनिवास जाट उम्र 27 वर्ष निवासी लूणकरणसर बीकानेर तथा परिचालक पूर्णाराम जाट उम्र 28 वर्ष निवासी कालू लूणकरणसर से पशु आहार भरकर हिसार की ओर जा रहे थे। राजगढ़-चूरू बाइपास पर जैसे ही दोनों पहुंचे तो कोहरे के कारण दोनों ट्रकों में आमने-सामने जबरदस्त भिड़ंत हो गई। जिसके कारण एक ट्रक में सवार रामनिवास और पूर्णा राम तथा दूसरे ट्रक में एक मात्र चालक पंकज कुमार घायल हो गए।

सांभर के पार्षद वकार युनुस को निलंबित किया

सांभरझील, (निसं)। स्वायत्त शासन विभाग, राजस्थान सरकार के आयुक्त एवं शासन सचिव कुमार पाल गौतम ने एक आदेश जारी कर तीसरी संतान होने का प्रमाण पाए जाने पर सांभर के वार्ड 25 के पार्षद को निलंबित कर दिया है। नगरपालिका सांभर के पार्षद वकार युनुस के तीसरी हो संतान होने से संबंधित प्रकरण की जिला कलेक्टर जयपुर से जांच करवाई गई थी।

पार्षद को तीसरी संतान 8 मई 2023 को हुई थी जिसमें उनके एक पुत्री ने जन्म दिया था। यद्यिप इस मामले में पार्षद (नगरपालिका सदस्य) को राजस्थान नगरपालिका अधिनियम 2009 की धारा 39 (1) के तहत सुनवाई का अवसर दिया गया था। इसके लिए विभाग की ओर से स्पष्टीकरण चाहने बाबत नोटिस भी जारी किया गया था, लेकिन नियत समयावधि में उनके द्वारा स्पष्टीकरण नोटिस का जवाब प्रस्तुत नहीं किया गया।

मामले के अंतर्गत राजस्थान नगर पालिका अधिनियम 2009 की धारा 24 के अनुसार वकार युनूस, नगर पालिका सांभरलेक (जयपुर) के सदस्य के पद के अयोग्य होने एवं प्रथम दृष्टया राजस्थान नगर पालिका अधिनियम 2009 की धारा 39 (1) (ग) के तहत पाये जाने पर राज्य सरकार द्वारा राजस्थान नगर पालिका अधिनियम के तहत उपरोक्त प्रकरण की न्यायिक जांच करवाने का निर्णय लिया जाने पर, प्रकरण को न्यायिक जांच हेतु विधि विभाग को प्रेषित किया जा चुका है।

बीकानेर कलेक्टर की गाड़ी का एक्सीडेंट

बीकानेर, (निसं)। जिला कलेक्टर नम्रता वृष्णि की कार का देर रात को एक्सीडेंट हो गया। कलेक्टर की गाड़ी को चारे से भरी एक ओवरलोड पिकअप ने टक्कर मार दी, हालांकि हादसे में कलेक्टर को चोट नहीं आई। उन्हें एसपी कावेंद्र सिंह सागर की कार में लिफ्ट लेकर बीकानेर लौटना पड़ा।

जिला कलेक्टर नम्रता इन दिनों भारत-पाकिस्तान सीमा पर बसे गांवों में संवाद कार्यक्रम कर रही है। इसी के तहत वो मोडायत गांव में लोगों से संवाद करके वापस बीकानेर लौट रही थी। मोडायत से लौटते समय बज्जू के पास कलेक्टर की कार सामने से आ रही एक पिकअप गाड़ी से टकरा गई। ये पिकअप गाड़ी चारे से भरी हुई थी, जिसमें अतिरिक्त चारा भरा हुआ था। हादसे के समय कार में कलेक्टर और ड्राइवर थे। दोनों को किसी तरह की चोट नहीं आई है। गाड़ी को सामान्य नुकसान हुआ है। हादसे के बाद साथ ही चल रहे एसपी कावेंद्र सिंह सागर भी मौके पर पहुंच गए। कलेक्टर बाद में एसपी सागर की कार में ही बीकानेर तक आई। रात करीब साढ़े दस बजे कलेक्टर बीकानेर पहुंची। उन्होंने बताया कि किसी तरह की चोट नहीं लगी है।

केमिकल से भरे टैंकर में अज्ञात कारणों के चलते लगी आग

- टैंकर में 35 हजार लीटर स्टेरिंग स्टाइस फाइबर केमिकल भरा था
- फायर ब्रिगेड टीम ने दो घंटे के बाद आग पर काबू पाया, टैंकर चालक ने कूदकर जान बचाई

सादुलपुर, (निसं)। कस्बे के राजगढ़-झुन्झूनूं सड़क पिलानी-राजगढ़ बाइपास पर गुरुवार-शुक्रवार मध्य रात्रि को केमिकल से भरे हुए दौड़ रहे एक टैंकर में अचानक आग लग गई। देखते-देखते केमिकल से भरे टैंकर में आग लपटें उठने लगी। टैंकर में 35 हजार लीटर स्टेरिंग स्टाईस फाइबर कैमिकल भरा हुआ था, तथा टैंकर चालक ने कूद कर अपनी जान बचाई।

टैंकर में ज्वलनशील केमिकल होने और तेज हवा चलने से आग तेजी से फैली और टैंकर धूं-धूं कर जलने लगा तथा सड़क के दोनों तरफ वाहन चालकों के पहिए थम गए। सूचना मिलते ही थाना अधिकारी पुष्पेंद्र सिंह झाझडिया पुलिस दल के साथ मौके पर पहुंचे तथा चूरू, तारानगर, पिलानी व राजगढ़ से भी फायर ब्रिगेड गाड़ी को बुलाया तथा लगभग दो घंटे तक कड़ी मेहनत कर आग पर काबू पाया, लेकिन शुक्रवार दोपहर तक केमिकल टैंकर में धुंआ निकल रहा था तथा टैंकर जलकर राख हो चुका था। इस हादसे में किसी भी जान-माल के नुकसान की सूचना नहीं है, लेकिन टैंकर और उसमें भरा कैमिकल पूरी तरह से जल जाना लाखों का एक बडा नुकसान है। अग्नि नियंत्रण होने के बाद वाहन चालकों ने राहत की सांस ली तथा सड़क पर यातायात व्यवस्था शुरू की गई।

थाना अधिकारी पुष्पेंद्र झाझडिया ने बताया कि टैंकर चालक अशोक कुमार यादव उम्र 41 वर्ष निवासी कोरारी सरहद पुलिस थाना फरया तहसील जसराना जिला फिरोजाबाद उत्तर प्रदेश निवासी है तथा टैंकर मालिक दिल्ली निवासी पीयूष अग्रवाल है। टैंकर चालक 8 जनवरी को गांधीधाम से केमिकल स्टीयरिंग स्टाइल्स 35 हजार लीटर कुल 32 टन भरकर सोनीपत के लिए रवाना हुआ था।

ट्रैक्टर चोरी मामले में तीन आरोपी गिरफ्तार

अजमेर, (कासं)। अजमेर की आदर्श नगर थाना पुलिस ने ट्रैक्टर चोरी करने के मामले में 3 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। वहीं, एक नाबालिग को निरुद्ध किया। आरोपियों के कब्जे से ट्रैक्टर-ट्रॉली बरामद कर ली है। आदर्श नगर थाना प्रभारी दिनेश कुमावत ने बताया कि 4 जनवरी को हटूंडी निवासी सिकंदर खान ने थाने पर मुकदमा दर्ज करवाया था। मामले में मुकदमा दर्ज का टीम का गठन किया गया और कार्रवाई के निर्देश दिए गए। थाना प्रभारी दिनेश कुमावत ने बताया कि घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी चेक किए गए। मुखबिर को भी इसकी सूचना देकर अलर्ट किया। अजमेर, राजोसी, नसीराबाद, मांगलियावास, मसूदा आसपास के कथित मुलजिमानों के संबंध में पूछताछ की जाकर जानकारी जुटाई गई। इस दौरान मुखबिर की सूचना पर टीम ने कार्रवाई करते हुए जिला ब्यावर निवासी फरदीन खान उर्फ फिरोज (24) अजमेर निवासी अब्दुल खान (25) पुत्र भंवर खान और अमीन खान (19) पुत्र करीम चिता को गिरफ्तार किया।

पाक जयरीन दल रवाना

अजमेर, (कासं)। सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन हसन चिश्ती के 813 वें सालाना उर्स में हर साल की तरह इस साल भी अजमेर आए पाक जायरीन दल कड़े सुरक्षा बंदोबस्त के बीच शुक्रवार को अजमेर रेलवे स्टेशन से स्पेशल ट्रेन से रवाना हुआ। ट्रेन के रवाना होने से पूर्व पाक जायरीन भावुक हो गए और उन्होंने कहा कि दोनों देशों में आपसी भाईचारा बने। खुफिया विभाग, जीआरपी और स्थानीय पुलिस के जवानों ने कोच में जायरीनों को बैठाने से पहले उसकी संघन जांच की गई। सभी जायरीनों को पुरानी मंडी स्थित सेंट्रल गर्ल्स स्कूल से रेलवे स्टेशन तक बसों से लाया गया, जिससे इनके साथ इनका लगेज भी सुरक्षित एवं व्यवस्थित तरीके से ट्रेन तक पहुंचे इसके लिए विशेष इंतजाम किए गए। पाकिस्तानी जायरीन स्पेशल ट्रेन के जरिए पाकिस्तान के लिए रवाना हुए। इस दौरान अजमेर रेलवे स्टेशन पर जिला पुलिस, जीआरपी, आरपीएफ सहित सुरक्षा एजेंसी अलर्ट रही।

अजमेर में चल रहे ख्वाजा मोईनुद्दीन हसन चिश्ती के 813वें सालाना उर्स का समापन शुक्रवार को बड़े कुल की रस्म और जुमे की नमाज के साथ हुआ। इस अवसर पर सैकड़ों की संख्या में जायरीन नमाज पढ़ी और देश व दुनिया में अमन-चैन की दुआ मांगी। उर्स के मौके पर बड़े कुल की रस्म में शुक्रवार सुबह 8:30 बजे खादिम समुदाय ने अदा की, खादिमों ने मजार शरीफ पर गुलाब जल और केवड़े से गुस्ल दिया और इत्र और चंदन का गिलाफ पेश किया। गुस्ल का पानी व संदल जायरीन को तबर्रुक के रूप में बांटा गया। दोपहर को उर्स के मौके पर जुमे की नमाज के लिए जायरीन का सैलाब उमड़ा। दरगाह दीवान जैनुअल आबेदीन सहित दरगाह कमेटी ने 813 वें उर्स को लेकर जिला प्रशासन सहित सभी सामाजिक संस्थाओं और स्वयंसेवकों व दानदाताओं का शुक्रिया अदा किया।

चोरों ने जेएलएन अस्पताल में वारदात की

अजमेर, (कासं)। अजमेर संभाग के सबसे बड़े जवाहर लाल नेहरू अस्पताल में चोरी की वारदात सामने आई है। अधीक्षक ने हॉस्पिटल में मलबा उठाने वाली एजेंसी पर कबाड़ चोरी करने का आरोप लगाते हुए कोतवाली थाने में शिकायत दी है। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। कोतवाली थाने के एएसआई भगवान सिंह ने बताया कि जेएलएन अस्पताल अधीक्षक डॉक्टर अरविंद खरे की ओर से थाने पर मुकदमा दर्ज करवाया गया है। अधीक्षक ने शिकायत देकर बताया कि हॉस्पिटल परिसर में एक निर्माण एजेंसी है, जो कि मलबा उठाने का काम कर रही है। उसी जगह पर उनका फर्नीचर और कबाड़ सहित अस्पताल का कई सामान पड़ा था। अधीक्षक ने आरोप लगाया की एजेंसी के कर्मचारियों के द्वारा कबाड़ को चोरी कर ले गए हैं। मामले में अधीक्षक की रिपोर्ट पर मुकदमा दर्ज कर लिया गया है।

चाइनीज़ मांझे की बिक्री के विरुद्ध देवली पालिका प्रशासन ने कार्रवाई की

देवली, (निसं)। इन दिनों मकर संक्रांति त्योहार के चलते यहां पतंगबाजी का दौर शुरू हो गया है। इसी को लेकर पालिका प्रशासन ने शुक्रवार को चाईनीज मांझे के विरुद्ध कार्रवाई करते हुए चाइनीज मांझे की दो दर्जन चर्खियां जब्त की है।

चाइनीज मांझे के विरुद्ध इस कार्रवाई पर पालिका के अधिशासी अधिकारी सुरेश कुमार मीणा ने जानकारी में बताया कि राज्य में चाईनीज मांझे के उपयोग पर पूर्ण रूप से प्रतिबन्धित लगाया हुआ है। इसके बावजूद कुछ व्यापारियों द्वारा शहर में आदेशों की पालना नहीं कर प्रतिबन्धित चाईनीज मांझे का विक्रय किया जा रहा है। इसको लेकर नगरपालिका टीम ने शुक्रवार को शहर में स्थित विभिन्न दुकानों पर जाकर मांझे के 24 रोल जब्त करने की कार्रवाई की है। ईओ मीणा ने यह भी बताया कि करवाई दौरान दुकानदारों को चाईनीज मांझे का विक्रय नहीं करने हेतु पांबद किया है।

साथ ही दुकानदारों को चेतावनी भी दी गई है, यह की अगर कोई भी व्यापारी चाईनीज मांझे का विक्रय करता हुआ पाया जाता है तो नगरपालिका प्रशासन द्वारा पुन:जब्ती की कार्यवाही की जावेगी। उल्लेखनीय है कि शहरभर में लगभग दो दर्जन पतंग डोर की दुकान त्योहार के चलते संचालित हो रही है, जिसमें से लगभग आधा दर्जन दुकानों पर पतंग डोर का होलसेल कारोबार किया जा रहा है। शुक्रवार को प्रतिबंध चाइनीज मांझे के विरुद्ध कार्रवाई करने दौरान पालिका के सहायक अभियंता सुमित कुमार खोरवाल, कार्यवाहक एसआई कुलदीप सिंह शक्तावत, कार्यवाहक सफाई जमादार विकास अजयपाल, कार्यवाहक सफाई जमादार राकेश रियल टीम में शामिल रहे।

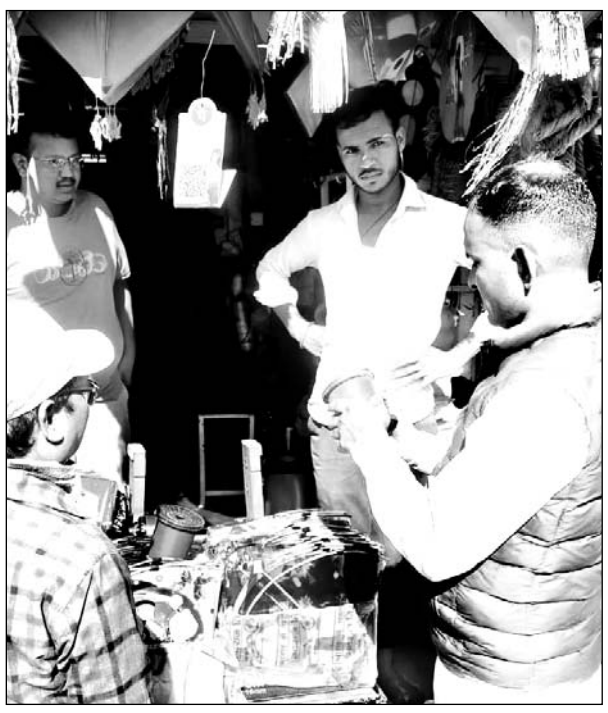

पालिका कर्मियों ने चाईनीज मांझे की दो दर्जन चर्खियां जब्त की।

सांवलियाजी सेठ के एक माह का भंडार एवं भेंट कक्ष का चढ़ावा 23 करोड़ के पार

- साथ ही 90 किलो चांदी व 1 किलो 260 ग्राम सोना भी प्राप्त हुआ, भंडार की गिनती छह चरणों में संपन्न हुई

मंडफिया, (निसं)। मेवाड़ अंचल के प्रमुख तीर्थ स्थल भगवान श्रीसांवलियाजी सेठ मंडफिया के दरबार में गत 29 दिसंबर चतुर्दशी को खोले गए भंडार की शेष रही राशि की गिनती छह चरणों में संपन्न हुई। भंडार की गिनती मंदिर बोर्ड अध्यक्ष भेरुलाल गुर्जर एवं मंदिर की मुख्य निष्पादन अधिकारी प्रभा गौतम की उपस्थिति में हुई।

मंदिर के प्रशासनिक अधिकारी नंदकिशोर टेलर ने बताया कि छठे चरण में हुई भंडार गिनती में 06 लाख 24 हजार 624 रुपए नगद प्राप्त हुए। इससे पूर्व पांच चरणों में हुई गिनती में 17 करोड़ 73 लाख 93 हजार रुपए नगद प्राप्त हुए थे। उन्होंने बताया कि छह चरणों की गिनती को मिलाकर कुल 17 करोड़ 80 लाख 18 हजार 624 रुपए की नगद प्राप्त हुए। प्रशासनिक अधिकारी टेलर ने बताया कि इसके अलावा भंडार से निकले सोने-चांदी का तोल भी किया गया। भंडार से 1 किलो 40 ग्राम सोना व 43 किलो 144 ग्राम चांदी प्राप्त हुई। उन्होंने बताया कि विभिन्न भक्तों द्वारा मंदिर कार्यालय में 220 ग्राम 100 मिलीग्राम सोना व 46 किलो 523 ग्राम चांदी भेंट स्वरूप जमा हुई।

प्रशासनिक अधिकारी टेलर ने बताया कि इसके अलावा विभिन्न भक्तों ने विभिन्न स्थानों से मनीऑर्डर भेजकर, ऑनलाइन द्वारा एवं स्वयं उपस्थित होकर मंदिर कार्यालय में 5 करोड़ 38 लाख 90 हजार 140 रुपए भेंट जमा किए। भगवान श्रीसांवलियाजी सेठ के एक माह के भंडार एवं भेंट कक्ष कार्यालय से कुल 23 करोड़ 19 लाख 08 हजार 764 रुपए का नगद चढ़ावा मिला।

श्रीसांवलियाजी सेठ के एक माह के भंडार की गिनती में मंदिर पदाधिकारी उपस्थित रहे।

भंडार गिनती में मंदिर बोर्ड सदस्य भेरूलाल सोनी, संजय कुमार मंडोवरा, अशोक शर्मा, ममतेश शर्मा, श्रीलाल पाटीदार, भादसोड़ा सरपंच एवं मंदिर बोर्ड सदस्य शंभूलाल सुथार, मंदिर बोर्ड के पूर्व सदस्य भैरूलाल सोनी, कांग्रेस युवा नेता सुरेश चंद्र गुर्जर, भादसोड़ा नायब तहसीलदार शिवशंकर पारीक, प्रशासनिक अधिकारी नंदकिशोर टेलर, मंदिर प्रभारी राजेंद्र कुमार शर्मा, लेखाधिकारी राघव शर्मा, सुरक्षा प्रभारी भैरू गिरी गोस्वामी, संस्थापन प्रभारी लेहरी लाल गाडरी, मनोहरलाल चौबीसा, कालू लाल तेली, दीपक तिवारी सहित चुनिंदा मंदिर कर्मचारी एवं बैंक कर्मी उपस्थित थे।

संक्षिप्त

छात्र-छात्राओं ने किया श्रमदान

निवाई । राजकीय महाविद्यालय निवाई में सांस्कृतिक व साहित्यिक समिति के संयुक्त तत्वावधान में स्वामी विवेकानंद की जयंती के उपलक्ष्य में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन प्राचार्य प्रो. दीपकराज जैन की अध्यक्षता में किया गया। कार्यक्रम प्रभारी डॉ. सोना अठावाल ने बताया कि मुख्य वक्ता प्रोफेसर विकास नौटियाल ने विद्यार्थियो को स्वामीजी के बताए हुए मार्ग पर अठासर होते हुए देश के उत्थान में सहयोग करने हेतु प्रेरित किया। छात्रों ने महाविद्यालय की आंतरिक दीवारों की पुताई कर श्रमदान के महत्व को आत्मसात किया। छात्र-छात्राओं द्वारा पोस्टर, स्लोगन व निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें छात्र छात्राओं ने बढ़ चढक़र भाग लिया। कार्यक्रम में समस्त संकाय सदस्यों का योगदान रहा।

250 जरूरतमंदों को कंबल वितरित

निवाई । सिकोईडीकोन व किसान सेवा समिति निवाई द्वारा जरूरतमंदों को कंबलों का वितरण किया गया। शाखा प्रभारी अनीता शर्मा ने बताया कि निवाई क्षेत्र के गवारिया की ढाणी, जनता कॉलोनी, कालबेलिया की ढाणी, सूरिया, राहोली, लुहारा, ललवाडी, पलेई, आलियाबाद मोड व वनस्थली मोड आदि स्थानों पर 250 वृद्धजनों एवं विशेष योग्यजनों को कम्बल वितरित किए। इस अवसर पर किसान सेवा समिति अध्यक्ष मदनलाल शर्मा, महासंघ अध्यक्ष बद्रीनारायण जाट, राजाराम जाट, दामोदरप्रसाद शर्मा एवं संस्था स्टाफ अर्जुनदेव बैरवा, ममता शर्मा, सोनू चौधरी एवं केदार बैरवा सहित कई कार्यकर्ता मौजूद थे।

श्रीराम काव्य पाठ

निवाई । श्रीराम मंदिर अयोध्या धाम की प्रथम वर्ष गांठ की पूर्व संध्या पर जमात में स्थित मंशापूर्ण बालाजी मंदिर पट्रोल पंप पर भव्य सुदरकाण्ड एवं श्रीराम काव्य पाठ का आयोजन किया जाएगा। मंदिर समिति के पदाधिकारी जीवतराम यादव ने बताया कि 11 जनवरी की शाम 7 बजे से मंदिर पर भव्य सुदरकाण्ड एवं श्रीराम काव्य पाठ का आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर ओज कवि महेश डांगरा मुख्य वक्ता होंगे।

यातायात नियमों की दी जानकारी

कोटपूतली। नव वर्ष के साथ ही कोटपूतली-बहरोड जिले में सड़क सुरक्षा माह का शुभारम्भ किया गया था। जिसका आयोजन 01 से 31 जनवरी तक किया जायेगा। सड़क सुरक्षा माह के तहत प्रशासन व विभिन्न विभागों द्वारा अनेक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। इसी क्रम में शुक्रवार को जिला पुलिस अधीक्षक राजन दुष्यंत के निर्देशानुसार पनियाला थाना पुलिस द्वारा साईबर शील्ड अभियान व सडक सुरक्षा माह अभियान के तहत राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मलपुरा में विधार्थियों को यातायात नियमों व साईबर अपराध के बारे में जानकारी दी गई। पनियाला थाना पुलिस की टीम ने विधार्थियों को यातायात के नियमों के बारे में विस्तार से बताते हुये कहा कि सडक सुरक्षा बेहद आवश्यक है।

नम्बर मिलाइए
9587884433
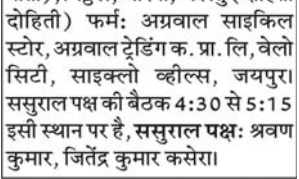
सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।

तीये की बैठक

अत्यंत दु:ख के साथ सूचित किया जाता है कि हमारे पूजनीय **श्री शंकर लाल अग्रवाल** (पुत्र स्व. श्री नाथु लाल जी लवाण वाले) का **स्वर्गवास** 9/01/2025 को हो गया है।

तीये की बैठक दिनांक 11/01/2025 शनिवार को आदर्श विद्या मन्दिर , अंबाबाड़ी पर सांय 4:30 से 5:30 तक होगी। **शोकाकुल:-** शान्ती देवी (धर्मपत्नी), तारा देवी - स्व. राधामोहन दीवान (बहन बहनोई), स्व कैलाशचंद, स्व. रामदास, रामप्रकाश (भ्राता), मुकेश-रेखा, उमेश-रश्मि (पुत्र पुत्रवधू), डॉ सीमा- डॉ गगन गोयल (पुत्री दामाद), आयुषी-सौरभ परसरामपुरिया (पौत्री दामाद), दिनेश, महेश, शेखर, राजेश (भतीजे) , उत्कर्ष, अदिति, आदित्य (पोता पोती), विट्ठल, आरना, अरस्तु (दोहिता दोहिती) फर्म: अग्रवाल साइकिल स्टोर, अग्रवाल ट्रेडिंग क. प्रा. लि, वेलो सिटी, साइक्लो व्हील्स, जयपुर। ससुराल पक्ष की बैठक 4:30 से 5:15 इसी स्थान पर है, **ससुराल पक्ष:** श्रवण कुमार, जितेंद्र कुमार कसेरा।

कैबिनेट मंत्री ने स्काउट गाइड जम्बूरी का लिया जायजा

मालपुरा (निस) राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मालपुरा खेल मैदान पर आयोजित स्काउट गाईड के 75वें स्थापना दिवस पर जिला स्तरीय जम्बूरी कार्यक्रम स्थल पर कैबिनेट मंत्री कन्हैयालाल चौधरी ने विधिवत जम्बूरी के आयोजन के शुभारम्भ की घोषणा कर मार्च फास्ट की सलामी ली। जिला स्तरीय जम्बूरी मे भाग ले रहै 8०० से अधिक स्काउट गाईड को सम्बोधित करते हुये मंत्री ने कहा कि स्काउट के

- **स्काउट के सेवा कार्यो को जीवन मे उतारने के लिये किया प्रेरित**

सेवा कार्यो को अपने जीवन मे उतार कर देश को आगे बढने का कार्य करने का आज सभी संकल्प ले।

मौजूद स्काउट गाईड को केबिनेट मंत्री ने जम्बूरी मे सीखे गये समाजोपयोगी कार्यो का लाभ जरूरतमंदो व अन्य लोगो को दे जिससे की समाज के हर व्यक्ति तक स्काउट व गाईड के सराहनीय सेवा कार्य पहुंच सके। बडी संख्या मे मौजूद स्काउट गाईड व शिक्षको सहित आयोजको की और से केबिनेट मंत्री को स्काउट केप पहना व स्कार्प लगा किया स्वागत अभिनन्दन।

मार्च फास्ट की सलामी के पश्चात के मंत्री ने जम्बूरी आयोजन स्थल लगाये गये कैम्प फायर, आपातकालीन चिकित्सा सेवा व स्ट्रेक्चर, सहित समाजोपयोगी सेवा कार्यो का जायजा लेते हुये विशाल खेल मैदान पर तम्बू के आशियाने बना सेवा कार्य सीख रहै स्काउट गाईड से संवाद कर भरकस सराहना की। रघुवीर सिंह ,रमाकांत पाठक,अल्का पारीक, मधुसुदन पारीक,महेन्द्र शर्मा,सुरेश शर्मा, आदि मौजूद रहै। केबिनेट मंत्री के साथ पूर्व विधायक हरलाल सारण भी मौजूद रहै।

कैबिनेट मंत्री कन्हैयालाल चौधरी ने मालपुरा मे आयोजित जिला स्तरीय स्काउट गाईड जम्बूरी का जायजा लिया ।

शिविर में 965 मरीज हुये लाभान्वित

कोटपूतली। कस्बे के निकटवर्ती ग्राम पवाना अहीर स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र पर शुक्रवार को नोडल अधिकारी बीसीएमओ डॉ. पूरण चन्द गुर्जर के नेतृत्व में मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य शिविर का आयोजन किया गया। बीसीएमओ ने शिविर का निरीक्षण कर आमजन को केन्द्र व राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी। शिविर में 1800 जनसहभागियों की उपस्थिति एवं 965 मरीजों की ओपीडी रही। मरीजों को विषय विशेषज्ञों द्वारा दन्त रोग, नेत्र रोग, मेडिसन की सेवायें दी गई। बीपीएम विजय तिवाडी ने बताया कि शिविर में गर्भवती महिलाओं की जांच, बच्चों का टीकाकरण, असंक्रामक रोग यथा डायबिटीज, हाईपरटेंशन, कॉमन कैंसर, टीबी, अंधता रोगी की स्क्रीनिंग, ईसीजी सहित 37 प्रकार की नि:शुल्क जांच कर उपचार किया गया। साथ ही आमजन की आभा आईडी व बकाया ईकेवाईसी भी की गई। आरबीएसके टीम द्वारा छात्र-छात्राओं की स्क्रीनिंग कर उपचार किया गया। जिनका निरन्तर फॉलोअप किया जावेगा। बीसीएमओ ने शिविर के सफल आयोजन के लिये चिकित्सा अधिकारी प्रभारी डॉ. तनीषा गोयल, यामिनी त्रहान, डॉ. प्रकाश सैनी, सुभाष महता एवं स्टॉफ को धन्यवाद् दिया।

जवान की राजकीय सम्मान से अंत्येष्टि

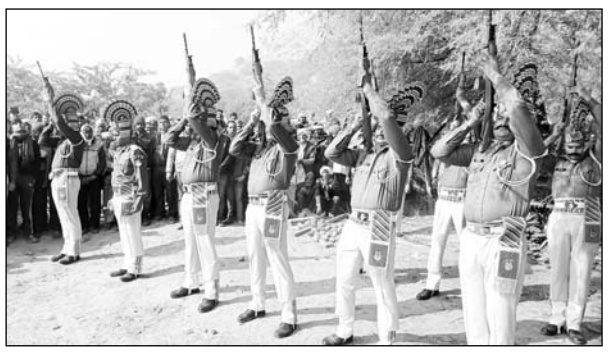

सीआरपीएफ के एसआई प्रकाशचंद नायक को सिक्स राउंड फायर कर सलामी देते हुए जवान।

सिरस । सीआरपीएफ के एसआई प्रकाशचंद नायक की आंध्र प्रदेश में प्रशिक्षण के दौरान मृत्यु होने पर पराना गांव में उनकी राजकीय सम्मान के साथ अंत्येष्टि की गई। पराना गांव के निवासी प्रकाश नायक सीआरपीएफ पुलिस में उप निरीक्षक पद पर कार्यरत थे। उनको पुलिस निरीक्षक के पद पर प्रमोशन के लिए आंध्र प्रदेश में काली खेरी में प्रशिक्षण दिया जा रहा था। प्रशिक्षण के दौरान उनकी तबीयत खराब हो गई। तबीयत खराब होने के बाद उनको चिकित्सालय ले जाया गया। जहां चिकित्सकों ने उनको मृत घोषित कर दिया।

युवाओं में बढ़ती नशे की लत पर विस्तार से चर्चा की

फुलेरा । रेल परिसर स्थित यूनियन कार्यालय पर शुक्रवार को नॉर्थ वेस्टर्न रेलवे एम्पलाईज यूनियन की ओर से रेलवे यूथ कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान मुख्य अतिथि के रूप में एन.डब्ल्यू.आर.ई.यू. जोन के महामंत्री मुकेश माथुर रहे। विशिष्ट अतिथि के रूप में जोन के कार्यकारी अध्यक्ष मुकेश चतुर्वेदी, मण्डल अध्यक्ष के.एस.अहलावत, जोनल सहायक महामंत्री गोपाल मीणा, जोनल उपाध्यक्ष नरेन्द्र सिंह चाहर, मण्डल कोषाध्यक्ष राकेश यादव, को-ऑपरेटिव बैंक उपाध्यक्ष राजेश वर्मा व पेंशनर समिति से महेश सहाय शर्मा थे। जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता यूथ विंग के सचिव नारायण लाल गुर्जर के द्वारा की गई। कार्यक्रम के प्रारंभ में आगन्तुक अतिथियों ने मां शारदे की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित एवं पुष्प अर्पित कर कार्यक्रम की शुरुआत की गई। तत्पश्चात यूनियन के पदाधिकारीयों ने आगन्तुक सभी अतिथियों का माला पहनाकर स्वागत अभिनन्दन किया। वहीं कार्यक्रम के दौरान क्षेत्र के जागरूक युवा एवं समाजसेवी अर्पित मुदगल एवं कमल सोनी ने क्षेत्र में बढ़ रहे सूखे नशे से ठासित युवाओं में फैल रहे व्यसन को लेकर चिंता जताते हुए एम्पलाईज यूनियन से सहयोग करने की अपील की। इसी क्रम में वहीं कार्यक्रम में उपस्थित पत्रकार बन्धुओं ने भी इस कार्य में अपना संपूर्ण योगदान देने को कहा। वहीं एम्पलाईज यूनियन के पदाधिकारीयों ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए यूनियन की उपलब्धियों के बारे में रेल कर्मचारियों को बताते हुए कहा कि यूनियन सदैव कर्मचारीयों के हितों के लिए ही कार्य करती है। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता मुकेश चतुर्वेदी, के.एस.अहलावत ने उपस्थित जन समूह व कर्मचारियों को नववर्ष की शुभकामना देते हुए मान्यता चुनाव में किए गए सहयोग के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया। जबकि मुख्य वक्ता मुकेश माथुर ने कहा कि यूनियन जो कहती है वह करती भी है। इसके अलावा उन्होंने कहा कि त्याग एवं संघर्ष करने वाला ही यूनियन में पद का हकदार होगा। इसी क्रम में शाखा सचिव एवं जोनल उपाध्यक्ष नरेन्द्र सिंह चाहर ने कहा कि साथियों आप समय-समय पर सहयोग करते रहेंगे।

पशुओं के गले में बांधे रेडियम के पट्टे

कोटपूतली। सड़क सुरक्षा माह के अंतर्गत प्रशासन तथा विभिन्न विभागों द्वारा अनेकों जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया जा रहे हैं इसी कडी में आज एनएचएआई द्वारा चालकों तथा परिचालकों को अग्निशमन विभाग द्वारा दुर्घटना के दौरान फायर फाइटिंग का प्रशिक्षण प्रदान किया गया तथा बेसहारा पशुओं के गले में रेडियम की पट्टी बांधी गई।

एनएचएआई के प्रोजेक्ट डायरेक्टर अजय आर्य ने बताया कि अग्निशमन कर्मी सड़क सुरक्षा में, विशेषकर दुर्घटनाओं के दौरान, महत्वपूर्ण एवं बहुमुखी भूमिका निभाते हैं। उनकी विशेषज्ञता केवल आग बुझाने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसमें आपातकालीन प्रतिक्रिया गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है जो जीवन और संपत्तियों की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। जब कोई सडक दुर्घटना होती है, तो अग्निशमन कर्मी सबसे पहले प्रतिक्रिया देने वालों में से होते हैं । वे घटनास्थल पर विशेष उपकरण और प्रशिक्षण लेकर आते हैं, जिससे वे ष्जॉज-ऑफ-लाइफ जैसे उपकरणों का उपयोग करके फंसे हुए पीड़ितों को मुक्त कराने में सक्षम होते हैं।

स्नेह मिलन समारोह आयोजित

देवली । देवली उपखंड की दूनी नगर पालिका क्षेत्र में स्थित श्री सत्य नारायण भगवान मंदिर में ब्रह्म सेना फाउंडेशन राजस्थान परिवार द्वारा स्नेह मिलन समारोह का आयोजन किया गया। यहां बृजेश भारद्वाज ने जानकारी में बताया कि स्नेह मिलन समारोह कार्यक्रम भगवान गुरुकृपा संस्थान के संस्थापक पंडित मुकेश गौतम देवली के सानिध्य में आयोजित किया गया।

ब्रह्म सेना फाउंडेशन राजस्थान के टोंक जिला अध्यक्ष गणेश राजौरा ने बताया कि स्नेह मिलन समारोह में गुरुदेव के निर्देशानुसार उनियारा बार एसोसिएशन के नव नियुक्त अध्यक्ष नमो नारायण गौतम एवं टोडारायसिंह बार एसोसिएशन के नव नियुक्त अध्यक्ष अनुराग गौतम एवं भाजयुमो टोंक के पूर्व जिलाध्यक्ष एवं ब्राह्मण समाज के गौरव इंदु शेखर शर्मा का स्वागत एवं सम्मान किया गया।

इसके पूर्व पंडित मुकेश गौतम एवं पंडित राधा कांत जोशी का भी माल्यार्पण कर भगवान परशुराम की तस्वीर भेंट कर स्वागत किया गया। आगंतुक सभी मेहमानों को भगवान परशुराम की तस्वीर भेंट की गई। कार्यक्रम में फाउंडेशन के प्रदेशाध्यक्ष विष्णु तिवाडी ,सुनील शर्मा निवाई, सुरेन्द्र शर्मा टोंक, विष्णु शर्मा निवाई, रवि शर्मा पराना, सत्य नारायण तिवाडी दूनी, सत्यनारायण भगवान मंदिर विकाश समिति के पूर्व अध्यक्ष प्रहलाद राय शर्मा सहित दूनी के कई युवाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम में कई राजनीतिक एवं सामाजिक मुद्दों पर चर्चा की गई।

कुएं में गिरने से बालिका की मौत

बौंली बामनवास । सवाई माधोपुर के मालियों के टॉपरा लहसोड़ा गांव में गुरुवार को एक 10 वर्षीय बालिका खेलते समय पैर फिसल जाने के कारण कुएं में गिर गई बालिका को बचाने के लिए उसकी मां भी कुएं में कूद गई लेकिन ग्रामीणों ने मां को बचा लिया रात्रि हो जाने के कारण बालिका को नहीं बचा पाए।

प्राप्त जानकारी के अनुसार मालियों का टापरा लहसोडा गांव में हंसराज माली की 10 वर्षीय पुत्री कृष्णा सैनी दोपहर करीब 2 बजे घर के बाहर खेल रही थी इसी दौरान पैर फिसल जाने के कारण वह पास के कुएं में गिर गई बच्ची को कुएं में गिरता देखकर बालिका की मां भी अपनी बच्ची को बचाने के लिए कुएं में कूद गई। इस घटना को देखकर ग्रामीणों ने तुरंत मां को तो गुरुवार को ही जीवित बाहर निकाल लिया लेकिन रात्रि होने के कारण बालिका को नहीं निकाला जा सका। इसकी सूचना ग्रामीणों ने एसडीआरएफ टीम को दी। टीम गुरुवार रात्रि को 11 बजे मौके पर पहुंची एवं अपना रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया।

असंतुलित होकर पलटी कार

हिंगोनिया मोड पर शुक्रवार की सुबह 5 बजे एक कार असंतुलित होकर पलट कर क्षतिगस्त हो गई।

निवाई । कौथून लालसोट सडक मार्ग पर स्थित हिंगोनिया मोड पर शुक्रवार की सुबह 5 बजे एक कार असंतुलित होकर पलट कर क्षतिग्रस्त हो गई।

दत्तवास थानाधिकारी कालूराम ने बताया कि गांव जगसरा से अपनी कार में सवार होकर हनुमान मीणा पुत्र हरिनारायण मीणा अपने गांव इस्माइलपुरा थाना बरोनी जा रहा था।

इसी दौरान हिंगोनिया बुजुर्ग मोड़ पर कार असंतुलित होकर तीन चार बार सडक पर पटल कर क्षतिग्रस्त हो गई। उक्त दुर्घटना में हनुमान मीणा के मामूली खरोंच आई और वह बाल बाल बच गए। घटना की सूचना पर दत्तवास पुलिस मौके पर पहुंची और उसके परिजनों को सूचना दी। उक्त मामले में कोई मामला दर्ज नहीं हुआ है।

कलेक्टर ने निवेश एम.ओ.यू. के कार्यान्वयन को लेकर दिए दिशा निर्देश

खैरथल। जिला कलेक्टर किशोर कुमार ने 'राइजिंग राजस्थान' ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट-2024 के दौरान हस्ताक्षिरत निवेश प्रस्तावों के कार्यान्वयन की प्रगति का मूल्यांकन करने के लिए भिवाडी बीडा सभागार में समीक्षा बैठक ली। बैठक में कलेक्टर ने अधिकारियों को पारदर्शी, समयबद्ध और त्वरित तरीके से कुशलतापूर्वक कार्य करने के लिए निर्देशित किया।

जिला कलेक्टर ने बताया कि राज्य सरकार द्वारा हस्ताक्षिरत निवेश प्रस्तावों के लिए वर्गीकरण प्रणाली भी शुरू की गई है जिसमें निवेशकों द्वारा व्यक्त की गई प्रतिबद्धता और रुचि के स्तर के आधार पर एमओयू को ए, बी और सी श्रेणियों में विभाजित किया गया है । जिन निवेशकों ने सबसे अधिक रुचि और प्रतिबद्धता दिखाई तथा कार्य प्रगतिरत है, उन्हें ए श्रेणी में रखा गया है। इसी प्रकार क्रमश: बी और सी श्रेणी बनाई गई है। जिला कलेक्टर ने अधिकारियों को ए श्रेणी के निवेशकों को प्राथमिकता देने और उनकी परियोजना की ठाार्डडिंग और कार्यान्वयन के लिए समर्पित कदम उठाने के निर्देश दिए। बी-स्तर और सी-स्तर के निवेशकों को भी उनके निवेश प्रस्ताव और प्रतिबद्धता के अनुसार उचित ध्यान दिया जाएगा।

जिला कलेक्टर ने संबंधित अधिकारियों को निवेशकों के साथ संवाद स्थापित करने, साइट विजिट की सुविधा प्रदान कर चिन्हित भूमि पार्सल के आवंटन के लिए एक स्पष्ट रूपरेखा देने के निर्देश दिए। उन्होंने संबंधित विभाग को निवेशकों के लिए साइट विजिट की सुविधा प्रदान करने तथा रीको, नगर निगमों या अन्य विभागों के तहत उपयुक्त भूमि पार्सल की पहचान करने में सहायता करेंगे। जिला कलेक्टर ने सभी अधिकारियों को पारदर्शी, समयबद्ध और त्वरित तरीके से कुशलतापूर्वक कार्य करने के लिए निर्देशित किया। जिला कलेक्टर ने नगर परिषद आयुक्त द्वारा अभी तक किए गए ओपन बर्निंग चालान की समीक्षा कर रोजाना सघन मॉनिटरिंग एवं लक्ष्य निर्धारित कर चालान करने के निर्देश दिए साथ ही उन्होंने वाटर स्प्रिंकल एवं टैंकरों द्वारा निरंतर सडकों पर पानी का छिडकाव करने के भी निर्देश दिए।

कलेक्टर किशोर कुमार (बीच में) ने अधिकारियों की बैठक ली।

खोया-पाया

प्लॉट नं. जी-177 अनीता गोठवाल पत्नी श्री अमरसिंह गोठवाल, स्कीम जयपुर ग्रीन्स का जेडीए पट्टा कहीं गुम हो गया है। मिलने पर सूचित करें। अनीता गोठवाल सम्पर्क : 9414629508

मैं सुखपाल पत्नी स्वर्गीय श्री प्रभु नारायण मेरे पति के स्वामित्व का प्लॉट नंबर 87, 87-ए, स्कीम शिव महिमा नगर, नाडीया सिरसी जिसका मूल पट्टा, रसीद वे साइट प्लॉन, जो कि मीनावाला गृह निर्माण सहकारी समिति लिमिटेड द्वारा आवंटित था, सिरसी से चित्रकूट के रास्ते में कहीं खो गए है। मिलने पर सूचित करें। 9929736573

आम सूचना सूचित किया जाता है कि राजस्थान आवासन मण्डल, जयपुर की योजना में हाउस नम्बर 105/131, मानसरोवर, जयपुर राजस्थान आवासन मण्डल, जयपुर की मानसरोवहर आवासीय योजना का अलॉटमेंट लैटर नम्बर 1272 दिनांक 06.09.2001 एवं सर्टिफिकेट फार हेन्डिंग आवर पजेशन आफ हाउस जो कि सुखराम के नाम से था। वो खो गया है जिसकी रिपोर्ट एल.आर. नम्बर 2546993/2025 दिनांक 09.01.2025 दर्ज करा दी गई है। उक्त सम्पति के सम्बंध में लिक्षमा देवी ने एस.बी.आई. में लोन हेतु आवेदन किया है यदि किसी व्यक्ति या संस्था को कोई आपत्ति हो तो प्रकाशन तिथी से 7 दिवस में सम्पर्क करें। (आर.के. जैन) एडवोकेट, मो. 9414311850

PUBLIC NOTICE I, Khemraj Sharma S/o Shri Madan Lal Sharma R/o 103, Greater Kailash Vijaypura, Sumel Road, Agra Road, Jamdoli, Jaipur, Rajasthan have lost Original Registered Release Deed dated 24.12.2018 executed by Mr. Naman Vidhyarti S/o Late Mr. Santosh Vidhyarthi and Mrs. Shivla Saxena D/o Late Mr. Santosh Vidhyarthi in favour of Mrs. Abha Vidhyarti W/o Late Mr. Santosh Vidhyarthi in Sale Deed which duly registered with concerned Sub-Registrar of assurance as document No. 20180301519812 Book No. 1 Vol. No. 1083 Page No. 68 on dated 24.12.2018. The complaint of the same has been lodged vide FIR No. LR No. 2124289/2024 dated 30.03.2024. Finder may contact on above address. Khemraj applied for Home Loan from State Bank of India. (R.K. Jain) Advocate Mob. : 9414311850, R152/1997

जयपुर विकास प्राधिकरण, जयपुर
क्र. /जविप्रा/उपा/ जोन-4/2024/डी-4309 दि. 8.1.2025
सार्वजनिक सूचना/विज्ञप्ति

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक श्री सीताराम बंजारा, श्री हरफूल गवारिया एवं श्री ओम प्रकाश गवारिया पुत्रान्वस्य श्री आनन्दी लाल बंजारा द्वारा शिव शंकर हाउसिंग कॉ-आपरेटिव सोसायटी लि. की योजना विवेक विहार के भूखण्ड संख्या 172 का नाम हस्तान्तरण पत्र जारी करवाने हेतु ऑनलाईन आवेदन प्रस्तुत किया गया है। प्रकरण में पूर्व में इस कार्यालय द्वारा शिव शंकर हाउसिंग कॉ-आपरेटिव सोसायटी लि. की योजना विवेक विहार के भूखण्ड संख्या 172, क्षेत्रफल 300 वर्गगज का पटटा श्री आनन्दी लाल बंजारा पुत्र श्री छीतरमल के पक्ष में क्रमांक 1662 दिनांक 26.06.2004 को जारी किया गया, जिसे उप पंजीयक जयपुर-प्रथम के यहां दिनांक 26.06.2004 को पंजीबद्ध कराया गया। तत्पश्चात श्री आनन्दी लाल गंवारिया की मृत्यु दिनांक 20.04.2018 को एवं उनकी पत्नी श्रीमती शांति देवी की मृत्यु 21.10.2006 को हो चुकी है। उक्त संबंध में आवेदक द्वारा प्रस्तुत आवेदन पत्र एवं दस्तावेजों के आधार पर आवेदक के पक्ष में उक्त भूखण्ड का लीजहोल्ड से फ्रीहोल्ड पटटे जारी करने की कार्यवाही करने के सम्बन्ध में किसी भी व्यक्ति, हितधारी, संस्था को कोई आपत्ति हो तो अधोहस्ताक्षरकर्ता को इस सूचना के प्रकाशित होने के 7 दिवस में प्रस्तुत कर देवें। नियत अवधि में कोई आपत्ति प्राप्त नहीं होने पर आवेदक के पक्ष में नियमानुसार कार्यवाही कर दी जावेगी। उपायुक्त जोन-4, जविप्रा, जयपुर

कार्यालय उपायुक्त मालवीय नगर जोन नगर निगम ग्रेटर जयपुर
क्रमांक : एन()/न.नि.ज.ग्रेटर/मा.न.जोन/2024/3256 दिनांक : 10.01.2025
सार्वजनिक सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मूल भूखण्ड संख्या बी-19, देवनगर, टोंक रोड, जयपुर सुदंशनपुरा गृह निर्माण सहकारी समिति का जयपुर विकास प्राधिकरण, जयपुर के द्वारा श्री अभिषेक धवन एवं निशान्त धवन पुत्र श्री नरेशचन्द्र धवन को क्षेत्रफल 547.06 वर्गगज भूमि का दिनांक 03.10.2023 को पट्टा विलेख जारी किया गया था। मूल पट्टेधारी श्री अभिषेक धवन एवं निशान्त धवन पुत्रान श्री नरेशचन्द्र धवन के द्वारा अलग-अलग रजिस्टर्ड सुविधापत्र आम दिनांक 03.12.2021 दिसका रजिस्ट्रेशन 09.10.2023 के द्वारा अपनी माता श्रीमती रेणु धवन को अधिकृत किया गया। अधिकृत रजिस्टर्ड सुविधापत्रआम श्रीमती रेणु धवन के द्वारा पंजीकृत विक्रय पत्र दिनांक 09.10.2023 के द्वारा भूखण्ड संख्या बी-19, देवनगर, टोंक रोड, जयपुर उत्तरी भाग का क्षेत्रफल 224.58 वर्गगज श्री सिद्धार्थ पोखरणा पुत्र निर्मल कुमार को एवं दक्षिणी भाग का क्षेत्रफल 334.71 वर्गगज पंजीकृत विक्रय पत्र दिनांक 09.10.2023 के द्वारा श्री विकास जैन एवं शैलेन्द्र जैन पुत्रान स्व. श्री रमेशचन्द्र जैन को बेचान किया गया है। श्री सिद्धार्थ पोखरणा पुत्र निर्मल कुमार के द्वारा भूखण्ड संख्या बी-19, देवनगर, टोंक रोड, जयपुर के उत्तरी भाग का क्षेत्रफल 224.58 वर्गगज रजिस्टर्ड विक्रय पत्र दिनांक 15.10.2024 के द्वारा एवं दक्षिण भाग का क्षेत्रफल 334.71 वर्गगज पंजीकृत विक्रय पत्र दिनांक 15.10.2024 के द्वारा श्री विकास जैन एवं शैलेन्द्र जैन श्री रमेशचन्द्र जैन की सुपोत्र श्रीमती उर्मिला राव पुत्री श्री सुमेरसिंह एवं श्रीमती स्मृति यादव पत्नी श्री अमीर यादव को बेचान किया गया। आवेदिका श्रीमती उर्मिला राव पुत्री श्री सुमेरसिंह एवं श्रीमती स्मृति यादव पत्नी श्री अमीर यादव के द्वारा आवेदन पत्र के साथ प्रस्तुत किये गये दस्तावेजों, शपथ पत्र (अण्डरटेकिंग), रजिस्टर्ड पट्टा, साईट प्लॉन, रजिस्टर्ड सुविधापत्रनामा, विक्रय पत्र एवं अन्य दस्तावेजों की छायाप्रति के आधार पर भूखण्ड संख्या बी-19, देवनगर टोंक रोड, जयपुर का नाम हस्तान्तरण चाहा गया। नगर निगम ग्रेटर जयपुर के द्वारा भूखण्ड संख्या बी-19, देवनगर, टोंक रोड, जयपुर का नाम हस्तान्तरण उक्त दस्तावेजों के आधार पर श्रीमती उर्मिला राव पुत्री श्री सुमेरसिंह एवं श्रीमती स्मृति यादव पत्नी श्री अमीर यादव के पक्ष में किया जाना है। इस नाम हस्तान्तरण आक्षत किसी भी व्यक्ति संस्था, फर्म, कम्पनी को किसी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो 07 दिवस में अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय (उपायुक्त, मालवीय नगर जोन नगर निगम ग्रेटर) में प्रस्तुत करें, अन्यथा निर्धारित समयावधि की समाप्ति के बाद, नियमानुसार नाम हस्तान्तरण की कार्यवाही सम्पादित कर दी जावेगी। उपायुक्त मालवीय नगर जोन नगर निगम ग्रेटर, जयपुर

उद्घोषणा (इश्तिहार) न्यायालय (राज.)

व्यवहार मिश्रित (मुत्तफरिक) वाद सं. 03/2024
विषय : उत्तराधिकार प्रमाण-पत्र प्रोबेट, लेटर ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन प्राप्त करने हेतु प्रार्थना-पत्र।
प्रार्थी - नाम पुनीत गुप्ता पुत्र स्व.सी प्रीतम कुमार गुप्ता जाति वैश्य विवाद स्थान जयपुर मृतक प्रीतम कुमार गुप्ता की सम्पत्ति के विषय में।

पेशी दिनांक 12/02/2025 सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि, उपरोक्त प्रार्थी/ प्रार्थीगण के इस न्यायालय में इस आशय का प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया है कि मृतक, नाम प्रीतक कुमार गुप्ता पुत्र श्री रिधनारायण गुप्ता जाति वैश्य निवासी एम.242,आशियाना उत्सव,माचवा,चम्पापुरा जयपुर (राजस्थान) 303706

अत:उक्त प्रार्थना-पत्र की स्वीकृति में यदि किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो वह इस न्यायालय में दिनांक 12 माह 02 सन् 2025 को न्यायालय में उपस्थित होकर अपनी आपत्ति प्रमाण सहित प्रस्तुत करें। उक्त दिवस के पश्चात् कोई मान्य नहीं होगी।

आज दिनांक 18 माह 12 सन् 2024 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय मुद्रांकन से जारी किया गया। आज्ञा से रीडर एडमिनिस्ट्रेटर जनरल, राजस्थान जयपुर

मोहर अदालत

जयपुर विकास प्राधिकरण, जयपुर
www.jda.urban.rajasthan.gov.in
क्रमांक : जविप्रा/उपा.1/जोन-1/2024-डी-2325 दिनांक : 31.12.2024
विज्ञप्ति

जविप्रा की योजना मालवीय नगर के भूखण्ड संख्या ए-696 क्षेत्रफल 220.27 वर्गगज की लीजहोल्ड दिनांक 10.09.2012 को श्री चन्द्रसिंह डाबरीया पुत्र स्व. श्री मोहनसिंह डाबरीया के पक्ष में जारी किया गया। प्रस्तुत मृत्यु प्रमाण पत्र में श्री चन्द्रसिंह डाबरीया पुत्र स्व. श्री मोहनसिंह डाबरीया की मृत्यु दिनांक 07.05.2025 एवं श्रीमती शांतादेवी पत्नी श्री चन्द्रसिंह डाबरिया की मृत्यु दिनांक 19.08.2018 अंकित है। आवेदक द्वारा निर्धारित प्रपत्र में सजरा शपथ पत्र अपलोड किया गया है जिसके अनुसार आवेदक के अतिरिक्त मृतक के 3 पुत्र एवं 1 पुत्री है। जिनके द्वारा जरिये पंजीकृत हक त्याग दिनांक 07.11.2024 के उक्त भूखण्ड पर अपना हक एवं अपने भाई अर्थात् आवेदक (श्री गजराज सिंह डाबरिया पुत्र स्व. श्री चन्द्रसिंह डाबरिया) के पक्ष में त्याग किया गया है। उपरोक्त दस्तावेजों के आधार पर आवेदक के द्वारा नाम हस्तान्तरण पत्र प्राप्त करने हेतु आवेदन किया है। अत: इस संबंध में यदि किसी व्यक्ति/संस्था/फर्म व अन्य को कोई आपत्ति हो तो विज्ञप्ति प्रकाशन की 7 दिवस की अवधि में अधोहस्ताक्षरकर्ता को आपत्ति दर्ज कराये अन्यथा निर्धारित अवधि में कोई आपत्ति प्राप्त नहीं होने पर नियमानुसार अग्रिम कार्यवाही कर दी जावेगी। उपायुक्त जोन-1 जविप्रा. जयपुर

जयपुर विकास प्राधिकरण, जयपुर
क्रमांक - जविप्रा/उपा/जोन-7/2024/डी 23 दिनांक 03-01-2025
सार्वजनिक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक श्री शिवनंदन शर्मा पुत्र श्री विजय कुमार शर्मा द्वारा जविप्रा द्वारा जारी लीजडीड एवं पंजीकृत विक्रय पत्रों के आधार पर जविप्रा की योजना विधानसभा सचिवालय आवास योजना के भूखण्ड संख्या 188 क्षेत्रफल 90 व.मी. का लीजहोल्ड से फ्री होल्ड पट्टा जारी किये जाने हेतु आवेदन किया है। जविप्रा की योजना विधानसभा सचिवालय आवास योजना के भूखण्ड संख्या 188 क्षेत्रफल 90 व.मी. का

किशनगढ़ बास नगर पालिका ने हटाए सड़क से अतिक्रमण

किशनगढ़ बास। शहर में हर 5 मिनट बाद लगने वाले जाम से निजात दिलाने के लिए 12 माह पहले तत्कालीन रहे एसडीएम प्रशिक्षु आईएएस अधिकारी धीरज कुमार की ओर से की गई प्रस्तावित मोठूका चौक पर बस स्टैंड शिफ्ट करने की फाइल 12 माह बाद आज भी नगर पालिका की अलमारी में बंद है। वैसे यातायात को सुचारू रखने के लिए पुलिस की व्यवस्था की गई है लेकिन इसके बाद भी हर 5 मिनट बाद जाम की स्थिति बनी हुई है। शुक्रवार को एक बार फिर नगर पालिका और पुलिस ने मिलकर खैरथल तिजारा अलवर रोड व मेन बाजार में हों रहे है स्थाई अतिक्रमण को हटाने की कार्रवाई की।

नगर पालिका कर्मचारी व पुलिस जाप्ता किशनगढ़ बास में तिजारा रोड पर सड़क पर खड़े ठेले वालों को हटाया।

- 12 महीने पहले अधिकारियों ने बैठक कर बनाई थी मोठूका चौक पर बस स्टैंड को शिफ्ट करने की योजना

पुलिस को साथ में लेकर नगर पालिका की ओर से की गई ठेलें खोके वालों को हटाने की कार्रवाई को लोगों ने महज़ एक खाना पूर्ति व दिखावा बताया है। लोगों का कहना था की जाम की समस्या से निजात दिलाने के लिए ठेले खोके वालों को हटाना ही पर्याप्त नहीं है इसके लिए 12 माह से नगर पालिका की अलमारी में बंद पड़ी बस स्टैंड शिफ्ट करने की फाइल को बाहर निकालने की जरूरत है जिसे अधिकारियों ने ताले में बंद करके रखा हुआ है। लेकिन यह बात नगर पालिका वालों को कौन समझाए कि गरीब ठेले वालों को हटाने से जाम की समस्या खत्म होने वाली नहीं है।

यह सही है कि तोप सर्किल से तिजारा रोड पेट्रोल पंप तक अलवर रोड खेल मैदान तक और खैरथल रोड महावर धर्मशाला से आगे तक सडक के दोनों और ठेले खौको वालों ने सडक को सुकडा कर रखा है तो वहीं दुकानदार भी सडक तक अतिक्रमण करके रखने में भी कई बार कार्रवाई की है। लेकिन हालात नहीं सुधरे हैं। नगर पालिका पुलिस की मदद लेकर ठेली वालों को हटवा तो सकती है ठेलें खोके को जप्त कर सकती हैं।

जुर्माना लगाकर और हिदायत देकर छोड़ भी देती हैं। क्या कभी नगर पालिका वालों ने इस बात पर ध्यान दिया है की बार-बार हटाने के बाद वापस कौन लगवा रहा है। ठेले खौके वाले सडक पर जरूर खडे हैं लेकिन सडक पर खडे होने का किराया वह एक दुकानदार से भी अधिक देते हैं। करवाई तो उन पर होनी चाहिए जो दुकानदार उनसे किराया लेकर सडक पर ठेली लगाने की इजाजत दे रहे है।

'अच्छी शिक्षा के लिए सहभागिता जरूरी'

निवाई। मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कार्यालय निवाई में वालंटियर प्रशिक्षण हेतु दक्ष प्रशिक्षक की कार्यशाला का आयोजन हुआ।

कार्यशाला शुभारंभ मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी मंजू मीणा, अतिरिक्त ब्लॉक शिक्षा अधिकारी रमेशचंद्र विजय एवं प्रधानाचार्य गिरिराजप्रसाद गुर्जर ने मां सरस्वती के माल्यार्पण कर किया। दक्ष प्रशिक्षक गिरिराजप्रसाद गुर्जर द्वारा अपना गांव अपना विद्यालय सबसे प्यारा सबसे न्यारा बनाने के लिए प्रत्येक गांव से स्वयंसेवक शिक्षक तैयार करने की जानकारी दी।

उन्होंने वालंटियर टीचर को जोडऩे, वॉलिंटियर के उद्देश्य कार्य एवं भूमिका, विद्यांजलि कार्यक्रम एसडीएमसी व एसएमसी का गठन, शिक्षा विभाग द्वारा संचालित विभिन्न शिक्षा प्रोत्साहन योजनाओं की जानकारी प्रदान करते हुए सभी को अपने-अपने पंचायत परिक्षेत्र के सभी विद्यालयों में प्रशिक्षण हेतु आवश्यक निर्देश दिए। मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी मंजू मीणा ने संबोधित करते हुए कहा कि जन सहभागिता से शिक्षा में बेहतरी के प्रयास जरूरी है। इसके लिए समुदाय में से शिक्षा के प्रति सकारात्मक जुडाव रखने वाले विभिन्न कौशलों में प्रशिक्षित व्यक्तियों को जोडक़र अपना गांव अपना स्कूल सबसे अच्छा के संकल्प को सिद्ध करें।

सार-समाचार

मारपीट का आरोपी गिरफ्तार

महिला से मारपीट के आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार किया।

पावटा। महानिरीक्षक पुलिस जयपुर रेंज जयपुर के निर्देशानुसार जिला कोटपूतली बहरोड़ पुलिस अधीक्षक राजन दुष्यंत व अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कोटपूतली वैभव शर्मा के सुपरविजन, वृत्ताधिकारी वृत्त बानसूर राजेंद्र बुरडक के निर्देशन एवं बास दयाल थानाधिकारी किशनलाल के नेतृत्व में गठित पुलिस टीम द्वारा मुख्य आरोपी रामकरण को गिरफ्तार किया गया। बास दयाल थानाधिकारी किशनलाल ने बताया कि 6 जनवरी को परिवादी भूदादास पुत्र हीरादास स्वामी उम्र 60 साल निवासी ढाणी मिसाला की तन खोहरी ने मामला दर्ज करवाया था कि 5 जनवरी 2025 शाम 5.30 बजे के करीब घर के अंदर अपनी पत्नी कमली देवी के साथ बैठा हुआ था। पुत्र वधू सुमन घर में काम कर रही थी। उसी समय राय मशवरा कर नामजद कुछ लोग व महिलाए अपने हाथों में कुल्हाडी, बाकडी, कसिया, लाठी लेकर रिहायशी मकान में घुस गए कुछ समझ पाते रामकरण ने कुल्हाडी से मेरे पर वार कर दिया। मेरी पत्नी कमली देवी मुझे बचाने के लिए आई तो उसे पर भी कुल्हाडी से ताबडतोड वार कर दिया। वहीं उसके बाद मेरी पुत्रवधू हमें बचाने आई तो उसके साथ अभद्रता की व घसीट कर घर के बाहर ले आए एवं जान से मारने की नीयत से खिलाडी मैं लड़कियों से हमला करते रहे जिसमें हम लहूलुहान हो गए। जिस पर बीएनएस में मामला दर्ज कर अनुसंधान शुरू किया गया। घटना की गंभीरता को देखते हुए बीएनएस में मामला दर्ज कर पीड़ितों का मेडिकल करवाकर आरोपियों की तलाश हेतु गठित टीम द्वारा दबिश दी जाकर मुख्य आरोपी रामकरण को बीएनएस के तहत गिरफ्तार किया गया व शेष आरोपियों की तलाश जारी है।

प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

निवाई। युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार के नेहरू युवा केंद्र के जिला युवाधिकारी हितेशकुमार के निर्देशानुसार ब्लॉक स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। निवाई ब्लॉक के पूर्व वालंटियर नरेंद्र सिंह ने बताया कि प्रतियोगिता में निवाई ब्लॉक के 15 से 29 वर्ष के युवा-युवतियां भाग लिया। प्रतियोगिता का आयोजन युवा शक्ति को खेलों के प्रति प्रेरित करने व उनकी प्रतिभा को मंच प्रदान करने के उद्देश्य से किया गया। उन्होंने बताया कि कबड्डी पुरुष वर्ग में फाइटर टीम ने प्रथम स्थान, रस्साकसी महिला वर्ग में रानी लक्ष्मीबाई टीम प्रथम, 100 मीटर दौड़ में प्रथम स्थान प्रियंका मीणा, द्वितीय स्थान मनीषा मीना व तृतीय स्थान रोशन मीणा ने प्राप्त किया। उन्होंने बताया कि पुरुष एवं महिला वर्ग 200 मीटर दौड़, पुरुष एवं महिला वर्ग व सम्मान एवं पुरस्कार विजेता खिलाडिय़ों को स्मृति चिन्ह व प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

वार्षिकोत्सव 14 को

पावटा। पाथरेडी स्थित श्री बाबा भोमिया गौशाला गौतीर्थ परिसर में गौशाला समिति का 17वाँ वार्षिकोत्सव 14 जनवरी को आयोजित किया जाएगा। श्री बाबा भोमिया गौशाला समिति मुख्य संरक्षक मुकेश अठावाल सहित पदाधिकारियों व सदस्यों ने बताया कि 14 जनवरी को सुबह 9.15 बजे सरपंच ग्राम पंचायत पाथरेडी रामस्वरूप कसाना की अध्यक्षता व क्षेत्र के सम्माननीय जनप्रतिनिधि व समाजसेवियो के विशिष्ट आतिथ्य में गौ पूजन के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया जाएगा। उसके बाद आयोजित होने वाले इस विशाल वार्षिकोत्सव में राजस्थान के लोक कलाकार सोनम गुर्जरी एंड पार्टी द्वारा राजस्थानी लोक गीत व सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं भव्य नृत्य कलाकारों द्वारा नृत्य का आयोजन होगा।

बालाजी को पौषबड़ों का लगाया भोग

श्रीमाधोपुर। कस्बे के निकट इच्छापूर्ण बालाजी मंदिर स्टेशन रोड में पर पौष बड़ो का भोग लगाकर प्रसाद वितरित किया। पुजारी महावीर प्रसाद लता स्वामी ने बताया कि सुबह बालाजी महाराज का अभिषेक कर सिंदूरी चोला चढाया गया व नवीन पोशाक धारण कराई गई। दोपहर 1:00 बजे से प्रसादी का भोग लगाकर डोना प्रसादी वितरण की गई। इस मौके पर भक्ति राजू नाई, नवल किशोर फूलका बिजेदर जांगिड़ सहीत दर्जनों कार्यकर्ता मौजूद थे।

महाकुंभ के लिए रवाना होगा दल

निवाई। महाकाली कंकाली धाम नोहटा के महंत शंकरगिरी महाराज के नेतृत्व में ग्राम पंचायत नोहटा से महाकुंभ में संतों की सेवार्थ के लिए गिर्राज चौधरी, संजय चौधरी, धर्मराज चौधरी, मीठालाल माली, कन्हैयालाल पांचाल, तुलसीराम चौधरी व योगेश चौधरी सहित कई ग्रामीणों का दल नोहटा से महाकुंभ के लिए रवाना होगा।

हर बच्चें को शिक्षित करना होगा : डॉ. रामजीलाल बैरवा

निवाई। राजकीय सामुदायिक अस्पताल निवाई के डॉ. रामजीलाल बैरवा ने अपने पिता की चतुर्थ पुण्यतिथि पर पीपलू क्षेत्र के गांव इस्माइलपुर में करीब 60 बच्चों को स्वेटर व लगभग 30 बुजुर्गो को कंबल वितरित करके उनका मनोबल बढ़ाया। डॉ रामजीलाल बैरवा ने प्रथम शिक्षक महात्मा फुले, प्रथम शिक्षिका सावित्रीबाई फुले व डॉ आंबेडकर के जीवन के साथ-साथ शिक्षा पर अपने विचार रखते हुए कहा कि भारत को विश्व गुरु बनाना है तो भारत के हर बच्चें को शिक्षित करना होगा।

उन्होंने कहा कि बच्चों को उच्च स्तरीय शिक्षा दिलाकर उनके भविष्य का निर्माण करें। संस्था प्रभारी रामलाल ने बताया कि डॉ. बैरवा ने उनके पिताजी स्व. पांचूराम बैरवा की प्रथम पुण्यतिथि पर गरीब व असहाय व्यक्तियों को कंबल वितरित किए थे। द्वितीय पुण्यतिथि पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया था। तृतीय पुण्यतिथि पर भी असहाय लोगों को पुन: सर्दी से बचाव हेतु कंबल वितरित किए व पाठशाला के बच्चों को स्टेशनरी का सामान व स्कूल बैग वितरित किए थे। जो समाज के लिए एक प्रेरणा है। इस अवसर पर संस्था प्रभारी रामलाल, भैरूलाल जाट, मोतीलाल बैरवा सहित कई ग्रामीणों ने विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की।

- पिता की पुण्यतिथि पर बच्चों को स्वेटर व बुजुर्गो को दिए कंबल

स्कूल में गर्म स्वेटर वितरित

मनोहरपुर। सीकर के लोसल ग्राम पंचायत भीराणा के सरकारी स्कूल मदद फाउंडेशन द्वारा गर्म स्वेटर वितरित किए गए संस्था सदस्य राजेंद्र भीराणा ने बताया कि इस में ठंड को देखते हुए राजकीय विद्यालय में गर्म स्वेटर वितरित किए गए।

इस में संस्था सदस्य समाजसेवी राजकंवर के अलावा शंकर सिंह राज कंवर. कुणाल सिंह मृणाल करणी प्रताप सिंह भानु बिटिया करुणा कंवर राज यशोदा कंवर योगेश कुमार कशिश दुबे रितेश कुमार इंदर सिंह रतन सिंह ईश्वर गुरुजी गिरीश कुमार संतोष जांगिड़ कमलेश कुमावत प्रियंका जांगिड़ का सहयोग का सहयोग रहा। इस में मातृशक्ति द्वारा बच्चों को स्वेटर के साथ बच्चों को कुछ खाने का सामान भी दिया गया। स्कूल प्रशासन द्वारा सभी सदस्यों का स्वागत किया गया।

कैलाश सत्यार्थी के जन्मदिवस पर सुरक्षित बचपन सप्ताह का आयोजन

शाहपुरा। शुक्रवार को सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशन बाल आश्रम के सहयोग से संचालित बाल मित्र ग्राम बनीपार्क, ठीकरिया, जयसिंहपुरा सहित बाल मित्र ग्रामों में बाल आश्रम संस्थापिका माता सुमेधा कैलाश के निर्देशन में सुरक्षित बचपन सप्ताह के तीसरे दिन नोबेल शांति पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी के 71वें जन्मदिन 11जनवरी सुरक्षित बचपन दिवस के उपलक्ष्य में बाल मित्र ग्रामों में सुरक्षित बचपन सप्ताह के अंतर्गत विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया जिसमें खेलकूद प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, बच्चों को आत्म रक्षा के गुर एवं बाल विवाह जन-जगरूकता पर्चे एवं पंपलेट वितरित कर सुरक्षित बचपन सप्ताह का अंतर्गत गतिविधियों का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर बाल आश्रम के कार्यकर्ताओं ने लोगों को बताया कि सुरक्षित बचपन सप्ताह में विभिन्न तरह-तरह कि गतिविधियां आयोजित कर लोगों को बाल अधिकारों एवं सामाजिक बुराइयों के खिलाफ जागरूक किया जाएगा। तथा हर बच्चे को स्वस्थ्य, शिक्षित एवं सुरक्षित करने का संकल्प दिलाया गया। वहीं बाल मित्र ग्राम बनीपार्क में सुरक्षित बचपन सप्ताह के अंतर्गत बालक एवं बालिका वर्ग का वॉलीबॉल मैच का आयोजन करवाया गया। जिससे बच्चों का शारीरिक एवं मानसिक विकास को बढ़ावा मिलता है तथा बच्चों में खेल के माध्यम से भाईचारे एवं सौहार्द कि भावना का विकास होता है। बाल मित्र ग्राम ठीकरिया में बालिकाओं को आत्मरक्षा के गुर सिखाए गए। तथा गुड टच बेड टच कि जानकारी देते हुए बाल विवाह अधिनियम 2006कि जानकारी देते हुए पर्चे एवं पंपलेट वितरित किए गये। तथा बाल मित्र ग्राम जयसिंहपुरा मे निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित कि गई। जिसमें नोबेल शांति पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी के जीवन के बारे में निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित कि गई। तथा बाल अधिकारों के प्रति जागरूक किया गया।

जनसुनवाई में 15 परिवाद मिले, परिवेदनाओं का मौके पर ही किया निस्तारण

पावटा। राज्य सरकार के निर्देशानुसार आमजन की समस्याओं, परिवेदनाओं के निवारण, सुनवाई और त्वरित समाधान के लिए त्रिस्तरीय जनसुनवाई व्यवस्था के तहत गुरूवार को जिले के समस्त उपखंड मुख्यालयों पर उपखंड स्तरीय जनसुनवाई शिविरों का आयोजन किया गया।

जिसके तहत पावटा उपखंड की जनसुनवाई का आयोजन उपखंड अधिकारी कपिल उपाध्याय की अध्यक्षता में पावटा पंचायत समिति सभागार में किया गया। जिनमें आमजन की परिवेदनाएं प्राप्त कर प्रकरणों का निस्तारण किया गया। वहीं उपखंड अधिकारी कपिल उपाध्याय ने पंचायत समिति पावटा में आयोजित उपखंड स्तरीय जनसुनवाई के दौरान आमजन की समस्याओं को सुनकर उनके निस्तारण के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए। वहीं जनसुनवाई के दौरान कुल 15 परिवाद प्राप्त हुए, जिनमें से विभिन्न परिवेदनाओं का मौके पर ही निस्तारण किया गया और शेष परिवेदनाओं के निस्तारण के लिए संबंधित विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया गया।

उन्होंने आमजन की 15 परिवेदनाओ जिनमें चार पेंशन बंद करने, एक रिकॉर्ड में नाम शुद्धिकरण, पावटा कस्बे में पीएचईडी विभाग की लापरवाही के कारण चार जगह पाइप लाइन लीकेज समस्या, पावटा में विद्युत विभाग द्वारा दो विद्युत कनेक्शन जारी करने, ग्राम टोरडा में एक रास्ता प्रकरण, जनाधार में तीन शुद्धिकरण मामलों का मौके पर ही निस्तारण किया। वहीं ग्राम पुरुषोत्तमपुरा के लोगों ने पुरुषोत्तमपुरा को कोटपुतली तहसील व पंचायत समिति में रखने को लेकर ज्ञापन सौंपा।

जिस पर उपखंड अधिकारी कपिल उपाध्याय ने समस्या के निस्तारण का आश्वाशन दिया। साथ ही उन्होंने जनसुनवाई के दौरान सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ आमजन तक पहुंचाने के साथ ही जनता की समस्याओं पर प्रभावी मॉनिटरिंग करते हुए तत्काल निस्तारण के निर्देश दिए। जनसुनवाई में उपखंड अधिकारी कपिल उपाध्याय, तहसीलदार संजय खेदड सहित विभिन्न विभागों के अधिकारियों-कर्मचारियों ने उपस्थित रहकर अपने-अपने विभाग से संबंधित राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी ग्रामीणों को उपलब्ध करवाई व साथ ही विभिन्न योजनाओं से ग्रामीणों को मौके पर लाभांवित भी किया गया। इस अवसर पर स्थानीय जनप्रतिनिधि सहित बडी संख्या में ग्रामीण उपस्थित रहे।

- 15 परिवेदनाओ जिनमें चार पेंशन बंद करने, एक रिकॉर्ड में नाम शुद्धिकरण आदि के थे

टोंक के कलाकार बंगाल में देंगे नाट्य प्रस्तुति

टोंक। रंगमंच की दुनिया में टोंक का नाम लगातार उभर रहा है। पिछले 8 वर्षों से अपनी कला यात्रा को जारी रखते हुए कम्युनिटी थिएटर टोंक ने देश-विदेश के प्रतिष्ठित नाट्य महोत्सवों में अपनी अलग पहचान बनाई है। यह टोंक जिले के लिए गर्व की बात है कि एशिया के सबसे बडे नाट्य समारोह "भारत रंग महोत्सव (भारंगम)' में फरवरी 2024 में उनके नाटक "द डेथ ऑफ गैलीलियो" का चयन हुआ। यह राजस्थान की एकमात्र प्रस्तुति थी। 2016 से अब तक इस थिएटर समूह ने 15 से अधिक प्रतिष्ठित नाट्य महोत्सवों में अपनी प्रस्तुतियों के माध्यम से शहर का नाम रोशन किया है। इस सफलता की कडी में अब समूह का हास्य और व्यंग्य नाटक "अंधेर नगरी चौपट राजा" दो प्रमुख नाट्य महोत्सवों में चयन हुआ हैं, जो 28 दिसंबर 2024 को कलकत्ता में गोबरडांगा मृदंगम द्वारा आयोजित "मृदंगम उत्सव 2024" को बंगाल के शिल्पभूमि द्वारा आयोजित "भारत नाट्य महोत्सव 2024" में हिस्सा लेंगे।

सरकारी स्कूल कुनेड में परीक्षा पे चर्चा का पंजीकरण

पावटा। ब्लॉक पावटा के शहरी शिक्षा संकुल प्रभारी राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कुनेड में परीक्षा पे चर्चा का पंजीकरण व अपार आईडी बनाने के महत्त्व पर चर्चा को लेकर पावटा सीबीईओ धर्मवीर जिंदोलिया की अध्यक्षता में बैठक का आयोजन किया गया। जिसमे शहरी शिक्षा संकुल प्रभारी कुनेड के अधीनस्थ सभी निजी विद्यालयों के संस्था प्रधानों ने भाग लिया। इस दौरान पावटा सीबीईओ धर्मवीर जिंदोलिया ने सभी निजी विद्यालयो के संस्था प्रधानों को अपार आईडी व परीक्षा पे चर्चा के पंजीकरण को शत प्रतिशत करने के निर्देश दिये। वही निजी विद्यालयो के संस्था प्रधानों की और से ओमप्रकाश शर्मा ने कार्य समय पर करनेका आश्वासन दिया। बैठक में स्थानीय संस्था प्रधान बलदेव शर्मा व समस्त स्टाफ द्वारा पावटा सीबीईओ धर्मवीर जिंदोलिया व एएओ अशोक शर्मा का माला व साफा पहनाकर स्वागत किया गया। वही व्याख्याता अरविंद कुमार मीणा व अध्यापक मोती लाल यादव ने सभी आगंतुकों का आभार व्यक्त किया। वही राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पावटा प्रधानाचार्य जयसिंह यादव ने बताया कि गुरुवार को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पावटा में नवनियुक्त स्टाफ सचिव वीरेंद्र अठावाल को नियुक्त करने पर विद्यालय परिवार की ओर से उज्जवल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाए दी गई एवं पूर्व स्टाफ सचिव चिरंजीलाल गुर्जर को भी विद्यालय परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए प्रधानाचार्य जयसिंह यादव ने कहाँ कि उन्होंने अपने कार्यकाल में विद्यालय गरिमा एवं विद्यालय परिवार की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए अपना सर्वोत्तम प्रयास एवं कार्य का निर्वहन किया है। वैसे ही नवनियुक्त स्टाफ सचिव वीरेंद्र अठावाल से भी यह अपेक्षा की गई है कि यह उपखंड के बडे विद्यालय की गरिमा को ध्यान में रखते हुए इसे बुलंदियों पर पहुंचने का कार्य करेंगे।

विद्यार्थियों का किया सम्मान

श्रीमाधोपुर। महात्मा गाँधी पीजी कॉलेज में विश्वविद्यालय गोल्ड मेडल प्राप्त विद्यार्थियों का सम्मान किया गया। विज्ञान संकाय प्रभारी वीरेंद्र यादव ने बताया कि अनुराधा सैनी पुत्री राधेश्याम सैनी निवासी श्रीमाधोपुर ने एमएससी फाइनल-रसायन शास्त्र में 88.85 प्रतिशत के साथ 2024 का गोल्ड मैडल जीता है साथ ही डिंपल सैनी पुत्री शंकर लाल सैनी, निवासी श्रीमाधोपुर ने 70 प्रतिशत के साथ एमए अर्थशास्त्र में 2024 का गोल्ड मैडल जीता।

गजेंद्र पालीवाल पुत्र हंसराज वर्मा, निवासी मऊ ने 75 प्रतिशत के साथ इतिहास विषय में 2023 का गोल्ड मेडल प्राप्त करके पंडित दीनदयाल उपाध्याय शेखावाटी यूनिवर्सिटी सीकर मे टॉप किया तथा पुष्पा जीनगर पुत्री देवकीनंदन जीनगर परीक्षा 2024 में हिंदी विषय में 77.22 प्रतिशत अंको के साथ विश्वविद्यालय स्तर पर द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

विद्यार्थियों के महाविद्यालय पहुंचने पर निदेशक मोहर सिंह खर्रा, प्राचार्य डॉ. वीरेंद्र सैनी, उपप्राचार्य विजेंद्र कुमार, कला संकाय प्रभारी सुशीला देवी, वाणिज्य संकाय प्रभारी मांगीलाल कुमावत, कार्यालय प्रभारी कैलाश कुमार के द्वारा साफा बंधवाकर, माला पहनाकर, मिठाई खिलाकर व प्रतीक चिन्ह प्रदान कर सम्मान किया गया।

गौकशी के 7 अभियुक्त गिरफ्तार

टोंक। जिला पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विजेन्द्र सिंह भाटी के सुपरविजन में निवाई थाना व डीएसटी टीम द्वारा थाना बरोनी में दर्ज गौकशी के प्रकरण में 7 मुल्जिमान को गिरफ्तार किया गया। साथ ही उनके द्वारा प्रयुक्त किये गये दो वाहन भी जप्त किये।

ज्ञात रहे कि गत 2 जनवरी 2024 को ग्राम पहाडी के पास ईंटो के बने एक कमरे में गौ मांस के अवशेष मिले थे। अपराधियों की तलाश में जुटी पुलिस ने ग्वालियर म.प्र. व जिला सवाईमोधापुर, जयपुर के अलावा कई जगह दबिश देकर गहन छानबिन की, जिसमें साईबर एक्सपर्ट व मुखबिर की प्राप्त सूचना पर 7 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया। पुलिस के अनुसार शेष आरोपियों की तलाश जारी है।

थानाधिकारी मानवेन्द्र सिह ने बताया कि गिरफ्तार आरोपियों में खालिद पुत्र सादिक अली जाति अब्बासी मुसलमान उम्र 26 साल निवासी शेरू भाई की गली तालकटोरा टोंक, साजिद पुत्र मकसुद जाति पठान मुसलामन उम्र 40 निवासी बहीर पायगा टोंक, समीर मिया उर्फ कामिल पुत्र सलीम उम्र 24 साल निवासी जामा मस्जिद के पीछे बहीर टोंक, निजाम पुत्र जमाल खाँ जाति कलन्दर मुसलमान् उम्र 45 साल निवासी बहीर पायगा टोंक, जगमाल खान पुत्र मुंशी बंजारा जाति बंजारा मुसलमान उम्र 33 साल निवासी कमाल की ढाणी ललवाड़ी, नोसिन पुत्र सोनू खां जाति बंजारा मुसलमान् उम्र 21 साल निवासी कमाल की ढाणी ललवाड़ी, शकील पुत्र ईद मोहम्मद जाति मुसलमान् उम्र 42 साल निवासी इस्लामपुरा ईसरदा थाना चौथ का बरवाड़ा जिला सवाई माधोपुर शामिल है।

ईनामी वांछित वारंटी गिरफ्तार : जिला पुलिस अधीक्षक विकास सांगवान द्वारा चलाये जा रहे वांछित अपराधियो की धरपकड अभियान के तहत वृत्ताधिकारी मालपुरा आशीष प्रजापत एवं थानाधिकारी लाम्बाहरिसिंह मुकेश कुमार ने कार्यवाही करतें हुए वांछित अपराधियों व स्थाई वारंटीयो की गिरफ्तारी हेतु टीम गठीत कर वांछित अपराधियों की धरपकड के दौरान तलाश में फरार स्थाई वारंटी (ईनामी 5000 रूपये) रतन पुत्र जस्सा जाति जाट उम्र 38 साल निवासी सील पुलिस थाना अराई जिला अजमेर को ग्राम सील से डिटेन किया गया।

दो महिलायें गिरफ्तार : जिला पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में मोटाराम बेनिवाल, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक मालपुरा ने अवैध हथियार की रोकथाम विशेष अभियान चलाकर कार्यवाही करते हुए उनके सुपरविजन में दूनी थानाधिकारी डेमन्त जनागल की थाना टीम व वन विभाग की सयुक्त टीम द्वारा ग्राम कनवाडा मे सघन तलाशी अभियान चलाते हुये दो मकानो से अवैध हथियारो का जखीरा दो टोपीदार बन्दूक, एक बन्दूक गन, दो छुरा व मांस काटने के लकडी के दो गुट्टे बरामद किए।

भव्य शोभायात्रा निकाली

राजगढ़। कस्बे में श्री राम मंदिर दिवस को लेकर सनातन सभा की ओर से शुक्रवार को भव्य शोभायात्रा में श्री राम की महिमा एवं रामधुनी के गुणगान के साथ श्रद्धा एवं भक्ति का आलम रहा।

भगवान श्री राम की भक्ति से उत्प्रोत माहौल में सिर एवं ललाट पर चंदन से लिखा श्रीराम का चित्र प्रमुख आकर्षण का केंद्र रहा। आकर्षक ध्वज एवं पताकाओ के साथ जय श्री राम के नारे से समूचा माहौल गूंज उठा। इस दौरान राम दरबार सहित झाकियों से सुसज्जित शोभा यात्रा स्टेशन मार्ग स्थित सैनी धर्मशाला से प्रारंभ हुई।

भाजपा नेता बन्ना राम मीना एवं राजेंद्र दीक्षित के नेतृत्व में शोभा यात्रा का प्रमुख मार्गो में अरे मैं प्रेमी लोगों की ओर से स्वागत किया गया। सैनी धर्मशाला से शोभायात्रा प्रमुख मार्गो से होती हुई गोविंदा की बाजार सीताराम मंदिर पहुंची।

मंदिर के महंत मदन लाल शर्मा एवं अन्य धर्म प्रेमी लोगों की ओर से शोभा यात्रा की अगवानी की। इस अवसर पर मुरारी लाल शास्त्री, अजय शर्मा, नवल किशोर शर्मा, अमरचंद सिद्ध, खेम सिंह आर्य, प्रीति विजय, मीना खंडेलवाल, रश्मि विजय, राजेश्वरी,एवं भारी संख्या में सनातन सभा से जुड़े महिला पुरुष सदस्य मौजूद रहे। शनिवार को सीताराम मंदिर में वार्षिकोत्सव एवं कीर्तन का कार्यक्रम आयोजित होगा इसमें भजन प्रस्तुत किए जाएंगे।

अलवर में अनफिट बालवाहनियों पर आखिर कब होगी कार्यवाही

बाल वाहिनियों का फिटनेस एक कागजी बन कर रह जाता है

अलवर। परिवहन विभाग जिम्मेदार अधिकारियों और स्कूल व्यवस्थापकों की लापरवाही के कारण अलवर मे कभी भी हो सकती है करोली कांड जैसी पुनार्वत्ति जिसमें कंडम स्कूल बस की फिटनेस नही होने पर परिवहन विभाग ने जब्त नही किया जिसके कारण एक मासूम मौत का ठास बन गया था उसी प्रकार अलवर में अनेकों ऐसी बालवाहनियां चल रही है जो कभी भी इस प्रकार के हादसे को अंजाम दे सकती है।

क्या था करोली वाहिनी कांड : घटना 23 फरवरी 2019 की है जब करौली जिले में एक प्राइवेट स्कूल व परिवहन विभाग की लापरवाही ने 6 साल के बालक की जान ले ली. दरअसल करौली के कृष्णा चिल्ड्रन एकेडमी स्कूल की खस्ताहाल बस के टूटे हुए फर्श से एक 6 साल का छात्र यश गुर्जर सडक़ पर गिर गया. जिसके बाद बस के पहिए से कुचलकर उसकी मौत हो गई. पुलिस ने बस को जब्त कर लिया. परिवहन विभाग ने बस का लाइसेंस निलंबित कर दिया.

घटना से प्रशासन में हडक़ंप मच गया. उप जिला कलेक्टर, पुलिस उपाधीक्षक, जिला परिवहन अधिकारी गुडला गांव पहुंचे तथा घटना की जांच प्रारंभ कर कार्रवाई का आश्वासन दिया. मामले में जांच के लिए एसडीएम, डीएसपी व डीटीओ को शामिल कर टीम गठित की गई है.

परिवहन विभाग की जांच में सामने आया कि 2017 के बाद बस फिटनेस के लिए नहीं आई थी, एसडीएम ने माना की स्कूल बस की परिवहन विभाग ने भी फिटनेस जांच कर कार्रवाई नहीं की । इसी प्रकार अलवर में भी कंडम बाल वाहनियों में अलवर जिले सैकड़ों बच्चे स्कूल जाने को मजबूर है कही ये कंडम बाल वाहिनियां इन मासूमों के लिए काल चक्र ना बन जाए इस बारे में जिला कलक्टर ने परिवहन विभाग को निर्देश भी दिए है कि सभी बाल वाहिनियों की जांच की जाए लेकिन जिला कलक्टर के आदेश के एक माह बाद भी अभी तक इन पर कोई कार्यवाही नही हो पाई है लगता है प्रशासन किसी बड़े हादसे का इंतजार कर रहा है। वही बच्चों को जानवरों की तरह छोटी बाल वाहिनियों में ठूस दिए जाते है इतनी बड़ी लापरवाही और अनदेखी जिला प्रशासन की तरफ से कैसे हो रही है यह सोचनीय प्रश्न है।

सभी बालवाहनियों में कैमरे,गवर्नर लगाना जरूरी लेकिन नही लगते परिवहन विभाग के नियम के अनुसार सभी स्कूल वाहनियों में कैमरे और गवर्नर, पैनिक बटन लगाना जरूरी है लेकिन आज जांच की जाए तो अस्सी प्रतिशत वाहनों में ये सभी उपकरण नही होगे। वही वाहनों की फिटनेस ऑनलाइन होने के कारण बाल वाहिनियां सीधे फिटनेस सेंटरों पर पहुंचती है जहां जहां उनकी गुणवत्ता की सम्पूर्ण जांच नही की जाती और अनेकों कमियों को अतिरिक्त चार्ज लेकर नजर अंदाज कर दिया जाता है जिससे बाल वाहिनियों का फिटनेस एक कागजी बन कर रह जाता है।

अलवर में ई-रिक्शा में क्षमता से अधिक स्कूली बच्चों को ले जाते है रोजाना स्कूल।

मैंने सोचा कि मुझे ये कहना चाहिए, हिन्दी हमारी राष्ट्रीय भाषा नहीं है, ये एक आधिकारिक भाषा है। पूर्व क्रिकेटर के बयान पर सोशल मीडिया पर तरह-तरह के कमेंट आए। - आर अश्विन

कॉलेज के ग्रेजुएशन सेरेमनी के दौरान छात्रों को सम्बोधित करते हुए बोले आर अश्विन।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

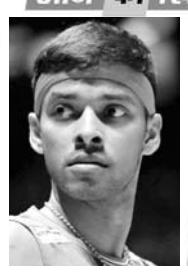

चिराग शेट्टी

चिराग शेट्टी और सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी की भारतीय जोड़ी ने शुक्रवार को क्वार्टरफाइनल में स्थानीय जोडी के खिलाफ रोमांचक जीत दर्ज करते हुए मलेशिया ओपन 2025 बैडमिंटन टूर्नामेंट में पुरुष युगल स्पर्धा के सेमीफाइनल में जगह बना ली है। आज यहां 50 मिनट तक चले मुकाबले में चिराग-सात्विक ने मलेशिया की ओंग यू सिन और टेओ ई यी की जोड़ी को सीधे गेम में 26-24, 21-15 से शिकस्त दी। भारतीय जोड़ी ने पहले गेम प्रदर्शन करते हुए ओंग यू सिन और टियो ई यी की मलेशियाई जोड़ी से मिली कांटे की टक्कर दी।

क्या आप जानते हैं ?... सचिन तेंदुलकर दांये हाथ के बल्लेबाज तथा दांये हाथ के गेंदबाज हैं लेकिन वे बांये हाथ से लिखते हैं।

विमेंस वनडे: भारत ने आयरलैंड को 6 विकेट से हराया

स्मृति मंधाना ने रचा इतिहास, प्रतिका और तेजल की फिफ्टी

राजकोट, 10 जनवरी। भारतीय विमेंस ने राजकोट में हो रहे 3 मैचों की वनडे सीरीज के पहले मैच में आयरलैंड को 6 विकेट से हरा दिया। टॉस जीतकर बल्लेबाजी कर रही आयरिश टीम ने 238/7 का स्कोर बनाया। कप्तान गैबी लुइस ने सबसे ज्यादा 92 रन बनाए।

जवाब में भारतीय टीम ने 34.2 ओवर में 241 रन बनाकर लक्ष्य हासिल किया। प्रतिका रावल ने करियर की दूसरी हाफ सेंचुरी लगाई। तेजल हसनबीस ने नाबाद 53 रन बनाए। आयरलैंड से ऐमी मागुइरे ने 3 विकेट लिए।

मंधाना ने सबसे तेज 4 हजार रन पूरे किए स्मृति मंधाना विमेंस वनडे में सबसे तेज 4000 रन बनाने वाली भारतीय महिला बन गईं। वह अब वनडे में इस मुकाम पर पहुंचने वाली दुनिया की 15वीं और मिताली राज के बाद दूसरी भारतीय हैं।

मंधाना ने भारतीय पारी के नौवें ओवर में अर्लीन केली की गेंद पर सिंगल लेकर 4 हजार रन पूरे किए। हरमनप्रीत की गैरमौजूदगी में भारत के लिए कप्तानी कर रही स्मृति मंधाना ने ओपनर प्रतिका रावल के साथ मिलकर पहले विकेट के लिए 70 रन जोड़े।

स्मृति ने 29 बॉल पर 141.37 के स्ट्राइक रेट, 6 चौके और 1 छक्के के साथ 41 रन की पारी खेली। फ्रेया सार्जेंट ने उन्हें कैच आउट का कराया। हरलीन देयोल ने 20 और जेमिमा रोड्रिग्स ने 9 रन की पारी खेली। इन दोनों बल्लेबाजों को ऐमी मागुइरे ने आउट किया।

तेजल हसनबीस और प्रतिका रावल ने चौथ विकेट के लिए सेंचुरी पार्टनरशिप की। दोनों ने 84 बॉल पर 116 रन जोड़े। शानदार बल्लेबाजी करते हुए प्रतिका रावल ने अपने करियर की दूसरी हाफ सेंचुरी लगाई। उन्होंने 96 बॉल पर 10 चौके और 1 सिक्स की मदद से 89 रन की पारी खेली। प्रतिका को ऐमी मागुइरे ने ओर्ला प्रेंडरगैस्ट के हाथों कैच कराया।

मिडिल-ऑर्डर बल्लेबाज तेजल हसनबीस ने वनडे करियर में अपनी पहली फिफ्टी जमाई। उन्होंने 46 बॉल पर 53 रन बनाकर भारत को 15 ओवर बचे रहते ही जीत दिला दी। तेजल ने पारी में 9 चौके लगाए।

आयरलैंड महिला टीम की कप्तान गैबी लुइस ने शानदार बल्लेबाजी की। 15 चौकों की मदद से लुइस ने 92 रन बनाए। उन्होंने 129 बॉल का सामना किया। लुइस ने लिआ पॉल के साथ मिलकर पांचवें विकेट के लिए 150 बॉल पर 117 रन जोड़े।

लिआ पॉल ने 73 बॉल पर 59 रन बनाए। उन्होंने पारी में 7 चौके लगाए। पॉल को हरलीन देयोल ने रन आउट किया। गैबी लुइस को दीप्ति शर्मा ने आउट किया। भारत की तरफ से लेग स्पिनर प्रिया मिश्रा ने 2 विकेट लिए। दीप्ति शर्मा, तितास साधु और सयाली सतघरे को 1-1 विकेट मिला। दूसरा वनडे मुकाबला रविवार 12 जनवरी को सुबह 11 बजे से राजकोट में खेला जाएगा।

टेनिस सुपरस्टार का बड़ा दावा

कहा- मुझे खाने में दिया गया था जहर...

सर्बिया, 10 जनवरी। सर्बिया के टेनिस स्टार नोवाक जोकोविच अक्सर अपने खेल के कारण चर्चा में रहते हैं। लेकिन इस बार वो किसी और ही कारण के कारण चर्चा में हैं। दरअसल, जोकोविच ने एक हैरान करने वाला दावा किया है। जिसमें उन्होंने कहा है कि, ऑस्ट्रेलिया ओपन 2022 से पहले उनके खाने में जहर मिलाया गया था।

जोकोविच को कोरोना वायरल की वजह से काफी दिक्कत का सामना करना पड़ा था। उनका वैक्सीन न लगने की वजह से वीजा रद्द कर दिया गया था। जिसके बाद उन्हें हिरासत में भी लिया गया था। जोकोविच ने दावा किया कि इस दौरान उनके खाने में जहर मिलाया गया था।

जोकोविच इस साल के पहले ग्रैंडस्लैम ऑस्ट्रेलिया ओपन में हिस्सा लेने गए हैं। उन्होंने इस दौरान हैरान करने वाला खुलासा करते हुए एक इंरटव्यू में कहा कि उनके खाने में जहर मिलाया गया था।

जोकोविच ने एक मैग्जीन जीक्यू को इंटरव्यू दिया। वहीं उन्होंने कहा कि, मुझे मेलबर्न के होटल में जहरीला खाना दिया गया था। मेरी इससे तबियत खराब हो गई थी मैंने सर्बिया वापसी की तो पता चला कि मेरे शरीर में भारी मेटल्स काफी ज्यादा है। मेरे शरीर में लेड और मरकरी भी बहुत ज्यादा पायी गई।

जोकोविच साल 2022 में कोविड19 के नियमों की वजह से ऑस्ट्रेलिया ओपन में हिस्सा नहीं ले पाए थे। उन्हें डॉक्यूमेंट्स में गलत जानकारी देने के कारण हिरासत में लिया गया था। इसके साथ ही एक होटल में चार दिनों तक रखा गया। ये डिटेंशन सेंटर था।

वरुण एरोन ने इंटरनेशनल क्रिकेट से संन्यास लिया

भारत के लिए 18 मैच खेलें

नई दिल्ली, 10 जनवरी। भारतीय पेसर वरुण एरोन ने इंटरनेशनल क्रिकेट से संन्यास का ऐलान कर दिया है। 35 वर्षीय वरुण ने विजय हजारे ट्रॉफी 2024-25 () से झारखंड के बाहर होने के बाद यह घोषणा की। वरुण ने 2023-24 रणजी सीजन के आखिर में रेड बॉल क्रिकेट को अलविदा कह दिया था और अब व्हाइट बॉल फॉर्मेट भी छोड़ने का फैसला ले लिया है। उन्होंने 2024-25 के लिस्ट ए (वनडे) टूर्नामेंट के 4 मैचों में 53.33 के औसत से 3 विकेट लिए।

चोटों से उबरने में काफी मेहनत की: एरोन एरोन ने अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर लिखा, पिछले 20 वर्षों से मैं तेज गेंदबाजी कर रहा हूं। आज मैं आधिकारिक तौर पर क्रिकेट से रिटायरमेंट का ऐलान करता हूं। इतने साल में मैंने करियर के लिए खतरा बनी अनेक चोटों से उबरने में शारीरिक और मानसिक तौर पर काफी मेहनत की, बार बार वापसी की और इसके लिए मैं अपने फिजियो, ट्रेनर और राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी () के कोचों को धन्यवाद देता हूं।

अब मैं अपने जीवन की छोटी छोटी खुशियों का लुत्फ उठाना चाहूंगा, लेकिन खेल से भी जुड़ा रहूंगा, जिसने मुझे सब कुछ दिया है। तेज गेंदबाजी मेरा पहला प्यार रहा है और हमेशा मेरे जीवन का अहम हिस्सा रहेगी।

2011 में डेब्यू किया 35 वर्ष के एरोन ने इंटरनेशनल क्रिकेट में 2011 में डेब्यू किया था। उन्होंने अपना पहला वनडे मैच इंग्लैंड के खिलाफ वानखेड़े में खेला था। वरुण ने भारत के लिए 9 टेस्ट और 9 वनडे खेले।एरोन ने फर्स्ट क्लास करियर केएरोन ने 2010-11 विजय हजारे ट्रॉफी में 21 साल की उम्र में 150 से ज्यादा की स्पीड से गेंद फेंककर अपनी पहचान बनाई थी। मगर बार-बार चोटिल होने के चलते वह टीम से लगातार अंदर-बाहर होते रहे। वरुण ने अपना आखिरी इंटरनेशनल मैच 2015 में साउथ अफ्रीका के खिलाफ खेला था। घरेलू क्रिकेट में, एरोन ने 88 लिस्ट ए मैच खेले, जिसमें 26.47 की औसत और 5.44 की इकोनॉमी रेट से 141 विकेट लिए। टी-20 में उन्होंने 95 मैच में 8.53 की इकॉनमी रेट के साथ 93 विकेट लिए।

वीमेन अंडर 23 टी20 ट्रॉफी में राजस्थान ने सौराष्ट्र को हराया

वीमेन अंडर 19 ट्रॉफी में राजस्थान-उत्तर प्रदेश मैच

जयपुर, 10 जनवरी। गोवा में खेली जा रही बीसीसीआई की वीमेन अंडर 23 टी20 ट्रॉफी में आज राजस्थान ने सौराष्ट्र को हराया। राजस्थान की जीत में डिंपल कवंर का आल राउंडर प्रदर्शन। सौराष्ट्र पारी 104 /7, टीम के लिए उमेश्वरी 32 व आयुषी 20 रनो का योगदान दिया।

राजस्थान की गेंदबाज डिंपल कँवर 19/2, उषा पेरेरिया 25/2, यशस्वी कट्टा 15/2 विकेट प्राप्त किये। लक्ष्य को राजस्थान टीम ने डिंपल कँवर की शानदार नाबाद अर्धशतकीय पारी की सहायता से 3 विकेट के नुकसान पर 108 रन बनाते हुए मैच में जीत प्राप्त की।

डिंपल कँवर ने अपनी नाबाद 51 रनो की पारी में 46 गेंदों का सामना किया जिसमे 8 चोक्के लगाए। टीम के लिए डिंपल कँवर नाबाद 51 , ज्योती चौधरी नाबाद 20 , आयुषी 14 व रिज़ा 10 रनो का योगदान दिया।

अंडर 19 वीमेन ट्रॉफी:- नागपुर में खेली जा रही बीसीसीआई की राष्ट्रिय अंडर 19 महिला एक दिवसीय ट्रॉफी के आज खेले गए राजस्थान - उत्तर प्रदेश मैच में उत्तर प्रदेश जीती।

राजस्थान पारी, 78 आल आउट, टीम के लिए श्रेया जोशी 26 व पर्ल बामनावत नाबाद 11 रनो का योगदान दिया। उत्तरप्रदेश पारी 80 /5, टीम के लिए रामा कुशवाह 37 व भारती सिंह नाबाद 14 रनो का योगदान दिया। राजस्थान की गेंदबाज मैना सॉयल 19 / 2 व पर्ल बामनावत 20 / 1 विकेट प्राप्त किये।

राष्ट्रीय पैरा तीरंदाजी प्रतियोगिता 11 जनवरी से जयपुर में प्रारंभ

जयपुर, 10 जनवरी। राष्ट्रीय पैरा तीरंदाजी प्रतियोगिता का आयोजन 11 जनवरी से 13 जनवरी तक पूर्णिया यूनिवर्सिटी, जयपुर में किया जाएगा। इस तीन दिवसीय प्रतियोगिता में देशभर के 250 से अधिक खिलाड़ी भाग ले रहे हैं। राजस्थान तीरंदाजी संघ के महासचिव श्री सुरेंद्र सिंह गुर्जर ने जानकारी देते हुए बताया कि प्रतियोगिता में रिकर्व, कंपाउंड और इंडियन राउंड श्रेणियों में महिला और पुरुष तीरंदाज हिस्सा लेंगे।

देशभर से 250 से अधिक खिलाड़ी। अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी: 15 से अधिक अंतरराष्ट्रीय तीरंदाज, जिनमें पैरा ओलंपिक पदक विजेता शीतल देवी, स्वर्ण पदक विजेता हरविंदर सिंह और श्यामसुंदर स्वामी जैसे खिलाड़ी शामिल हैं।

प्रतियोगिता का उद्घाटन पैरालंपिक कमिटी के अध्यक्ष देवेंद्र झांझरिया द्वारा किया जाएगा। गुर्जर ने बताया कि यह पहली बार है जब इतने बड़े पैमाने पर पैरा तीरंदाजी प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। यह आयोजन न केवल खिलाड़ियों के प्रदर्शन को प्रोत्साहन देगा, बल्कि पैरा तीरंदाजी को देश में और मजबूती प्रदान करेगा। प्रतियोगिता के आयोजन को लेकर तैयारियां पूरी कर ली गई हैं, और आयोजन समिति खिलाड़ियों और दर्शकों के लिए सभी सुविधाओं को सुनिश्चित करने के लिए तत्पर है।

पूर्व में चयनित वॉलीबॉल खिलाड़ियों को पुन: ट्रायल की जरूरत नहीं

जयपुर, 10 जनवरी। राजस्थान हाईकोर्ट ने कहा है कि उत्तराखंड में आयोजित होने वाले 38वें राष्ट्रीय खेलों के लिए पूर्व में चयनित याचिकाकर्ता वॉलीबॉल खिलाडियों को पुन: ट्रायल देने की जरूरत नहीं है। इसके साथ ही अदालत ने इस संबंध में दायर याचिका को निस्तारित कर दिया है।

जस्टिस महेन्द्र गोयल की एकलपीठ ने यह आदेश दुष्यंत सिंह व चार अन्य खिलाडियों की ओर से दायर याचिका का निपटारा करते हुए दिए। गौरतलब है कि अदालत की ओर से याचिका का निस्तारण करने के चलते पूर्व में ट्रायल पर लगी रोक भी हट गई है।

सुनवाई के दौरान याचिकाकर्ताओं को पुन: ट्रायल से छूट के बिंदु पर किसी भी पक्ष ने आपत्ति दर्ज नहीं की। इस पर अदालत ने याचिका का निस्तारण करते हुए कहा कि याचिकाकर्ताओं को पुन: ट्रायल की जरूरत नहीं है।

याचिका में वरिष्ठ अधिवक्ता आरबी माथुर ने अदालत को बताया था कि वॉलीबॉल के 38वें राष्ट्रीय खेल 28 जनवरी से उत्तराखंड में आयोजित हो रहे हैं। इसके लिए भारतीय ओलम्पिक संघ ने गत 20 दिसंबर को पत्र जारी कर अनिश व्यास की अध्यक्षता में बने राजस्थान ओलम्पिक एसोसिएशन को इस प्रतियोगिता के लिए खिलाडियों का चयन करने को कहा।

इसकी पालना में राजस्थान ओलम्पिक एसोसिएशन ने याचिकाकर्ताओं सहित अन्य खिलाड़ियों का चयन कर 28 दिसंबर को चयन सूची जारी कर दी। इसके बाद भारतीय ओलम्पिक संघ ने तेजस्वी सिंह की अध्यक्षता वाले राजस्थान ओलम्पिक एसोसिएशन को मान्यता दे दी।

याचिका में कहा गया कि अब यह एसोसिएशन नए सिरे से खिलाडियों का ट्रायल कर रही है। जबकि याचिकाकर्ताओं का पूर्व में चयन हो चुका है और उनकी कोचिंग चल रही हैं। दो एसोसिएशन के झगडे में याचिकाकर्ता खिलाडियों के हित प्रभावित हो रहे हैं। जिस पर सुनवाई करते हुए अदालत ने सभी पक्षों की सहमति से याचिकाकर्ताओं को पुन: ट्रायल देने की जरूरत नहीं बताई है।

विराट कोहली ने प्रेमानंदजी से पूछा-असफलता से कैसे निकलें

प्रेमानंद बोले- अभ्यास जारी रखें, जीत निश्चित

मथुरा, 10 जनवरी। विराट कोहली, पत्नी अनुष्का शर्मा और दोनों बच्चों के साथ शुक्रवार को मथुरा के प्रेमानंद महाराज के आश्रम पहुंचे। यहां करीब आधे घंटे तक आध्यात्मिक चर्चा की। अनुष्का ने प्रेमानंद महाराज से भक्ति के लिए आशीर्वाद मांगा। इससे पहले 4 जनवरी, 2023 को दोनों प्रेमानंद महाराज से मिलने पहुंचे थे।

बातचीत के दौरान विराट ने पूछा, असफलता से कैसे निकलें। महाराज ने जवाब में कहा, अभ्यास जारी रखें, जीत निश्चित है। अपने अभ्यास को निरंतर और नियंत्रण में रखते हुए आगे बढ़ें। जैसे मेरे लिए नाम जप एक साधना है, वैसे ही विराट के लिए क्रिकेट ही साधना है। बस बीच-बीच में भगवान का नाम लेते रहें।

उन्होंने कहा, विजय के लिए दो चीजों की आवश्यकता होती है। एक अभ्यास और दूसरा प्रारब्ध। यदि प्रारब्ध नहीं है, सिर्फ अभ्यास है, तब जीत मुश्किल हो जाती है। इसके लिए प्रभु के ज्ञान के साथ-साथ उनका नाम जपना आवश्यक है।

प्रेमानंद महाराज ने विराट से पूछा- ठीक हो आप, मन प्रसन्न है।

अनुष्का ने पूछा- पिछली बार जब हम आए थे तो मन में कुछ सवाल थे, लेकिन मैं पूछ नहीं पाई। मैं आपसे मन ही मन बात कर रही थी। मेरे मन में जो सवाल थे, उसे कोई न कोई पूछ लेता था।

लॉस एंजिल्स के जंगलों में लगी आग के कारण लेकर्स और हॉर्नेट्स का मैच हुआ स्थगित

लॉस एंजिल्स, 10 जनवरी। अमेरिका के लॉस एंजिल्स प्रांत के जंगलों में लगी भीषड़ आग के कारण राष्ट्रीय बॉस्केटबॉल एसोसियेशन (एनबीए) ने लॉस एंजिल्स लेकर्स और शार्लोट हॉर्नेट्स के बीच शुक्रवार को होने वाले बॉस्केटबॉल मैच को स्थगित कर दिया है। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार एनबीए ने कहा, पूरा एनबीए परिवार इस चुनौतीपूर्ण समय के दौरान लॉस एंजिल्स के समुदाय के लिए अपनी संवेदनाएँ और समर्थन व्यक्त करता है।एनबीए ने कहा कि मैच की पुर्ननिर्धारित तिथि की घोषणा बाद में की जाएगी।

खेलो इंडिया महिला योगासन लीग में 7000 से अधिक प्रतिभागियों ने लिया हिस्सा बक्करवाला 10 जनवरी (वार्ता) राष्ट्रीय अस्मिता खेलो इंडिया महिला योगासन लीग 2024-25 में पश्चिम बंगाल और मध्य प्रदेश की एथलीटों ने शानदार प्रदर्शन किया। उत्तराखंड में होने वाले आगामी राष्ट्रीय खेलों से पहले बड़ी उम्मीदों के साथ राष्ट्रीय प्रतियोगिता संपन्न हुई।

आनंद धाम आश्रम, बक्करवाला, नांगलोई नजफगढ़ रोड पर पांच से सात जनवरी तक आयोजित लीग के अंतिम चरण में 270 से अधिक एथलीटों ने हिस्सा लिया। भारत सरकार के युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय की सचिव सुजाता चतुर्वेदी ने एथलीटों को बधाई दी। उन्होंने भारत में योगासन के बढ़ते महत्व पर जोर देते हुए कहा कि 2026 एशियाई खेलों में इसे शामिल भी किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि योगासन को अब 2026 एशियाई खेलों (जापान) में एक प्रदर्शनकारी खेल के रूप में शामिल किया गया है। इसके अलावा उत्तराखंड में होने वाले आगामी 38वें राष्ट्रीय खेलों में भी इसे एक प्रतिस्पर्धी खेल के रूप में शामिल किया गया है। राष्ट्रीय लीग के लिए प्रतिभागियों ने पिछले वर्ष देशभर में आयोजित क्षेत्रीय चैंपियनशिप के माध्यम से अर्हता प्राप्त की। इसमें 7000 से अधिक महिला एथलीटों ने भाग लिया।

लीग में पांच श्रेणियां :- पारंपरिक योगासन, कलात्मक योगासन (एकल), कलात्मक योगासन (जोड़ी), लयबद्ध योगासन (जोड़ी) और कलात्मक योगासन (समूह) शामिल थीं।

नीरज चोपड़ा वर्ष 2024 के सर्वश्रेष्ठ भाला फेंक एथलीट: अमेरिका पत्रिका

नई दिल्ली, 10 जनवरी। अमेरिका की प्रतिष्ठित खेल पत्रिका 'ट्रैक एंड फील्ड न्यूज' ने भारत के नीरज चोपड़ा को वर्ष 2024 का सर्वश्रेष्ठ भाला फेंक एथलीट चुना है।

27 वर्षीय भारतीय एथलीट नीरज चोपड़ा को पेरिस ओलंपिक 2024 में रजत पदक जीतने और पूरे सत्र में छह स्पर्धाओं में भाग लेते हुए दो बार शीर्ष पर और शेष चार में उपविजेता के रूप में उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए इस सम्मान से नवाजा गया है।

नीरज चोपड़ा ने 2024 सत्र की शुरुआत मई में दोहा डायमंड लीग में 88.36 मीटर थ्रो के साथ की और वह चेकिया के जैकब वाडलेज के बाद दूसरे स्थान पर रहे। टोक्यो 2020 के स्वर्ण पदक विजेता ने फिनलैंड में पावो नूरमी गेम्स और भारत में नेशनल फेडरेशन सीनियर एथलेटिक्स प्रतियोगिता जीती। इसके बाद उन्होंने पेरिस ओलंपिक 2024 में 89.45 मीटर थ्रो के साथ अरशद नदीम के 92.97 मीटर के ओलंपिक रिकॉर्ड के बाद दूसरा स्थान हासिल किया।

लुसाने डायमंड लीग में चोपड़ा ने अपने करियर का दूसरा सर्वश्रेष्ठ 89.49 मीटर थ्रो किया और ब्रुसेल्स में अपने सत्र का समापन किया। चोपड़ा दोनों प्रतियोगिताओं में पेरिस 2024 के कांस्य पदक विजेता ग्रेनाडा के पीटर्स के बाद दूसरे स्थान पर रहे। ट्रैक एंड फील्ड न्यूज ने जैवलिन थ्रो में एंडरसन पीटर्स को दूसरे स्थान पर और पाकिस्तान के ओलंपिक चैंपियन अरशद नदीम छठे स्थान पर रहे थे।

आक्रामक और रक्षात्मक खेल के बीच संतुलन बनाने पर प्रत्येक मैच में शतक जड़ सकते हैं पंत : अश्विन

नई दिल्ली, 10 जनवरी। दिग्गज स्पिनर रविचंद्रन अश्विन का मानना है कि अगर ऋषभ पंत अपने आक्रामक और रक्षात्मक खेल के बीच संतुलन बनाने में सफल रहते हैं तो वह प्रत्येक मैच में शतक बना सकते हैं। अकेले दम पर मैच का रुख पलटने की पंत की क्षमता की सराहना करते हुए अश्विन ने कहा कि उनके कई शॉट बहुत जोखिम वाले होते हैं। पंत ने हाल ही में सिडनी में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के पांचवें मैच की पहली पारी में अपने रक्षात्मक खेल का शानदार नमूना पेश करते हुए 40 रन बनाए जबकि दूसरी पारी में उन्होंने भारत की तरफ से टेस्ट क्रिकेट में दूसरा सबसे तेज अर्धशतक बनाया।

अश्विन ने अपने यूट्यूब चैनल पर कहा, "हमें उसे ठीक से बताना होगा कि अगर उसे ठोस बल्लेबाजी करनी है या किसी इरादे के साथ बल्लेबाजी करनी है तो उसे क्या करना है। उसने बहुत सारे रन नहीं बनाए हैं, लेकिन ऐसा भी नहीं है कि उसने रन नहीं बनाए हों। उसके पास अभी बहुत समय है।" उन्होंने कहा, "ऋषभ पंत को अभी तक भी अपनी पूरी क्षमता का अहसास नहीं हुआ है। उसके पास सभी तरह के शॉट हैं - रिवर्स स्वीप, स्लॉग स्वीप, सब कुछ - लेकिन समस्या यह है कि ये सभी शॉट बहुत जोखिम वाले हैं। अगर वह अपने रक्षात्मक खेल पर भी ध्यान दे और 200 गेंद का सामना करें तो वह हर मैच में बड़ा स्कोर बना सकता है।"

हाल ही में संन्यास लेने वाले अश्विन ने कहा, "मुख्य मसला संतुलन बनाने का है। अगर वह ऐसा करने में सफल रहता है तो फिर प्रत्येक मैच में शतक बना सकता है। उसे बीच का रास्ता ढूंढना होगा।" पंत ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सिडनी टेस्ट की पहली पारी में 98 गेंदों में 40 रन और उसके बाद दूसरी पारी में 33 गेंदों में 61 रन बनाए। अश्विन ने कहा, "पंत ने सिडनी टेस्ट में विपरीत अंदाज वाली दो पारियां खेली। उन्होंने पहली पारी में रक्षात्मक बल्लेबाजी करते हुए 40 रन बनाए जिसकी कोई चर्चा नहीं हुई। यह सही नहीं है।"

इस ऑफ स्पिनर ने कहा,"दूसरी पारी में, उन्होंने जोरदार अर्धशतक बनाया, जिससे उन्हें काफी प्रशंसा मिली। हर कोई उस पहली पारी को भूल गया और दूसरी पारी के लिए उनकी प्रशंसा की।"

पंत की रक्षात्मक तकनीक के बारे में बात करते हुए अश्विन ने कहा,"हमें इस पर गौर करना चाहिए कि ऋषभ पंत शायद ही कभी रक्षात्मक बल्लेबाजी करते हुए आउट हुआ हो। उसके पास विश्व क्रिकेट की सबसे अच्छी रक्षात्मक तकनीक में से एक है।" उन्होंने कहा, " मैंने उसे नेट्स पर काफी गेंदबाजी की है, वह आउट नहीं हुआ। गेंद उसके बल्ले का किनारा लेकर नहीं जाती। वह एलबीडब्ल्यू नहीं होता। उसकी रक्षात्मक तकनीक बहुत अच्छी है और मैंने उसे यही बताने की कोशिश की है।

भारत वर्सेस इंग्लैंड टी20 और वनडे सीरीज का फुल शेड्यूल जारी

नई दिल्ली, 10 जनवरी। भारत और इंग्लैंड के बीच पांच मैचों की टी20 और तीन वनडे सीरीज खेली जाएगी। इसके लिए इंग्लैंड टीम भारत दौरे पर आने वाली है। सीरीज की शुरुआत 22 जनवरी को पहले टी20 के साथ होगी। इंग्लैंड ने टी20 और वनडे, दोनों सीरीज के लिए टीम का ऐलान कर दिया है। जबकि अभी बीसीसीआई ने टीम इंडिया का ऐलान नहीं किया है। भारत और इंग्लैंड के बीच पहले पांच टी20 मैच खेले जाएंगे। फिर तीन मैचों की वनडे सीरीज होगी। टी20 सीरीज के मैच कोलकाता, चेन्नई, राजकोट, पुणे और मुंबई में खेले जाएंगे। वहीं वनडे मैच नागपुर, कटक और अहमदाबाद में होंगे। 22 जनवरी से 2 फरवरी के बीच टी20 सीरीज होगी, इसके बाद 6 फरवरी से 12 फरवरी के बीच वनडे सीरीज खेली जाएगी। टी20 सीरीज के मैच शाम सात बजे से शुरू होंगे। वनडे सीरीज के मैच दोपहर 1.30 बजे से शुरू होंगे।

स्टीव स्मिथ को है 10 हजार टेस्ट रन पूरा न करने का मलाल

ऑस्ट्रेलिया, 10 जनवरी। स्टार बल्लेबाज स्टीव स्मिथ बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के दौरान 10 हजार रन पूरा करने के करीब पहुंच गए थे। हालांकि, आखिरी मैच में वह सिर्फ एक रन से ये उपलब्धि हासिल करने से चूक गए। 10 हजार रन के करीब पहुंचे स्मिथ ने माना है कि एक रन से चूकने से उन्हें काफी तकलीफ हुई लेकिन उन्होंने कहा कि मैच और सीरीज में नतीजा अपने इच्छा के मुताबिक होना ज्यादा अहम था।

भारत के खिलाफ पांच मैचों की टेस्ट सीरीज के शुरुआती मुकाबलों में स्मिथ के बल्ले से रन नहीं निकले थे। हालांकि, तीसरे और चौथे मैच में उन्होंने शतकीय पारी खेलकर ऑस्ट्रेलिया की वापसी में अहम भूमिका निभाई। सिडनी क्रिकेट ग्राउंड पर खेले गए आखिरी मैच के दौरान वह 10 हजार रन पूरा करने से सिर्फ एक रन से चूक गए थे। उन्हें आखिरी पारी में प्रसिद्ध कृष्णा ने आउट किया। अगर ऐसा होता तो वह एलन बॉर्डर, स्टीव वॉ और रिकी पोंटिंग जैसे महान खिलाड़ियों के बाद इस उपलब्धि तक पहुंचने वाले चौथे ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी बन जाते हैं।

स्टीव स्मिथ ने फॉक्स स्पोर्ट्स से कहा कि, सब अच्छा है। अंत में हमें मनचाहा नतीजा मिला और यही हमें चाहिए था। एक रन से उस समय तकलीफ हुई थी, लेकिन सब अच्छा है। अच्छआ होता अगर मैं अपने होम ग्राउंड पर दोस्तों और परिवार के सामने वो एक रन बना लेता लेकिन उम्मीद है कि गाले में मैं वो एक रन बनाने में कामयाब हो जाऊंगा।

मुख्यमंत्री को अपने बीच पाकर रिफाइनरी कार्मिकों में उत्साह दिखा

श्रमिकों के साथ मुख्यमंत्री ने फोटो खिंचवाई

बालोतरा, 10 जनवरी (निसं)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने शुक्रवार को बालोतरा जिले में पचपदरा में एचपीसीएल राजस्थान रिफाइनरी का निरीक्षण किया एवं समीक्षा बैठक ली। उन्होंने जनप्रतिनिधियों, राज्य सरकार एवं रिफाइनरी के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बस में बैठ कर रिफाइनरी के विकास कार्यों का निरीक्षण किया।

- **मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने ड्यूल फीड क्रेकर यूनिट का अवलोकन किया। जिसमें बुर्ज खलीफा से भी अधिक कंक्रीट का उपयोग हुआ है। रिफाइनरी के एक तिहाई श्रमिक (लगभग नौ हजार) इसी यूनिट में काम करते हैं।**
- **भजनलाल शर्मा ने रिफाइनरी व इसके आस-पास के क्षेत्र में कानून व्यवस्था बनाये रखने के लिये पुलिस अधिकारियों को निर्देश दिये। उन्होंने रिफाइनरी परिसर में ग्रीन बेल्ट विकसित करने के लिये एच.आर.आर.एल. के प्रतिनिधियों को निर्देश दिये।**

रिफाइनरी परिसर में मुख्यमंत्री ने हाईटेंशन मोटर के जरिए कम्प्रैस्ड एयर नाइट्रोजन प्लांट का उद्घाटन भी किया।

मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि परियोजना के समीप सांभरा ग्राम में एच.आर.आर.एल. द्वारा ईएससी फंड के माध्यम से बनाए जा रहे स्कूल एवं अस्पताल को शीघ्र शुरू किया जाए, जिससे स्थानीय लोगों को लाभ मिल सके।

मुख्यमंत्री ने रिफाइनरी परिसर में ड्यूल फीड क्रेकर यूनिट का अवलोकन किया। अधिकारियों ने उन्हें बताया कि इस यूनिट के निर्माण में बुर्ज खलीफा से अधिक कंकरीट का उपयोग हुआ है। यह रिफायनरी का सबसे बड़ा प्लांट भी है, जहाँ, रिफायनरी के एक तिहाई श्रमिक (लगभग 9 हजार) काम करते हैं। मुख्यमंत्री ने कोक डोम और ट्रीटिंग यूनिट का निरीक्षण किया। इस दौरान शर्मा ने श्रमिकों के साथ बातचीत की तथा उनके साथ फोटो खिंचवाई।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने शुक्रवार को पचपदरा में एच.पी.सी.एल. राजस्थान रिफाइनरी का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने श्रमिकों के साथ बातचीत भी की।

मुख्यमंत्री ने परियोजना के निर्माण कार्यों में स्थानीय लोगों को अधिक से अधिक रोजगार उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। उन्होंने जिला पुलिस अधिकारियों को निर्देश दिये कि रिफायनरी और आस-पास के क्षेत्र में कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए प्रभावी कार्यवाही करें।

मुख्यमंत्री ने उद्योग एवं वाणिज्य विभाग को एक विशेषाधिकारी नियुक्त करने के निर्देश दिए, जो कि 15 दिन में रिफाइनरी परियोजना के प्रगतिरत कार्यों की समीक्षा करते हुए रिपोर्ट बनाए।

मुख्यमंत्री ने रिफाइनरी के मॉडल का अवलोकन भी किया और रिफाइनरी परिसर में पौधारोपण किया। इस अवसर पर पशुपालन एवं डेयरी मंत्री जोराराम कुमावत, उद्योग एवं वाणिज्य राज्यमंत्री के.के. विश्नोई, राज्यसभा सांसद राजेन्द्र गहलोत, विधायक हमीर सिंह भायल, आदुराम मेघवाल, प्रियंका चौधरी, अरूण चौधरी, मुख्य सचिव सुधांश पंत, अतिरिक्त मुख्य सचिव (मुख्यमंत्री कार्यालय) शिखर अग्रवाल, प्रमुख शासन सचिव उद्योग एवं वाणिज्य अजिताभ शर्मा, प्रमुख शासन सचिव खान एवं पैट्रोलियम टी. रविकांत, रीको प्रबन्ध निदेशक इन्द्रजीत सिंह, एच.आर.आर.एल. के निदेशक एस. भारतन, सीईओ कमलाकर आर विखर सहित वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे।

'मस्जिद के समीप के कुएं पर यथास्थिति बनाए रखें'

- **सुप्रीम कोर्ट ने संभल की शाहीजामा मस्जिद के कुएं पर नगर पालिका के नोटिस के क्रियान्वयन पर रोक लगाई है।**

नयी दिल्ली, 10 जनवरी। उच्चतम न्यायालय ने शुक्रवार को उत्तर प्रदेश सरकार को नोटिस जारी कर, विवादित संभल मस्जिद के पास के कुएं का इस्तेमाल करने के लिए स्थानीय नगर पालिका की ओर से जारी सार्वजनिक नोटिस को 21 फरवरी, 2025 तक लागू नहीं करने और दो सप्ताह में स्थिति का विवरण पेश करने का निर्देश दिया। मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना और न्यायमूर्ति संजय कुमार की पीठ ने संभल शाही जामा मस्जिद समिति की याचिका पर यह आदेश पारित किया। पीठ ने संभल नगर पालिका अधिकारियों से कहा कि वे पोस्टरों के माध्यम से जारी किए गए अपने सार्वजनिक नोटिस को लागू न करें, जिसमें शाही जामा मस्जिद के पास के कुएं को हरि मंदिर का कुआं बताया गया है तथा वह श्रद्धालुओं की पूजा व स्नान के लिए बनाया गया था।

शीर्ष अदालत के समक्ष राज्य सरकार ने कहा कि उस जगह के आसपास की स्थिति शांतिपूर्ण थी, लेकिन आवेदक ने मुद्दा बनाने की कोशिश की। इस पर मस्जिद समिति की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता हुजेफा अहमदी ने कहा कि नगर पालिका द्वारा जारी किए गए नोटिस में स्नान के लिए इस्तेमाल किए जा रहे कुएं को हरि मंदिर का कुआं कहा गया है।

पीठ ने कहा कि यदि दूसरा पक्ष भी कुएं का उपयोग करता है तो कोई नुकसान नहीं है। यूपी सरकार की तरफ से पेश एडिशनल सॉलिसिटर जनरल ने कहा कि कुआं सार्वजनिक जमीन पर है, पर मस्जिद कमेटी के वकील ने कहा कि कुएं का आधा हिस्सा अंदर और आधा बाहर है, लेकिन राज्य सरकार पक्षपातपूर्ण रुख अपना रही है।

पुणे कोर्ट ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अदालत में अपील की थी। अदालत में 25000 रुपए के निजी मुचलके पर कांग्रेस नेता राहुल गांधी को जमानत दी है। कोर्ट ने राहुल गांधी को हिदायत दी है कि जब तक यह मामला चल रहा है,राहुल गांधी सावरकर पर कोई बयान न दें।

सुप्रीम कोर्ट ने ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जाए। याचिकाकर्ता ने कहा कि मातृ भाषा में शिक्षा मिलने के कारण सिर्फ बच्चों के साथ अन्याय हो रहा है, बल्कि राजस्थान अपनी संस्कृति भी खोता जा रहा है क्योंकि भाषा के लुप्त होने की वजह से हजारों सालों के अनुभव और समृद्ध संस्कृति का ह्रास होता है। याचिकाकर्ता की तरफ से वकील अभिषेक सिंघवी ने कोर्ट में अपना पक्ष रखा था।

दिल्ली के बाकी प्रत्याशी तय करने के लिए भाजपा की बैठक

- **मोदी, अमित शाह, राजनाथ व नड्डा भी बैठक में शामिल हुए।**

नयी दिल्ली, 10 जनवरी। दिल्ली विधानसभा चुनाव को लेकर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की केन्द्रीय चुनाव समिति (सीईसी) की शुक्रवार देर शाम यहां पार्टी मुख्यालय पर एक अहम बैठक बुलाई गयी, जिसमें बाकी उम्मीदवारों के नामों पर फैसला लिये जाने की उम्मीद है।

पार्टी दिल्ली की 70 विधान सभा सीटों में से 29 के लिए उम्मीदवार घोषित कर चुकी है। दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में नयी विधान सभा के चुनाव की गजट अधिसूचना आज जारी हो चुकी है और नामांकन 17 जनवरी तक दाखिल किए जाएंगे। भाजपा सीईसी की बैठक में प्रधानमंत्री के अलावा पार्टी राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी. नड्डा, गृहमंत्री अमित शाह और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के साथ पार्टी के कई वरिष्ठ नेता मौजूद हैं।

पार्टी सूत्रों के अनुसार, इस बैठक में दिल्ली विधानसभा की बाकी बची सीटों के लिए उम्मीदवार तय किए जाएंगे। भाजपा द्वारा अब तक घोषित 29 प्रत्याशियों में बाहरी दिल्ली के पूर्व सांसद प्रवेश साहिब सिंह वर्मा का भी नाम है। पार्टी ने वर्मा को आम आदमी पार्टी (आप) के राष्ट्रीय संयोजक और पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के खिलाफ नयी दिल्ली विधानसभा क्षेत्र में उतारा है।

'ई-सिगरेट की बिक्री ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उसे हैरानी हुई कि राजस्थान सरकार की क्राइम ब्रांच ने इन सवालों के जवाब देने के लिये कोई भी रिकॉर्ड बरकरार नहीं रखा है, इससे साबित होता है कि राज्य सरकार इससे बेपरवाह है।

अदालत ने कहा कि इस मामले में कई दस्तावेज रिकॉर्ड पर हैं, जिससे साफ जाहिर होता है कि राज्य सरकार को बार-बार कहा गया कि ई-सिगरेट रोकने के लिये कार्रवाही करें, लेकिन इसे रोकने के लिये केवल कागजी कार्रवाही की गई है। अदालत ने कहा कि कमिश्नरेट के 2022 में दायर शपथ पत्र से ये ही जाहिर होता है कि ई-सिगरेट की बिक्री रोकने के लिये विभाग कोई मैकेनिज्म बनाने की कोशिश कर रहा है, लेकिन पुलिस विभाग की अपनी सीमाएं हैं। अदालत ने कहा कि चूँकि शपथ पत्र दायर किये काफी समय हो गया है, उन्हें नया शपथ पत्र पेश करना होगा। अदालत ने कहा कि अगली तारीख पर जो अफसर ई-सिगरेट की बिक्री को मॉनिटर करने के लिये नियुक्त किये जायें, वे वी.सी. के जरिये अदालत में उपस्थित रहें। इस मामले में अगली तारीख 1 फरवरी 2025 तय की गई है।

अश्विन अब ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

था, जिसमें कई लोगों ने अपनी जाने गंवाई। पुराने लोग याद करते हैं कि तब राज्य में कांग्रेस सरकार थी, हिंदी सम्बंधी फैसले ने राज्य में कांग्रेस को खलनायक बना दिया और उसके बाद द्रविड पार्टियां सत्तारुढ़ हुईं और तब से लेकर आज तक कांग्रेस अपने दम पर राज्य में पुन: सत्ता में नहीं आ पाई है।

कांग्रेस को राज्य में किसी न किसी द्रविड़ पार्टी के साथ गठबंधन करना ही पड़ता है, कभी द्रमुक से, तो कभी अन्नाद्रमुक से। फिलहाल दो दशक से कांग्रेस का द्रमुक से गठबंधन है।

अश्विन की टिप्पणी से तमिलनाडु में उनके प्रशंसक अवश्य बढ़ गए होंगे।

कड़ाके की ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

विलंबित हैं और 26 ट्रेन अपने निर्धारित समय से देरी से चल रही हैं। मौसम विभाग ने बताया कि भारतीय समयानुसार तड़के साढ़े चार बजे से पालम में दृश्यता शून्य है।

मौसम विभाग ने एक नए पश्चिमी विक्षोभ के असर से राजस्थान के अनेक इलाकों में बारिश और ओलावृष्टि होने का अनुमान जताया है।

इस बीच राज्य के अनेक इलाकों में कड़ाके की सर्दी जारी है। मौसम केंद्र जयपुर के अनुसार एक नए पश्चिमी विक्षोभ के सक्रिय होने से 11 जनवरी को राज्य में कहीं कहीं बारिश होने की संभावना है।

ट्रम्प पहले अमरीकी राष्ट्रपति...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मुक्त होकर व्हाइट हाउस जा सकेंगे।

अमेरिका के नव-निर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को एक पोर्न स्टार को पैसे देकर चुप रहने के लिए मजबूर करने के अपराध में दोषी करार दिया गया था। ट्रंप एकमात्र अमेरिकी राष्ट्रपति (वर्तमान या पूर्व) हैं, जिन्हें किसी अपराध के लिए दोषी ठहराया गया है।

इससे पहले, सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को ट्रम्प की ओर से कार्यवाही को रोकने के अनुरोध को खारिज कर दिया गया था। इसी के साथ, मैनहट्टन में न्यूयॉर्क राज्य की अदालत में सजा सुनाने का रास्ता खुल गया था।

ट्रंप के शपथ ग्रहण समारोह से पहले उन्हें सजा सुनाया जाना एक ऐसा आश्चर्यजनक विरोधाभास पैदा करता हैं, जिसका गवाह अमेरिका पहले नहीं है। कुछ ही दिनों में डोनाल्ड ट्रंप राष्ट्रपति पद की विशाल शक्तियां और देश के कानूनों और संविधान के अंतिम संरक्षक बनने वाले हैं।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक:- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालय:-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय:-कुंभाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालय:-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालय:-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय: एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908